सत्यमेव जयते

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

जुलाई–सितम्बर, 2018

लौह पुरूष सरदार बल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा
31 अक्तूबर, 2018 को
माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेद्र मोदी
ने राष्ट्र को समर्पित किया।

सत्यमेव जयते

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

- संरक्षक : **श्रीमती रश्मि वर्मा, सचिव, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**
- प्रधान संपादक एवं परामर्शदाता : **ज्ञान भूषण, आर्थिक सलाहकार, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**
- संपादक : **श्रीमती सन्तोष सिल्पोकर, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**
- प्रबंध–संपादक : **मोहन सिंह, कंसल्टेंट, पर्यटन मंत्रालय**
- अन्य सहयोगी : **राज कुमार, राम बाबू**

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा पर्यटन मंत्रालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कृपया अपने लेख एवं सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें :

संपादक,
अतुल्य भारत
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार,
कमरा नं. 18, सी–1 हटमेंट्स,
दाराशिकोह मार्ग, नई दिल्ली – 110011
ई–मेल– editor.atulyabharat@gmail.com
दूरभाष 011–23015594, 23793858

नि:शुल्क वितरण के लिए

डॉलफिन प्रिन्टो–ग्राफिक्स
झण्डेवालान एक्सटेंशन
नई दिल्ली से मुद्रित
011–23593541–42

वर्ष 4 अंक 13 जुलाई–सितम्बर, 2018

इस अंक में...

5 संपादक की कलम से...

07-11 आशीर्वाद एवं संदेश

देव दिवाली : एक अद्भुत अनुभव 12

19 अब क्रूज में करें: काशी में गंगा के घाटों का दर्शन

20 लमही: मुंशी प्रेमचंद का गांव

27 माणा : भारतीय सीमा पर अंतिम गांव

36 अपनी सेहत का रखे ख्याल

38 भूकम्प (एक कहानी)

43 बेलुम की गुफाएं

50 कोकिला वन

54 शाकुम्भरी देवी : सहारनपुर

60 गर्व से कहो हिंदी हैं हम

62 पर्यटन की रौली : आतिथ्य की शैली

श्रद्धांजलि

64 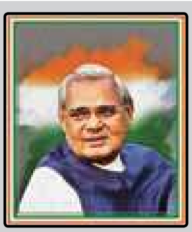
श्री अटल बिहारी बाजपेयी

67 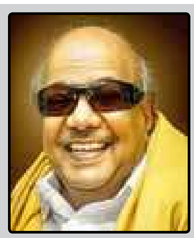
करूणानिधि

69
गोपालदास 'नीरज'

72 गीत और कविताएं

73 पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियाँ एवं समाचार

परामर्शदाता व प्रधान संपादक
ज्ञान भूषण, आई.ई.एस
आर्थिक सलाहकार
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

प्रधान संपादक की कलम से...

'अतुल्य भारत' अपने इस अंक से चौथे वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इसके लिए हम सभी सुधि पाठकों के सहयोग तथा गणमान्य व्यक्तियों के प्रोत्साहन के लिए उनका आभार व्यक्त करते हैं जिनसे हमें हर बार एक नई उर्जा मिलती है। किसी सरकारी पत्रिका का निरनतर प्रकाशित होना अपने आप में ही एक गौरव की बात है।

इस अंक में वाराणसी पर विशेष सामग्री का समावेश किया गया है जिसमें वाराणसी में मनाई जाने वाली प्रसिद्ध देव दीवापली के बारे में श्री विश्वरंजन ने 'देव दिवाली : एक अद्‌भुत अनुभव' में इसका सचित्र विवरण प्रस्तुत किया है। इसी कड़ी में हिंदी के उपन्यास सम्राट श्री प्रेम चंद की जन्म स्थली लमही को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा विरासती गांव घोषित किए जाने पर, 'लमही : प्रेम चंद का गांव' के पर्यटन के बारे में पूरा विवरण प्रस्तुत किया है श्रीरामबाबू ने। क्रूज पर्यटन के रूप में इस बार वाराणसी आने वाले पर्यटकों को गंगा दर्शन के लिए एक विशेष तोहफा दिया गया है। इसमें पर्यटक गंगा के घाटों के दर्शन कर सकते हैं, जिसके बारे में बता रही हैं श्रीमती रेखा द्विवेदी। भारत और चीन की सीमा पर अंतिम गांव है माणा। यहां जाना आसान है और ईको–पर्यटन के प्रेमियों के लिए तो यह एक आदर्श स्थल है। यही नहीं बद्रीनाथ जाने वाले श्रृद्धालु पर्यटकों के लिए भी माणा एक आश्चर्यजनक स्थल है। माणा की यात्रा के साथ ही इसके आस पास के दूसरे स्थानों के बारे में बताया है श्री राजेन्द्र सिंह मनराल ने अपने आलेख 'माणा : भारत का आखिरी गांव' के माध्यम से।

आज हमें अपने स्वाथ्य के प्रति जागरूक होना जरूरी है। इस विषय पर श्री अनुपम कुमार ने अपने आलेख 'अपनी सेहत का रखें ख्याल' के माध्यम से पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। आंध्र प्रदेश के कर्नूल जिले में पर्यटन स्थलों के बारे में लेखमाला की अंतिम किश्त में धरती के अन्दर 150 फीट नीचे बनी प्रा ृतिक गुफाओं के बारे में अपने आलेख 'बेलुम की अद्‌भुत गुफाएं' पर श्री मोहन सिंह ने विवरण प्रस्तुत किया है। इनके अतिरिक्त, ग्रामीण अंचलों में फैली हमारी विरासतों पर भी लेख शामिल किए गए हैं जिनमें दिल्ली के निकट कोसी कलां के 'कोकिला वन' पर श्री राज कुमार ने और सहारनपुर स्थित 'शाकुम्भरी देवी मंदिर' के बारे में श्री अनिरूद्ध सिंह के लेख जानकारीपरक हैं। सुशांत सुप्रिय की मर्मस्पर्शी कहानी भूकम्प भी प्रस्तुत है। हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी के बारे में विशेष जानकारी दी गई है।

इस तिमाही में देश की कई हस्तियों को समय ने हमसे अलग कर दिया। इनमें प्रमुख थे हिंदी जगत के जाने माने कवि, राजनेता और देश के पूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल विहारी बाजपेयी, तमिल साहित्यकार, कवि, फिल्मकार और जाने माने राजनेता श्री एम. करूणानिधि, हिंदी के जाने माने कवि श्री गोपाल दास 'नीरज'। इन्हें अतुल्य भारत की ओर से याद किया गया है।

कविता और गीतों को भी पूरा स्थान दिया गया है जिसमें स्व0 नीरज का एक गीत, विश्वरंजन और आशिष कुमार शील की कविताएं तथा क्षेत्रपाल शर्मा का गीत शामिल किए गए हैं।

पर्यटन मंत्रालय द्वारा अन्य केंद्रीय मंत्रालयों और राज्य सरकारों एवं पर्यटन के क्षेत्र के हितधारकों के सहयोग से पर्यटन को बढ़ावा देने के निमित्त प्रति वर्ष पर्यटन पर्व का आयोजन किया जाता है। इस बार भी 16 से 27 सितंबर,2018 तक आयोजित पर्यटन पर्व में पूरे देश भर में लगभग 3100 से ज्यादा समारोहों का आयोजन किया गया, जिनमें योग प्रदर्शन, सांस्ृ तिक संध्या, चित्रकारी प्रतियोगिताएं, खाद्य व्यंजन स्टॉल आदि शामिल किए गए थे।

'पर्यटन पर्व' का मुख्य उद्देश्य देश की सांस्ृ तिक विविधता का प्रदर्शन एवं ''सभी के लिए पर्यटन'' के सिद्धांत को सुदृढ़ बनाना है। जिसमें पहला है देखो अपना देश–अर्थात भारतीयों को अपने देश का भ्रमण करने के लिए प्रोत्साहित करना। दूसरा सभी के लिए पर्यटन देश के सभी राज्यों में विभिन्न स्थानों पर पर्यटन कार्यक्रम और तीसरा है पर्यटन एवं शासन।

मंत्रालय द्वारा प्रति दो वर्ष के अंतराल से अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। इस बार भी 23 से 26 अगस्त,2018 तक महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और बिहार की राज्य सरकारों के सहयोग से अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें 29 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन पर श्री सुधीर कुमार ने रिपोर्ट प्रस्तुत की है।

इसके अलावा पर्यटन मंत्रालय की गतिविधियां और रिपोर्टें के अंतर्गत मंत्रालय की गतिविधियों के पूर्ण विवरण भी प्रदान किए गए है।

पर्यटन मंत्रालय भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सतत प्रयास कर रहा है और ''अतुल्य भारत'' पत्रिका भी इसकी एक कड़ी है। इसके माध्यम से मंत्रालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने का अवसर दिया जा रहा है।

आदरणीय सचिव(पर्यटन) महोदया और महानिदेशक (पर्यटन) देश में पर्यटन के संवर्धन तथा प्रोत्साहन के लिए सतत प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं। इस पत्रिका के प्रकाशन में हम उनके आभारी हैं।

अंत में, उन सभी लेखकों का धन्यवाद करता हूं जो इस पत्रिका में निरंतर अपना सहयोग प्रदान करते रहे हैं। आपके विचारों तथा प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा।

ज्ञान भूषण

(ज्ञान भूषण)

प्रधान संपादक

जय राम ठाकुर

हिमाचल प्रदेश सरकार

मुख्य मन्त्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला–171 002

अ0शा0पत्र सं0: मु0मं0 हि0प्र0
दिनांक, 30 अगस्त, 2018

सुश्री संतोष सिल्पोकर जी,

आपके द्वारा भेजी गई पर्यटन मंत्रालय की त्रैमासिक गृह पत्रिका "अतुल्य भारत" का अंक–12 प्राप्त हुआ । इस अंक में बहुत ही उपयोगी जानकारियां पढने को मिली तथा साथ ही साथ पर्यटन से सम्बंधित चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों के बारे ज्ञान प्राप्त हुआ ।

हिमाचल प्रदेश राज्य एक पहाडी राज्य है तथा पर्यटन के क्षेत्र में भी अग्रसर है। यहां की जीवन शैली बहुत ही साधारण तथा परम्पराओं से ओत प्रोत है। मैं समझता हूँ कि "अतुल्य भारत" जैसे प्रकाशन आम जनता को अपनी परम्पराओं तथा पर्यटन में सामजस्य स्थापित करने के प्रति जागरूक करने में मील का पत्थर बनेगें।

हिमाचल प्रदेश सरकार इस क्षेत्र को अपनाने के लिए प्रतिबद्ध रहेगी।

आदर सहित

आपका,
जयराम ठाकुर
(जय राम ठाकुर)

सुश्री संतोष सिल्पोकर,
संयुक्त निदेशक,
सी–1, हटमेंट्स, दाराशिकोह मार्ग,
नई दिल्ली–110011

दूरभाष : (का०) +91-177-2625400, (आ०) +91-177-2621384, 2627529, फैक्स : +91-177-2625011 ईमेल : cm-hp@nic.in

Rajasthan ILD Skills University (RISU)

(Established under the Act No. 6 of 2017)

Dr. Lalit K. Panwar
IAS (R)
Vice Chancellor
Former Secretary Tourism; GoI
Tel. No. 0141-7154211
Mob. No. +91 9650687888

D O No. RISU/GEN/2018/569

Dated: August 20, 2018

I am in receipt of your letter No. फा.सं. ई-11013/4/2015-हि. along with the copy of January - March, 2018 issue of **अतुल्य भारत**.

2. I have gone through the contents and found the issue very informative and educative. Kindly accept my heartiest congratulations and compliments for bringing out a high quality publication.

3. Also convey my compliments to Shri Gyan Bhushan, IES, Financial Advisor to the Ministry of Tourism and also the Chief Editor of the publication.

4. I am enclosing a copy of the Brochure of my University for your kind perusal and reference.

Yours sincerely,

(Dr. Lalit K. Panwar)
20.8.18

Enc.: As above

To:
Shri Mohan Singh
Consultant
Ministry of Tourism
Government of India
Room No.18, C-1 Hutments
Darashikooh Marg
New Delhi 110 011

6/2, Jamdoli, ILD Campus, Jaipur 302031, Rajasthan
Phone:+91-141-7154217
E-mail : risujaipur@gmail.com, Website:-www.ildindia.org

केशरी नाथ त्रिपाठी
राज्यपाल, पश्चिम बंगाल

सत्यमेव जयते

राजभवन
कोलकाता ७०००६२

७ सितम्बर, २०१८

प्रिय श्री संतोष सिल्पोकर जी,

आपके द्वारा प्रेषित दिनांक २५.०७.२०१८ का पत्र पर्यटन मंत्रालय की त्रैमासिक गृह पत्रिका "अतुल्य भारत" के अंक-१२ की प्रति के साथ प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

इस पत्रिका के माध्यम से मंत्रालय के कार्मिको को अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने के अवसर के साथ साथ जो भारतीय पर्यटन के बारे में जानकारी प्रदान करने का प्रयास किया गया है उसकी मैं सराहना करता हूँ।

शुभाकांक्षी

केशरी नाथ त्रिपाठी

Shri Santosh Silpokar,
Joint Director,
Ministry of Tourism,
Govt. of India,
C-1, Hutments. Dara Shikoh Road.
New Delhi-110011

रश्मि वर्मा, भा.प्र.से.
Rashmi Verma, IAS

सत्यमेव जयते

सचिव
भारत सरकार
पर्यटन मंत्रालय
नई दिल्ली

SECRETARY
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF TOURISM
NEW DELHI

अपील

हिन्दी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं

भारतीय संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में सबसे अधिक उपयुक्त मानते हुए 14 सितम्बर, 1949 को भारत की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया था। तभी से हम प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाते हैं।

राजभाषा के प्रति प्रेम हमारे राष्ट्र प्रेम को भी मजबूत बनाता है। राजभाषा हिन्दी सरकार और जनता के बीच महत्वपूर्ण कड़ी है। हिन्दी ने ही पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोकर अनेकता में एकता की भावना को आम जनता में निरंतर बनाए रखा है। हमारे देश की सबसे बड़ी जनसम्पर्क की भाषा हिन्दी ही है।

आज पर्यटन उद्योग तेजी से आगे बढ़ रहा है। हमारा मंत्रालय नई योजनाएं बना रहा है जिन्हें आम जनता के लाभ के लिए प्रचारित प्रसारित करना महत्वपूर्ण है और यह कार्य राजभाषा हिन्दी के माध्यम से बेहतर तरीके से किया जा सकता है। हालांकि संघ की राजभाषा नीति सद्भावना, प्रेरणा और प्रोत्साहन पर आधारित है किन्तु राजभाषा हिन्दी से सम्बन्धित सभी अनुदेशों और नियमों का अनुपालन उसी प्रकार दृढ़तापूर्वक किया जाना चाहिए जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन किया जाता है।

हिन्दी दिवस के अवसर पर मंत्रालय के सभी अधिकारियों से अपील है कि वे अपना अधिक से अधिक सरकारी कार्य हिन्दी में करें तथा अपने सहकर्मियों को भी हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करें, साथ ही मंत्रालय की नीतियों, कार्यक्रमों और प्रचार सम्बन्धी गतिविधियों में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें।

(रश्मि वर्मा)

परिवहन भवन, 1 संसद मार्ग, नई दिल्ली - 110001 दूरभाष : +91-011-23711792, 23321395
Transport Bhawan, 1 Parliament Street, New Delhi - 110001 Tel : +91-011-23711792, 23321395
फैक्स / Fax : +91-011-23717890 ई–मेल / E-mail : sectour@nic.in

सत्यमेव जयते

के. जे. अल्फोंस
K. J. ALPHONS

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
भारत सरकार, नई दिल्ली
MINISTER OF STATE (IC) FOR TOURISM
GOVERNMENT OF INDIA, NEW DELHI

संदेश

हिन्दी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

भारतीय संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को सबसे बड़ी जनसम्पर्क की भाषा मानते हुए इसे राजभाषा का दर्जा दिया था । तभी से प्रति वर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है ।

राजभाषा हिन्दी के महत्व को हम सभी जानते हैं यह जन–जन की भाषा है । हमारी भाषा हमारी अभिव्यक्ति का साधन ही नहीं अपितु राष्ट्रीय संस्कृति और सभ्यता की संवाहिका भी है । हिन्दी का शब्दकोश व्यापक और समृद्ध है । हिन्दी ने अनेकता में एकता बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है । सरकार की नीतियों, कार्यक्रमों और योजनाओं को आम जनता तक पहुंचाने के लिए हिन्दी सबसे सशक्त माध्यम है ।

हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्थापित करना भी हमारा उद्देश्य है । मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों से अपेक्षा है कि वे बैठकों व आपसी बातचीत में हिन्दी भाषा का प्रयोग करें साथ ही सरकार की नीतियों, कार्यक्रमों और योजनाओं की पहुंच आम जनता तक हो, इसके लिए न केवल मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी स्वयं हिन्दी में कार्य को बढ़ावा दें अपितु अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को भी हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करें । सरकारी कार्य की भाषा में सरलता व सहजता का समावेश भी अपेक्षित है । अपनी भाषा में मौलिक लेखन से अभिव्यक्ति में सरलता व सहजता स्वभाविक रूप से होती है ।

हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को बधाई देता हूं । मैं अपील करता हूं कि दिन प्रतिदिन के सरकारी कार्यों में सरल और सहज हिन्दी का प्रयोग करते हुए राजभाषा हिन्दी को आगे बढ़ाएं ।

आपका

(के.जे. अल्फोंस)

Incredible India अतुल्य!भारत

301,परिवहन भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली–110001 दूरभाष: 91-11-23717969, 23710431 फैक्स: 91-11-23731506
301, Transport Bhawan, Parliament Street, New Delhi - 110001 Tel : 91-11-23717969, 23710431 Fax : 91-11-23731506
E-mail : mos.tourism@gov.in

वाराणसी संस्कृति

देव दिवाली : एक अद्भुत अनुभव

–विश्वरंजन

असत्य पर सत्य की विजय के उपलक्ष्य में भारतवासी दीपोत्सव के रूप में दीवाली मानते है। दिवाली के नाम सुनते ही दिल में उमंगों की लहरें दौड़ उठती हैं। मन में ख्याल आता है की अब नये कपड़े आएंगे, मिठाइयाँ और दीपों से पूरा शहर सजेगा। बहुत हर्षोल्लास का माहौल होता है। दिवाली के पंद्रह दिन बाद, ठीक उसी प्रकार से कार्तिक माह की पूर्णिमा को 'देव दिवाली' मनाई जाती है। प्राचीन शहर काशी की विशेष संस्ृ ति और परम्परा पर आधारित यह उत्सव केवल वाराणसी में ही मनाया जाता है और इस अवसर पर गंगा नदी के किनारे रविदास घाट से लेकर राजघाट तक सैंकड़ों दिये जलाकर गंगा नदी की पूजा की जाती है।

शरद् ऋतु को भगवान की महारासलीला का काल माना गया है। श्रीमद्भगवत के अनुसार शरद् पूर्णिमा की चाँदनी में श्रीृ ष्ण का महारास संपन्न हुआ था। इसी पृष्ठभूमि में शरद पूर्णिमा से प्रारंभ होने वाली दीपदान की परंपरा आकाशदीपों के माध्यम से काशी में अनूठे सांस्ृ तिक वातावरण की द्योतक बनी है। गंगा के किनारे घाटों पर और मंदिरों, भवनों की छतों पर आकाश की ओर उठती दीपों की लौ यानी आकाशदीप के माध्यम से देवाराधना और पितरों की अभ्यर्थना तथा मुक्ति–कामना की यह अनूठी बनारसी पद्धति है। यह दीपस्तम्भ या कहे कि आकाशदीप पूरे कार्तिक मास में बाँस–बल्लियों के सहारे टंगे, टिमटिमाते 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का शाश्वत संदेश देते हैं। इसी क्रम में ये दीप कार्तिक पूर्णिमा के पावन पर्व पर पृथ्वी पर गंगा के तट पर अवतरित होते हैं।

*सहायक प्रोजेक्ट मैनेजर, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

इस बार है देव दीपावली...

दीवाली की धूमधाम और मस्ती के बाद पूरा आराम कर लें और तब वाराणसी जाने की योजना बनायें। आप के पास तैयारी का पूरा समय होगा क्योंकि इस साल देव दीपावली 21 नवंबर को पड़ रही है। इस दिन ही कार्तिक माह की पूर्णिमा होगी। जाहिर है तब तक गुलाबी ठंड पड़ने लगेगी और गरमी का असर खत्म हो जायेगा यानि मौसम शानदार होगा और आप इस अलौकिक दृश्य का पूरा आनंद ले सकेंगे।

देव दीपावली की शुरुआत :

काशी के स्थानीय लोगों के अनुसार देव दीवाली की परम्परा सबसे पहले पंचगंगा घाट पर 1915 में हजारों दिये जलाकर शुरु की गयी थी। बाद में इस प्राचीन परम्परा को काशी के लोगों ने आपसी सहयोग से इसे महोत्सव में बदल कर विश्वप्रसिद्ध कर दिया। इस मौके पर असंख्य दीपकों और झालरों की रोशनी से रविदास घाट से लेकर आदि केशव घाट और वरुणा नदी के घाटों पर बने सारे देवालय, महल, भवन, मठ, आश्रम जगमगा उठते हैं। इस अदभूत नजारे को देख कर लगता है कि जैसे पूरी आकाश गंगा ही जमीन पर उतर आयी हो। इस अवसर पर गंगा नदी के किनारे रविदास घाट से लेकर राजघाट तक सैकड़ों दीपक जलाकर गंगा नदी की पूजा की जाती है।

देव दीपावली उत्सव मनाने पर विभिन्न विचार-

काशी यानि वाराणसी को शिव की नगरी कहा जाता है। देव दीपावली की पृष्ठभूमि पौराणिक कथाओं से भरी हुई है। यहां देव दीपावली का उत्सव मनाने के पीछे शिव से जुड़ी एक कथा प्रचलित है। इस कथा के अनुसार त्रिपुरासुर नामक दैत्य ने प्रयाग में श्री विष्णु जी की कठिन तपस्या की जिससे उसकी तपस्या के प्रताप से भयंकर उष्मा उत्पन्न हुई जिससे तीनों लोक जलने लगे। इसके बाद विष्णु जी ने उसे दर्शन दिए और वरदान मांगने के लिए कहा। उसने वर मांगा कि कोई देवता, पुरुष, स्त्री, जीव, जंतु, पक्षी, निशाचर उसे न मार पाए। इस वरदान को पाने के बाद त्रिपुरासुर अमर हो गया। कथा के अनुसार तीनों लोकों में त्रिपुरासुर का राज होने लगा उसने तीनों लोकों को आतंकित करना आरम्भ कर दिया। देवताओं को परेशान करने के लिए त्रिपुरासुर ने स्वर्ग लोक पर भी आधिपत्य कर लिया था।

कोई भी देव उसे नहीं मार सकता था। चूंकि विष्णु जी ने ही उसे यह वरदान दिया था, इसलिए विष्णु ने भी उसका वध करने से मना कर दिया। विष्णु ने सभी देवों को शिव के पास जाने के लिए कहा। सभी देव मिलकर भगवान शिव के पास पहुंचे और उनसे त्रिपुरासुर के आतंक से मुक्ति दिलाने हेतु प्रार्थना करने लगे। महादेव तीनों लोकों में त्रिपुरासुर को ढूंढने के लिए निकल पड़े। इसके बाद कार्तिक पूर्णिमा के दिन महादेव ने प्रदोषकाल के समय अर्धनारीश्वर का रुप धारण कर त्रिपुरासुर का वध कर दिया। भगवान शिव ने कार्तिक पूर्णिमा के दिन राक्षस का वध कर उसके अत्याचारों से सभी को मुक्त कराया और त्रिपुरारि कहलाये। इससे प्रसन्न हो कर ही सभी देवताओं ने काशी में दीप जलाकर दीपोत्सव मनाया था और तभी से कार्तिक पूर्णिमा को देवदीवाली मनायी जाने लगी।

दिवाली के 15 दिन बाद कार्तिक पूर्णिमा को काशी में गंगा के अर्धचंद्राकार घाटों पर दीपों का अद्भुत जगमग प्रकाश 'देवलोक' जैसा वातावरण बना देता है। पिछले कुछ वर्षों में पूरे देश और विदेशों के पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र के रूप में देव दीपावली महोत्सव 'देश की सांस्ृ तिक राजधानी' काशी की संस्ृ ति की पहचान बन चुका है। करीब तीन किलोमीटर में फैले अर्धचंद्राकार घाटों पर जगमगाते लाखों दीप, गंगा की धारा में इठलाते, बहते दीपक, एक अलौकिक दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

दूसरी पौराणिक कथा के अनुसार महर्षि विश्वामित्र ने अपने तपोबल से त्रिशंकु को स्वर्ग पहुँचा दिया। देवतागण इससे उद्विग्न हो गए और त्रिशंकु को देवताओं ने स्वर्ग से भगा दिया। शापग्रस्त त्रिशंकु अधर में लटका रह गया। त्रिशंकु को स्वर्ग से निष्कासित किए जाने से क्षुब्ध विश्वामित्र ने अपने तपोबल से पृथ्वी–स्वर्ग आदि से मुक्त एक नई समूची सृष्टि की ही रचना प्रारंभ कर दी।

उन्होंने मिट्टी से कुश, ऊँट, बकरी–भेड़, नारियल, कोहड़ा, सिंघाड़ा आदि की रचना का क्रम प्रारंभ कर दिया। इसी क्रम में विश्वामित्र ने 'ब्रह्मा–विष्णु–महेश' की प्रतिमा बनाकर उनमें प्राण फूँकने के लिए अभिमंत्रित करना आरंभ किया तो सारी सृष्टि डाँवाडोल हो उठी, हर ओर हाहाकार मच गया। तभी देवताओं ने महर्षि की स्तुति की। महर्षि प्रसन्न हुए और उन्होंने नई सृष्टि की रचना का अपना संकल्प वापस ले लिया। देवताओं और ऋषि–मुनियों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। इस अवसर पर पृथ्वी, स्वर्ग, पाताल सभी जगह दीपावली मनाई गई। यही अवसर अब देव दीपावली के रूप में विख्यात है।

काशी के घाटों पर संपन्न होने वाली देव दीपावली के मौके पर उपस्थित लाखों की भीड़ ने इसे काशी के पाँचवें 'लाखा' मेले का रूप दे दिया है।

परंपरा और आधुनिकता का अद्भुत संगम–देव दीपावली– धर्मपरायण महारानी अहिल्याबाई होलकर के प्रयत्नों से भी जुड़ा है। अहिल्याबाई होलकर ने प्रसिद्ध पंचगंगा घाट पर पत्थरों से बना खूबसूरत 'हजारा दीपस्तंभ' स्थापित किया था, जो इस परंपरा का साक्षी है। आधुनिक देव–दीपावली की शुरुआत पांच दशक पूर्व यहीं से हुई थी। पंचगंगा घाट का यह 'हजारा दीपस्तंभ' देव दीपावली के दिन 1001 से अधिक दीपों की लौ से जगमगा उठता है और अभूतपूर्व दृश्य की सृष्टि करता है।

इस विस्मयकारी दृश्य की संकल्पना की पृष्ठभूमि में पूर्व काशी नरेश स्वर्गीय डॉ. विभूति नारायण सिंह की प्रेरणा उल्लेखनीय थी। बाद में स्वामी रामनरेशाचार्य जी, नारायण गुरु किशोरी रमण दुबे 'बाबू महाराज' (गंगोत्री सेवा समिति, दशाश्वमेध घाट), सत्येन्द्र मिश्र 'मुन्नन जी' (गंगा सेवानिधि) तथा कन्हैया त्रिपाठी (गंगा सेवा समिति) ने इस संकल्प को भव्य आयाम प्रदान किया।

नीचे कल–कल बहती सदानीरा गंगा की लहरें, घाटों की सीढियों पर जगमगाते दीपक और गंगा की धारा के समानांतर बहती हुई दर्शकों की जन–धारा देव दीपावली की शाम से आधी रात तक अनूठा दृश्य प्रस्तुत करती हैं। विश्वास–आस्था और उत्सव के इस दृश्य को आँखों में भर लेने को उत्सुक लोग देश–विदेश से इस दिन खिंचे चले आते हैं। प्रमुख घाटों पर तिल रखने भर की जगह नहीं होती। नावों के किराए कई सौ गुना ज्यादा होने के बावजूद और घाटों पर उत्सवी माहौल का यह अवसर का तिलिस्मी आकर्षण ग्लोबल होता जा रहा है।

देव दीपावली पर करें दीपदान

पुराणों के अनुसार इसे 'महापुनीत पर्व' माना जाता है। शास्त्रों में इस दिन गंगा स्नान, गंगा के किनारे उपासना, यज्ञ और दीपदान करने आदि का विशेष महत्व बताया गया है। सांध्यकाल में त्रिपुरोत्सव करके दीपदान किया जाता है और लोगो को घरो में प्रत्येक दिन एक दीप जलने का निवेदन किया जाता है।

वाराणसी के घाटों की सूची बहुत लम्बी है लेकिन हम आपको कुछ प्रसिद्ध घाटों के महत्व के बारे में संक्षिप्त में बता रहे हैं :

दशाश्वमेध घाट – इस घाट को इस शहर में सबसे प्रसिद्ध घाट कहना गलत नहीं होगा। यह सबसे पुराना घाट माना जाता है और प्रतिदिन इसी घाट पर

गंगा आरती की जाती है।

मणिकर्णिका घाट – इस घाट पर दाह संस्कार किए जाते हैं। इसलिए इस घाट को 'ज्वलंत' माना जाता है। यह भी कहा जात है कि इस घाट पर 2500 वर्षों से लगातार अग्नि प्रज्जवलित रहती है क्योंकि यहां 24 घंटे चिताएं जलती रहती है।

हरीश चंद्र घाट – यह घाट राजा हरीश चंद्र के नाम पर है। राजा हरीश चंद्र ने सदा सत्य बोलने का संकल्प लिया। लोगों का मानना है की जिन भक्तों का यहाँ अंतिम संस्कार किया जाता है, वह मोक्ष प्राप्त करते हैं। इस घाट को "आदि मणिकर्णिका" के रूप में भी जाना जाता है।

अस्सी घाट – यह घाट अस्सी नदी और गंगा नदी के संगम पर स्थित है। यह घाट दूर दक्षिणी कोने पर है। एक पीपल के वृक्ष के नीचे एक शिवलिंग है। यहाँ भक्तों को भगवान शिव की आराधना करते देखा जाता है।

तुलसी घाट – यह घाट प्रसिद्ध कवि और संत तुलसीदास के नाम पर है। हिंदू महीने के कार्तिक (अक्टूबर–नवम्बर) में यहां ृ ष्ण पूजा समारोह आयोजित किया जाता है।

चेत सिंह घाट – 18वीं शताब्दी के मध्य में चेत सिंह ने एक छोटे किले के रूप में महलनुमा इमारत का निर्माण कर इसे चेत सिंह घाट का नाम दिया था। यहां 1781 में वॉरेन हेस्टिंग्स और चेत सिंह के सैनिकों के बीच भयंकर लड़ाई हुई, जिसमें चेत सिंह की हार हुई और अंग्रेजों ने इस घाट/किले पर नियंत्रण कर लिया था। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राजा प्रभुनारायण सिंह ने फिर से इस किले का कब्ज़ा कर लिया था। इसका उत्तरी भाग नागा साधुओं को यहां तपस्या करने के लिए दान में दे दिया गया था।

दरभंगा घाट – दरभंगा घाट, वाराणसी के दशाश्वमेध घाट और राणा महल घाट के बीच में है। इस घाट का नाम दरभंगा के शाही परिवार के नाम पर रखा गया था। इस घाट के अलावा, दरभंगा के राज परिवार ने 1900 के शुरूआत में गंगा नदी के तट पर एक भव्य महल का निर्माण करवाया था। यहां दरभंगा के राजपरिवार द्वारा धार्मिक अनुष्ठान करवाए जाते थे और परिवार के लोग इसी घाट से गंगा की लहरों का नजारा देखते थे। आजकल दरभंगा घाट पर भी शवों का अंतिम संस्कार किया जाता है। यह घाट अन्य घाटों की अपेक्षा थोड़ा छोटा है।

मान मंदिर घाट – जयपुर के महाराजा मान सिंह ने सन् 1600 में इस घाट का निर्माण किया। इस घाट पर राजपूत वास्तुकला से बना एक महल है। सवाई जयसिंह द्वितीय ने 1730 में यहाँ एक खगोल विज्ञान वेधशाला (जंतर मंतर) बनवाई थी।

सिंधिया घाट – यह घाट मणिकर्णिका घाट के पास है, परन्तु यह एक शांत जगह है। यह सिंधिया परिवार के संरक्षण में है। यहां सबसे बड़ा आकर्षण आंशिक रूप से पानी में डूबा एक शिव मंदिर है।

भोंसले घाट – यह घाट मराठा शैली का विशिष्ट नमूना है। यहाँ एक भव्य पत्थर के घरों के निर्माण मराठों के काल में किया गया।

दत्तात्रेय घाट – यह घाट दत्तात्रेय नाम के एक ब्राह्मण संत के पदचिह्न के कारण जाना जाता है। इस घाट के पास संत को समर्पित एक छोटा सा मंदिर है।

पंचगंगा घाट – यह स्थान जहां पांच नदियों यानि गंगा, यमुना, सरस्वती, किराना, और धूतपाप का संगम है। इस स्थान से थोड़ी ही दूर औरंगजेब द्वारा बनवाई आलमगीर मस्जिद है।

राजघाट – इस घाट को आदि केशव घाट के रूप में जाना जाता है क्योंकि यहाँ आदि केशव विष्णु मंदिर है। यह माना जाता है की श्री विष्णु के सर्वप्रथम चरण बनारस में ही पड़े थे।

इन घाटों के अलावा यहाँ केदार घाट, मानसरोवर घाट, मीर घाट, ललिता घाट आदि जैसे अन्य प्रसिद्ध घाट भी है। आगंतुकों और श्रद्धालुओं को इन घाटों का दौरा करने और उनकी सुंदरता, रंगीन रोशनी और भीड़, का अद्भुत माहौल अनुभव करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। फोटोग्राफी में रुचि रखने वाले लोगों के लिए वाराणसी के घाटों का बड़ा आकर्षण है। वाराणसी के सभी घाट प्रत्येक देव दीपावली के वक्त श्रद्धालुओं के लिए कुछ अलौकिक दृश्य पेश करते हैं।

शाम होते ही सभी घाट दीपों की रोशनी में जगमगा उठते हैं। इस दृश्य को आंखों में समा लेने के लिए लाखों देशी–विदेशी अतिथि घाटों पर उमड़ते हैं। कार्तिक पूर्णिमा के दिन सायंकाल गंगा पूजन के बाद काशी के 80 से अधिक घाटों में से हर घाट पर दीपों की लौ प्रकाश के अद्भुत प्रभामंडल की सृष्टि करती है। शरद् ऋतु को भगवान की महारासलीला का काल माना गया है। यह दीप पूरे कार्तिक मास में टिमटिमाते 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का शाश्वत संदेश देते हैं। इसी क्रम में ये दीप कार्तिक पूर्णिमा के पावन पर्व पर पृथ्वी पर गंगा के तट पर अवतरित होते हैं।

वाराणसी के घाटों पर आजकल नाव वाले अपने बजरे (बड़ी नाव) को सजाने– संवारने में जुटे हैं। उनका बजरा सबसे अच्छा दिखना चाहिये। सभी के उत्साह का कारण है वह दिन जिसका पूरा वाराणसी पूरे साल भर इंतजार में रहता है, वह दिन है– देव दीपावली। देव दीपावली पर यहां के नाव वाले चंद घंटों में ही कई महीनों की कमाई कर लेते हैं। एक अच्छी तरह सजा–संवरा बजरा जो आम दिनों में दो से तीन हजार रुपये किराये पर जाता है वही देव दीपावली के दिन 50–60 हजार रूपये में बुक होता है। यह किराया कई बार एक लाख रूपए तक पहुंच जाता है। यही उत्साह बनारस के दूसरे छोटे–मोटे दुकानदारों से लेकर बड़े होटल मालिकों तक में पाया जाता है।

कैसे पहुंचे

रेल मार्ग : वाराणसी देश के सभी बड़े शहरों से रेलमार्ग से जुड़ा है

वायु मार्ग : वाराणसी के लाल बहादुर शास्त्री अंतर्राष्ट्रीय विमान क्षेत्र से देश प्रमुख शहरों के साथ ही विदेशों के लिए भी फ्लाईटें उपलब्ध है।

सड़क मार्ग : उत्तर प्रदेश और बिहार के कई बड़े नगरों से भी वाराणसी जाने के लिए बसें तथा टैक्सियां उपलब्ध रहती हैं।

ध्यान रखें कि टैक्सियां/कारें लगभग दो कि.मी. पहले ही रोक दी जाती है क्योंकि यहां की गलियां बहुत कम चौड़ी हैं। इसलिए घाटों की ओर जाने के लिए पैदल यात्रा करें अन्यथा रिक्शा ही एकमात्र साधन है।

देव दीपावली का वाराणसी की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव?

देव दीपावली ने खुद को इतना विकसित कर

लिया कि अब वाराणसी की पहचान बन गयी है। आज वाराणसी के पर्यटन क्षेत्र में देव दीपावली बहुत बड़ा योगदान करती है। यहां लगभग 600 होटल हैं, जिनमें 90 बड़े सितारा होटल हैं। देव दीपावली के आसपास सभी होटल पूरी तरह से भरे होते हैं। देवदीपावली के लिए यहां एक साल पहले से ही होटल और नावें बुक हो जाते हैं। सामान्य दिनों में जिन बजरों का किराया तीन–चार हजार रुपये होता है, इस दिन एक लाख से भी अधिक तक पहुंच जाता है। बनारसी साड़ी, रेस्टोरेंट, फूल माला, दीये बनाने वालों की भी चांदी रहती है।

क्यों है विदेशियों की सबसे बड़ी पसंद

विदेशियों के लिए काशी की देव दीपावली किसी आश्चर्य से कम नहीं हैं। वह वाराणसी के घाट और इसकी सुन्दरता को एकटक निहारते हैं। घाटों पर जगह–जगह आयोजित होने वाले छोटे बड़े संगीत कार्यक्रम भी उन्हें अपनी ओर खींचते हैं। नाव की सैर और फोटोजेनिक घाट विदेशियों की पहली पसंद हैं। यही वजह है कि महीनों पहले बुकिंग करवा कर लाखों की तादाद में विदेशी सैलानी देव दीपावली पर वाराणसी को गुलजार करते हैं।

एक दिन मैंने कुछ दोस्तों से देव दीपावली के बारे में पूछा तो उन्होंने मना कर दिया और उल्टे मुझसे पूछने लगे कि दीपावली के बारे में तो सुना है लेकिन यह देव दीपावली क्या होती है। कुछ ऐसी ही प्रतिक्रिया दूसरे लोगों की रही अतः मैंने यह विचार किया कि लोगों को अतुल्य भारत के माध्यम से देव दीपावली के बारे में जानकारी प्रदान की जाए।

– लेखक

वाराणसी में क्रूज पर्यटन

अब क्रूज में करें: काशी में गंगा के घाटों का दर्शन

—प्रस्तुति : रेखा द्विवेदी

2 सितम्बर रविवार की सुबह हर—हर महादेव के उद्घोष के बीच अलकनंदा क्रूज को गंगा में उतारा गया। खिड़कीया घाट पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक निजी कम्पनी नॉर्डिक द्वारा संचालित और विश्व स्तरीय सुविधाओं से लैस यह वातानुकूलित दो मंजिला क्रूज जनता को समर्पित किया। इस अत्याधुनिक क्रूज के उद्घाटन के पलों को कैमरे में कैद करने के लिए लोगों की उत्सुकता देखते बन रही थी। इस अवसर पर मुख्यमंत्री जी ने काशीवासियों से अपील की कि सब लोग प्रवासी भारतीय सम्मेलन में आने वाले मेहमानों का दिल खोलकर आतिथ्य सत्कार करें और इस अवसर पर हम दुनिया भर के मेहमानों को काशी की 'अतिथि देवो भवः' परम्परा से रूबरू कराएं। वाराणसी के लोग भी इस क्रूज को लेकर काफी उत्साहित हैं।

देश की सांस्ृतिक राजधानी वाराणसी आने वाले पर्यटक अब काशी के सभी घाटों को अत्याधुनिक अलकनंदा क्रूज में बैठकर देख सकेगें। यह दो मंजिला क्रूज है जिसकी लम्बाई 30 मीटर है। इसमें 110 यात्री सवार हो सकते हैं। इस क्रूज में सोफा स्टाइल में बैठने की व्यवस्था भी है और यात्री आराम से बैठकर वाराणसी को सुकून से निहार सकते हैं। इस क्रूज में खाने—पीने की व्यवस्था के साथ—साथ जीपीए तथा फ्री वाई—फाई की सुविधा भी है। क्रूज में यात्रियों की सुरक्षा के लिए लाइफ गार्ड भी तैनात किए गए हैं।

इसके संचालन से न केवल और अधिक पर्यटकों को आकर्षित किया जाएगा बल्कि रोजगार के अवसरों में भी वृद्धि होगी।

इस अत्याधुनिक क्रूज को देसी—विदेशी पर्यटकों के लिए प्रतिदिन अस्सी घाट से पंचगंगा घाट तक दिन में दो बार चलाया जाएगा। जिसके द्वारा यात्री वाराणसी के 84 घाटों को देख सकेंगे। इस क्रूज से सूर्योदय के ट्रिप में 'सुबह—ए बनारस' और शाम के ट्रिप में 'गंगा आरती' के दर्शन किए जा सकेंगे। दोपहर के समय इसे बैठकें, सेमिनार, विवाह समारोह आदि के लिए बुक कराया जा सकेगा। इसमें 11 पंडित भी उपलब्ध रहेंगे जिनसे रूद्राभिषक या गंगा पूजा जैसे अनुष्ठान भी कराए सकेंगे, जिसके लिए 75 हजार रुपये व्यय करने होंगे। इस क्रूज से यात्री विदेशों की तर्ज पर नौका विहार का आनंद भी ले सकेंगे।

दो घंटे के क्रूज के सफर के लिए प्रति व्यक्ति 750 रुपये+जीएसटी खर्च करने होंगे। इस टिकट में दो घाटों का आनंद लेने के साथ खाने पीने की सुविधा भी शामिल है। आध्यात्मिक और धार्मिक स्वरूप के विपरीत कोई अन्य वस्तु क्रूज पर ले जाने की अनुमति नहीं होगी। अलकनंदा क्रूज में यात्रा के लिए पर्यटक पहले से ऑन लाइन बुकिंग भी करा सकते हैं।

*वरिष्ठ अनुवादक, पर्यटन मंत्रालय

जानकारी

लमही: मुंशी प्रेमचंद का गांव

–राम बाबू

अपनी कहानियों में गरीबी और किसानों की जिंदगी का जीवंत बयां करने वाले हिंदी के उपन्यास सम्राट प्रेम चंद का गांवे लमही अब ई–विलेज बनने जा रहा है। गांव की भौगोलिक बनावट, क्षेत्र और आबादी, जमीन की खसरा खतौनी रजिस्ट्री की नकल जैसी सभी जानकारियां और अन्य सुविधाएं अब एक क्लिक पर मौजूद होंगी।

स्वदेशी–विदेशी पर्यटक मुंशी प्रेमचंद के इस गांव को देखने के लिए आते है।

लमही को हेरिटेज विलेज घोषित करने का काम शुरू हो गया है। इसका प्रस्ताव बना कर राज्य के संस्ृति विभाग ने केन्द्र सरकार को भेजा है। इस प्रस्ताव में मुंशी प्रेम चंद स्मारक के अलावा एक राष्ट्रीय संग्रहालय के साथ पूरे गांव को धरोहर के रूप में संरक्षित करने का भी विचार रखा गया है।

जिला मुख्यालय से करीब 15 किलोमीटर दूर वाराणसी–आजमगढ़ राष्ट्रीय राजमार्ग पर पांडेयपुर चौराहे से करीब पांच किलोमीटर का यह रास्ता पूरा होने पर जैसे ही गोदान के होरी–धनिया, पूस की रात के हलकू जैसे किरदारों के जनक मुंशी प्रेमचंद के गांव लमही का प्रवेश द्वार आता है, उनकी छाप महसूस होने लगती है।

गांव सुंदर और बिजली–सड़क जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं। लेकिन लमही का अपना दर्द भी है। सियासत रूपी साहूकार ने लमही बने किसान को जकड़ रखा है। यानी लमही को आज भी अपने 'नायक' का इंतजार है।

एक मॉडल गांव के रूप में विकसित लगभग ढाई हजार की आबादी वाला यह गांव खुले में शौच से मुक्त हो चुका है। लेकिन यह सब केवल सरकार के प्रयास से ही नहीं हुआ है, इसमें गांव के युवाओं और महिलाओं का भी बड़ा योगदान है। आज गांव में पक्की सड़क, बिजली, पानी की आपूर्ति, घर घर में शौचालय ,घर घर कूड़ा एकत्रित कर ले जाना, आदि को देखते हुए गांव को एक मॉडल कालोनी कहा जा सकता है। मुंशी प्रेमचंद के पैतृक आवास के ठीक सामने मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास, कहानियों और किरदारों पर शोध करने के लिए केन्द्र सरकार की पहल पर एक आलीशान भवन में 'मुंशी प्रेमचंद मेमोरियल रिसर्च सेंटर' तो एक साल पहले ही तैयार कर लिया गया था मगर भवन अपनी सार्थकता सिद्ध नहीं कर पा रहा है। मुंशी प्रेमचंद मेमोरियल रिसर्च सेंटर की बिल्डिंग बने डेढ़ साल हो चुका है पर इसका उद्घाटन कौन करे, तय नहीं हो पा रहा है।

यही नहीं, 11 साल पहले मुंशी प्रेमचंद की 125वीं जयंती पर उनके पैतृक आवास को संग्रहालय बनाने की घोषणा की गई थी। लेकिन इस भवन की दीवारें खस्ता हालत में है, जहां मुंशीजी ने कफन, निर्मला और ईदगाह जैसी रचनाएं लिखीं थी। मरम्मत के सरकारी प्रयास किये जाने के बावजूद दीवारों की सीलन खत्म नहीं हुई है। साहित्य प्रेमियों को उस

दिन का इंतजार है, जब उनके पैतृक आवास की दीवारों पर शीशे में मढ़ी मुंशीजी की अनमोल थातियां सहेजी जाएंगी।

विरासत बना प्रेमचंद का गांव

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के सिरमौर माने जाते हैं। वे उन थोड़े से लेखकों में शामिल हैं जिनके घर को उनकी याद में संजो कर रखा गया है। अब उनके गांव लमही को हेरिटेज विलेज के रूप में विकसित किया जा रहा है।

वाराणसी से लगे इस गांव को संरक्षित करने की कोशिशें काफी दिन से की जा रही थीं। मुंशीजी ने अपने पैतृक घर में करीब 40 वर्षों से भी अधिक साहित्य साधना की। उसे संग्रहालय बनाने की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। गांव के पोखर, तालाब और कुएं को भी संरक्षित किया जाएगा। प्रेमचंद के इस घर के सामने ही प्रेमचंद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र और प्रेमचंद सभागार का निर्माण लगभग पूरा होने को है।

वाराणसी शहर से लमही जाने के लिए पांडेयपुर चौराहे से बाएं आजमगढ़ जा रही सड़क पर मुड़ने से पहले ही प्रेमचंद के कथा पात्रों से परिचय होने लगता है। इस चौराहे पर उनके कथा पात्रों का सचित्र विवरण नजर आता है। आजमगढ़ रोड पर लमही के लिए बाएं अंदर जाने के लिए भव्य द्वार है। इस के दोनों तरफ भी प्रेमचंद के कथा पात्र काफी प्रमुखता से अपनी मौजूदगी दर्ज करते हैं। 'दो बैलों की कथा' के पात्र नजर आते हैं और उनके बीच शिला पट पर प्रेमचंद की बात दिखती है, "जब तक अंतःकरण दिव्य और उज्ज्वल न हो वह प्रकाश का प्रतिबिंब दूसरों पर नहीं डाल सकता"। सभी की निगाहें सहसा लमही में प्रवेश करने से पहले इन पर पड़ती हैं और पहली बार जाने वाला इनको जरूर पढ़ता है।

© DW/S. Waheed

घर में संग्रहालय

द्वार की परंपरा

अभी तक उत्तर प्रदेश में किसी भी गांव में प्रवेश के लिए भव्य द्वार की परंपरा नहीं है। लमही के अलावा शायद ही कोई गांव हो जिसमें दाखिल होने के लिए इतना अच्छा गेट बना होगा। इससे स्पष्ट होता है कि उनकी साहित्य साधना को उचित सम्मान दिया गया है। इस भव्य गेट से लमही गांव तक बेहतरीन सड़क और गांव में सारी सुविधाएं भी शायद प्रेमचंद की बदौलत ही सरकार ने उपलब्ध कराई हैं। प्रेमचंद मेमोरियल ट्रस्ट, लमही के अध्यक्ष सुरेश दुबे बताते हैं कि उन्होंने पिछले वर्ष हेरिटेज विलेज के लिए प्रस्ताव भेजा था जिसे स्वीकार कर लिया गया है, "हेरिटेज विलेज बनने के बाद लमही में आने वाले वह काल और खंड महसूस कर सकेंगे जिसमें प्रेमचंद लिखा करते थे।" उन्होंने बताया, "जिस कमरे में प्रेम चंद जी लिखते थे, जिस मेज पर वे लिखते थे उन चीजों को भी संरक्षित किया गया है।" शोधार्थियों और युवा साहित्यकारों के लिए यह सब कुछ बहुत मूल्यवान और प्रेरणादायक है।

लेखक का सम्मान

अभी तक लमही और प्रेमचंद को वही लोग जानते थे जो प्रेमचंद पर शोध आदि करते थे, लेकिन अब साहित्य जगत का लगभग हर व्यक्ति लमही शब्द से परिचित हो चुका है। उनकी पत्रिका 'लमही' के प्रकाशन के अलावा, उनके पौत्र विजय राय पिछले पांच वर्षों से राष्ट्रीय स्तर के 'लमही सम्मान' का भी आयोजन कर रहे हैं। पहला लमही सम्मान प्रख्यात कथाकार शिवमूर्ति को दिया गया था।

कैसे पहुंचे

रेल मार्ग : वाराणसी देश के सभी बड़े शहरों से रेलमार्ग से जुड़ा है

वायु मार्ग : वाराणसी का लाल बहादुर शास्त्री अंतर्राष्ट्रीय विमान क्षेत्र से देश प्रमुख शहरों के साथ ही विदेशों के लिए भी फ्लाईटें उपलब्ध है।

उत्तर प्रदेश और बिहार के कई बड़े नगरों से भी वाराण्सी के लिए सीधी सड़के तैयार की गई हैं। रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट आदि से लमही के लिए छोटे वाहन उपलब्ध हैं। इसके अलावा आजकल वाराणसी के टूर ऑपरेटर्स लमही के लिए आधा दिन का टूर भी बनाने लगे हैं।

लमही में कहानियों की तिलिस्मी दुनिया

लमही गांव में मुंशी प्रेमचंद स्मारक स्थल पर प्रेमचंद स्मारक न्यास लमही की एक लाइब्रेरी है। मुंशीजी के उपन्यासों, कहानियों की यह लाइब्रेरी सिर्फ एक पुस्तकालय तक ही सीमित नहीं है। कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद का गांव लमही महज एक गांव नहीं है, बल्कि यहां कथा सम्राट की कहानियों का तिलिस्म भी मौजूद है। ईदगाह के हामिद का चिमटा, गोदान का होरी और नमक का दरोगा का नायक। सब लमही की उस लाइब्रेरी में अपनी शिद्दत के साथ मौजूद हैं। उपन्यास सम्राट की अमर कहानियों के बीच उनके बचपन की एक झलक दिखाता एक गिल्ली डंडा भी है। बचपन में मुंशी प्रेमचंद अक्सर दोस्तों के साथ गिल्ली डंडा खेला करते थे। ये उनका पसंदीदा खेल था। इस लाइब्रेरी में मौजूद गिल्ली डंडा उनके बचपन के इसी पहलू को दिखाता है। इसी तरह यहां रखी पिचकारी भी उनके होली के त्योहार से जुड़े रहने का एहसास कराती है। सच ये है कि लमही की पहचान प्रेमचंद हैं और उनकी कहानियों का मर्म यहां की आब–ओ–हवा में घुला है। कोशिश है कि न केवल उनकी किताबों को पढ़ा जाए, बल्कि प्रेमचंद को समझा भी जाए।

भला ईदगाह कहानी के हामिद के चिमटे को कौन भूल सकता है। हामिद ने खिलौनों के बजाय इसे अपनी दादी के लिए खरीदा था। मानवीय संवेदना, पारिवारिक मूल्यों के उसी भाव को दर्शाता है यहां रखा चिमटा।

यहां उपलब्ध किताबों की लंबी फेहरिस्त में वो 'जमाना' भी है, जिसे अंग्रेजों ने जला दिया और वो समर यात्रा भी इसे अंग्रेजों ने प्रतिबंधित कर दिया था। प्रेमचंद स्मारक न्यास लमही के अध्यक्ष सुरेश चंद्र दुबे का कहना है कि इस गांव में अब भी कफन की बुधिया, बूढ़ी काकी और निर्मला जैसे किरदार हैं लेकिन अब उनका दर्द को लिखने वाला कोई नहीं।

प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई सन् 1880 को बनारस शहर से चार मील दूर लमही गाँव में हुआ था। आपके पिता का नाम अजायब राय था। वह डाकखाने में मामूली नौकरी करते थे।

धनपतराय की उम्र जब केवल आठ साल की थी तो माता के स्वर्गवास हो जाने के बाद से अपने जीवन के अन्त तक लगातार विषम परिस्थितियों का सामना करते रहे। पिताजी ने दूसरी शादी कर ली जिसके कारण बालक प्रेम व स्नेह को चाहते हुए भी नहीं पा सका। कहा जाता है कि घर में भयंकर गरीबी थी। पहनने के लिए कपड़े न होते थे और न ही पर्याप्त भोजन मिलता था। इन सबके अलावा घर में सौतेली माँ का व्यवहार भी हालत को खस्ता करने वाला था। विवाह के एक साल बाद ही पिताजी का देहान्त हो गया। अचानक आपके सिर पर पूरे घर का बोझ आ गया। एक साथ पाँच लोगों का खर्चा सहन करना पड़ा। पाँच लोगों में विमाता, उसके दो बच्चे पत्नी और स्वयं। प्रेमचन्द की आर्थिक विपत्तियों का अनुमान इस घटना से लगाया जा सकता है कि पैसे के अभाव में उन्हें अपना कोट बेचना पड़ा और पुस्तकें बेचनी पड़ी। एक दिन ऐसी हालत हो गई कि वे अपनी सारी पुस्तकों को लेकर एक बुकसेलर के पास पहुंच गए। वहाँ एक हेडमास्टर मिले जिन्होंने उनको अपने स्कूल में अध्यापक पद पर नियुक्त करवा दिया।

अपनी गरीबी से लड़ते हुए प्रेमचन्द ने मैट्रिक तक पढ़ाई की और शुरू में अपने गाँव से दूर बनारस पढ़ने के लिए नंगे पाँव जाया करते थे। इसी बीच पिता का देहान्त हो गया। पढ़ने का शौक था, आगे चलकर वकील बनना चाहते थे। मगर गरीबी ने तोड़ दिया। स्कूल आने – जाने के झंझट से बचने के लिए एक वकील साहब के बच्चों को पढ़ाने के लिए ट्यूशन पकड़ लिया और उसी के पास ही एक कमरा लेकर रहने लगे। ट्यूशन का पाँच रुपया मिलता था। पाँच रुपये में से तीन रुपये घर वालों को और दो रुपये से अपनी जिन्दगी की गाड़ी को आगे बढ़ाते रहे। इस दो रुपये से क्या होता महीना भर तंगी और अभाव का जीवन बिताते थे। जिंदगी की प्रतिकूल परिस्थितियों में मैट्रिक पास किया।

गरीबी, अभाव, शोषण तथा उत्पीड़न जैसी जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी प्रेमचन्द के साहित्य की ओर उनके झुकाव को नहीं रोक सकी। प्रेमचन्द जब मिडिल में थे तभी से उपन्यास पढ़ना आरंभ कर दिया था। उन्हें बचपन से ही उर्दू आती थी। उपन्यास और उर्दू नॉवल का ऐसा उन्माद छाया कि एक बुकसेलर की दुकान पर बैठकर ही सब नॉवल पढ़ गए। दो – तीन साल के अन्दर ही सैकड़ों नॉवेल पढ़ डाले थे।

प्रेम चंद बचपन में ही उर्दू के समकालीन

उपन्यासकार सरुर मोलमा शार, रतन नाथ सरशार आदि के दीवाने हो गये कि जहाँ भी इनकी किताब मिलती उसे पढ़ने का हर संभव प्रयास करते थे। आपकी रुचि इस बात से साफ झलकती है कि एक किताब को पढ़ने के लिए आपने एक तम्बाकू वाले से दोस्ती कर ली और उसकी दुकान मे रखी "तिलस्मे – होशरुबा" पढ़ डाली।

अंग्रेजी के अपने जमाने के मशहूर उपन्यासकार रोनाल्ड की किताबों के उर्दू अनुवाद को काफी कम उम्र में ही पढ़ लिया था। इतनी बड़ी – बड़ी किताबों और उपन्यासकारों को पढ़ने के बावजूद प्रेमचन्द ने अपने मार्ग को अपने व्यक्तिगत विषम जीवन अनुभव तक ही सीमित रखा। तेरह वर्ष की उम्र में से ही प्रेमचन्द ने लिखना आरंभ कर दिया था। शुरु में कुछ नाटक लिखे फिर बाद में उर्दू में उपन्यास लिखना आरंभ किया। इस तरह शुरु हुआ साहित्यिक सफर जो मरते दम तक साथ – साथ रहा।

पदोन्नति के बाद स्कूलों के डिप्टी इन्सपेक्टर बना दिये गए तो लेखन में अधिक सजगता आई। इसी खुशहाली के जमाने में आपकी पाँच कहानियों का संग्रह सोजे वतन प्रकाश में आया। यह संग्रह काफी मशहूर हुआ।

व्यक्तित्व

सादा एवं सरल जीवन के मालिक प्रेमचन्द सदा मस्त रहते थे। उनके जीवन की विषमताओं और कटुताओं से वह लगातार खेलते रहे। इस खेल को उन्होंने बाजी मान लिया जिसको हमेशा जीतना चाहते थे। अपने जीवन की परेशानियों को लेकर उन्होंने एक बार मुंशी दयानारायण निगम को एक पत्र में लिखा "हमारा काम तो केवल खेलना है– खूब दिल लगाकर खेलना– खूब जी– तोड़ खेलना, अपने को हार से इस तरह बचाना मानों हम दोनों लोकों की संपत्ति खो बैठेंगे। किन्तु हारने के पश्चात् – पटखनी खाने के बाद, धूल झाड़ खड़े हो जाना चाहिए और फिर ताल ठोंक कर विरोधी से कहना चाहिए कि एक बार फिर हो जाए जैसा कि सूरदास कह गए हैं, "तुम जीते हम हारे। पर फिर लड़ेंगे।" कहा जाता है कि प्रेमचन्द हंसोड़ प्र ृ ति के मालिक थे। विषमताओं भरे जीवन में हंसोड़ होना बहादुरी का काम है। इससे इस बात को भी समझा जा सकता है कि वह अपूर्व जीवनी–शक्ति का द्योतक थे। सरलता, सौजन्यता और उदारता के वह मूर्ति थे।

जहां उनके ह्रदय में मित्रों के लिए उदार भाव था वहीं उनके ह्रदय में गरीबों एवं पीड़ितों के लिए सहानुभूति का अथाह सागर था। जैसा कि उनकी पत्नी कहती हैं " हमने जाड़े के दिनों में गरम कपड़े सिलवाने के लिए उन्हें चालीस – चालीस रुपये दो बार दिए और दोनों बार उन्होंने वह रुपये प्रेस के मजदूरों को दे दिये। मेरे नाराज होने पर उन्होंने कहा कि यह कहां का इंसाफ है कि हमारे प्रेस में काम करने वाले मजदूर भूखे हों और हम गरम सूट पहनें।"

प्रेमचन्द को गाँव के जीवन से बहुत प्रेम था। वह सदा साधारण गंवई लिबास में रहते थे। जीवन का अधिकांश भाग उन्होंने गाँव में ही गुजारा। बाहर से बिल्कुल साधारण दिखने वाले प्रेमचन्द अन्दर से जीवनी–शक्ति के मालिक थे। अन्दर से जरा सा भी किसी ने देखा तो उसे प्रभावित होना ही था। वह आडम्बर एवं दिखावे से मीलों दूर रहते थे।

जीवन के प्रति उनकी प्रगाढ़ आस्था थी लेकिन

जीवन की विषमताओं के कारण वह कभी भी ईश्वर के बारे में आस्थावादी नहीं बन सके। धीरे – धीरे वे अनीश्वरवादी बन गए थे। एक बार उन्होंने जैनेन्द जी को लिखा "तुम आस्तिकता की ओर बढ़े जा रहे हो – जा रहीं रहे पक्के भगत बनते जा रहे हो। मैं संदेह से पक्का नास्तिक बनता जा रहा हूँ।"

मृत्यू के कुछ घंटे पहले भी उन्होंने जैनेन्द्र जी (हिंदी के जाने माने साहित्यकार जैनेन्द्र कुमार जैन्) से कहा था – "जैनेन्द्र, लोग ऐसे समय में ईश्वर को याद करते हैं मुझे भी याद दिलाई जाती है। पर मुझे अभी तक ईश्वर को कष्ट देने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई।"

प्रेमचन्द की कृतियाँ

प्रेमचन्द ने अपने नाते के मामू के एक विशेष प्रसंग को लेकर अपनी सबसे पहली रचना लिखी। 13 साल की आयु में इस रचना के पूरा होते ही प्रेमचन्द साहित्यकार की पंक्ति में खड़े हो गए। सन् 1894 ई0 में "होनहार बिरवान के चिकने–चिकने पात" नामक नाटक की रचना की। सन् 1898 में एक उपन्यास लिखा। लगभग इसी समय "रुठी रानी" नामक दूसरे उपन्यास की रचना की जिसका विषय ऐतिहासिक था। सन् 1902 में प्रेमा और सन् 1904–5 में "हम खुर्मा व हम सवाब" नामक उपन्यास लिखे गए। इन उपन्यासों में विधवा–जीवन और विधवा–समस्या का चित्रण प्रेमचन्द ने काफी अच्छे ढंग से किया।

जब कुछ आर्थिक तंगी दूर हुई तो 1907 में पाँच कहानियों का संग्रह सोज–ए–वतन (वतन का दुख दर्द) की रचना की। जैसा कि इसके नाम से ही मालूम होता है, रचनाकार ने इसमें देश प्रेम और देश को जनता के दर्द को रचनाकार ने प्रस्तुत किया। अंग्रेज शासकों को इस संग्रह से बगावत की झलक मालूम हुई। इस समय प्रेमचन्द नवाब राय के नाम से लिखा करते थे। लिहाजा नवाब राय की खोज शुरु हुई। नवाब राय पकड़ लिये गए और अंग्रेज अधिकारी के सामने पेश किया गया। उनके सामने ही अंग्रेजी शासकों ने इस ृति को जला दिया और बिना आज्ञा न लिखने का प्रतिबंध लगा दिया गया।

इस बंधन से बचने के लिए प्रेमचन्द ने दयानारायण निगम को पत्र लिखा और उनको बताया कि वह अब कभी नवाब राय या धनपतराय के नाम से नहीं लिखेंगे तो मुंशी दयानारायण निगम ने पहली बार प्रेमचन्द नाम सुझाया। यहीं से धनपतराय हमेशा के लिए प्रेमचन्द हो गये।

"सेवा सदन", "मिल मजदूर" तथा 1935 में गोदान की रचना की। गोदान आपकी समस्त रचनाओं में सबसे ज्यादा मशहूर हुई अपनी जिन्दगी के आखिरी सफर में मंगलसूत्र नामक अंतिम उपन्यास लिखना आरंभ किया। दुर्भाग्यवश मंगलसूत्र को अधूरा ही छोड़ गये। इससे पहले उन्होंने महाजनी और पूँजीवादी युग प्रवृत्ति की निन्दा करते हुए "महाजनी सभ्यता" नाम से एक लेख भी लिखा था।

सन् 1936 में प्रेमचन्द बीमार रहने लगे। अपने इस बीमार काल में ही आपने "प्रगतिशील लेखक संघ" की स्थापना में सहयोग दिया। आर्थिक कष्टों तथा ठीक से इलाज न कराये जाने के कारण 8 अक्टूबर 1936 को उनका निधन हो गया। और इस तरह वह दीप सदा के लिए बुझ गया जिसने अपनी जीवन की बत्ती का कण–कण जलाकर भारतीयों को पथ प्रकाश दिखाया था।

पर्या–पर्यटन

माणा : भारतीय सीमा पर अंतिम गांव

–राजेन्द्र सिंह मनराल*

पर्वत, हमेशा शांति से खड़े रहते हैं और मानव की हर गतिविधि पर चुपचाप नजर रखते हैं। यही पहाड़ आपको बता सकते हैं कि सदियां बीत जाने के बाद भी सब कुछ नहीं बदला है और उनके आंचल में जीवन हमेशा सुंदर ही नहीं कठिन भी है। फिर भी यहां के निवासियों के चेहरों पर मुस्कुराहट मिलती है। पवित्र बद्रीनाथधाम की छाया में, माणा गांव को पौराणिक कथाओं के लिए भी जाना जाता है। यहां हिमालयी शिखर और सदाबहार हरियाली की एक अजब सुंदरता है जो प्र ृ ति– प्रेमियों को अपनी ओर खींचती है। उत्तराखंड के चमोली जिले में भारत–तिब्बत सीमा पर 'भारत का आखिरी गांव' माणा निश्चित रूप से हमारी कल्पना की अपेक्षाओं से भी बहुत आगे है। माणा के नाम से प्रसिद्ध इस प्राचीन गांव का पुराणों में "मणिभद्र आश्रम" के रूप में उल्लेख मिलता है जहां महऋषि वेद व्यास का निवास था।

> उत्तराखंड राज्य में भारत और तिब्बत / चीन की सीमा से लगा आखिरी भारतीय गांव है माणा।इसे उत्तराखंड सरकार द्वारा "पर्यटन गांव" के रूप में प्रचारित किया जाता है।

हिमालय की दुर्गम पहाड़ियों से घिरा, लगभग 3220 मीटर की ऊंचाई पर और पौराणिक सरस्वती नदी से कुछ ही दूर बसा माणा गांव बद्रीनाथ शहर से सिर्फ चार कि.मी. दूर है। बद्रीनाथ आने वाले श्रृद्धालु पर्यटकों के लिए भी माणा गांव निकट का सबसे अच्छा रोमांचकारी और आदर्श पर्यटन स्थल है।

* लिपिक, पर्यटन मंत्रालय, नई दिल्ली

यहां भोटिया जनजाति के लोग रहते हैं। इस गांव के ग्रामीण छोटे झोंपड़ेनुमा घरों में रहते हैं जिन्हें बहुत ही खूबसूरती से सजाया गया होता है। माणा अपनी कई चीजों के लिए प्रसिद्ध है जैसे ऊनी वस्त्र जो आमतौर पर भेड़ की ऊन से बनाए जाते हैं। इसी प्रकार भेड़ की ऊन से बनी शॉलें, टोपियां, मफलर, आसन, पंकी (पतले कंबल), कालीन आदि। यह क्षेत्र आलू और राजमा के लिए भी प्रसिद्ध है।

माणा एक पर्यटक स्थल ...

भारत–तिब्बती सीमा पर अंतिम ज्ञात गांव माणा, बद्रीनाथ और नीलकंठ जैसे कई धार्मिक और सुंदर स्थानों का संगम है। एक ओर यहां भक्तों के लिए एक बहुत ही आकर्षक पर्यटन स्थान है तो वहीं साहसिक और उत्साही लोगों के लिए भी बहुत कुछ है। यहां कई ट्रेकिंग स्पोट्स हैं जहां से कुछ स्थानों पर ट्रेकिंग का आनंद लिया जा सकता है। आप माणा से वसुधरा, माणा से सतोपंथ और माणा से माणा पास, माणा से चरणपादुका तक कई मार्गों पर जा सकते हैं। बहुत सारे लोग गांव के आस–पास के इलाकों में भी कम ज्ञात पगडंडियों (ट्रेल्स) का पता लगाने के लिए जाते हैं।

माणा के बारे में पौराणिक कथाएं ...

माणा में महाभारत काल के निशान आज भी देखे जा सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि पांडवों ने स्वर्ग की यात्रा के दौरान माणा के रास्ते का उपयोग किया था। भीम (पांडवों के बीच पांच भाइयों में से एक) द्वारा निर्मित एक प्रसिद्ध पत्थर पुल है जिसे 'भीम पूल' कहा जाता है। यह सरस्वती नदी के पार एक पुल के रूप में एक विशाल चट्टान है।

भीम पुल

सतोपंथः सतोपंथ की यात्रा माणा से शुरू होती है। यह एक कठिन पहाड़ी ट्रेक है। यहां ट्रेक पर जाते समय एक स्थानीय गाइड, पोर्टर और जोशीमठ वन प्रभाग से अनुमति पत्र जरूरी है। इसके अलावा अच्छी किस्म के आरामदायक तथा हल्के जूते और गर्म कपड़े भी पहनना जरूरी है। माणा गाँव से लगभग 23 कि.मी. की दुर्गम चढ़ाई के बाद सतोपंथ झील, वास्तव में समुद्र तल से 4,600 मीटर की ऊंचाई पर स्थित अलकनंदा का उद्‌गम स्थल है। लोगों का विश्वास है कि पांडवों ने सशरीर स्वर्गारोहिणी (स्वर्ग की सीढ़ियाँ) से स्वर्ग जाने से पूर्व इसी स्थान पर स्नान ध्यान किया था। यहाँ जाने के लिये माणा से पैदल नौ कि.मी. लक्ष्मीवन – छः कि.मी. सहस्त्रधारा – पांच कि.मी. चक्रतीर्थ और अंत में तीन कि.मी. सतोपंथ तक पहुंचने में करीब तीन दिन लग जाते हैं। रात्रि विश्राम के लिये गुफा या टेंट उपलब्ध होते हैं। यदि आप सतोपंथ से स्वर्गारोहिणी शिखर तक जाने की इच्छा रखते हों तो लगभग पांच कि.मी. और ऊपर जाना होगा, जिसमें तीन घंटे का समय लगता है। यहाँ जाने के लिये भी एक स्थानीय गाइड, पोर्टर तथा अनुमति पत्र आवश्यक है।

स्वर्गारोहिणी पूरे साल भर बर्फ से ही ढका रहता है। सहस्त्रधारा के बाद अधिकाँश रास्ता बर्फ, ग्लेशियर

और मोरान (छोटी झील) से ही आच्छादित है। इस पूरे रास्ते भर प्र ृति का नैसर्गिक सौंदर्य मनमोहक है। कहीं झरने तो कहीं दूर दूर तक फैले बुग्याल बरबस आकर्षित करते हैं। चारों और बर्फ से ढकी पहाड़ियां मंत्रमुग्ध कर देती हैं। बुग्यालों में खिले सैकड़ों किस्म के रंग बिरंगे फूल इसकी खूबसूरती को और बढ़ा देते हैं।

गढ़वाल की रानी के रूप में प्रसिद्ध नीलकंठ शिखर

नीलकंठः नीलकंठ शिखर समुद्र तल से लगभग 6,597 मीटर की ऊंचाई पर है। दिन में सूर्य की दिशा बदलने के साथ–साथ इसकी प्रा ृतिक छटा भी अनेक रूप बदलती है। इतने मनोहारी रूप के कारण ही इस शिखर को 'गढ़वाल क्वीन' भी कहा जाता है। गढ़वाल की प्रा ृतिक सुंदरता का वर्णन करते समय इस हिम शिखर का वर्णन अवश्य किया जाता है। यह नाम इसके स्वरूप के आधार पर पड़ा। पिरामिड जैसे आकार में पर्वत पर फैली बर्फ के मध्य वह हिस्सा कुछ ऐसा नजर आता है जैसे भगवान शिव के कंठ पर व्याप्त नीला रंग हो।

इस पर्वत की चढ़ाई काफी कठिन है। यही कारण है कि पिछले 50 साल में इस पहाड़ी पर बहुत कम पर्वतारोहण अभियान किए जा सके हैं। इस शिखर पर विजय प्राप्त करने के लिए सबसे पहला प्रयास 1937 में फ्रैंक स्मिथ ने किया था। उनका अभियान असफल रहा मगर नीलकंठ के सौन्दर्य से प्रभावित होकर उन्होंने इसे 'गढ़वाल क्वीन' का नाम देते हुए इसे हिमालय की दूसरी सुंदरतम और दुर्गम पहाड़ी बताया था। उनके बाद भी यहां नौ पर्वतारोही दलों के प्रयास असफल रहे थे। जून,1974 में पहली बार इस पर विजय पायी गयी, जब एसपी चमोली के नेतृत्व में भारत तिब्बत सीमा पुलिस के सोनम पुल्जर, कन्हैया लाल, दिलीप सिंह तथा नीमा दोरजी उत्तरी दिशा से नीलकंठ शिखर तक पहुंचे। उसके बाद दूसरा सफल अभियान 1993 में संभव हो पाया।

नीलकंठ शिखर के आसपास प्र ृति की अनोखी छटा है। इसके उत्तर–पश्चिम में सतोपंथ ग्लेशियर, दक्षिण–पश्चिम में पनघटिया ग्लेशियर तथा पश्चिम दिशा में विशाल गंगोत्री ग्लेशियर एवं अन्य हिम शिखर हैं। इसके निकट ही गौरी पर्वत एवं हाथी पर्वत नामक शिखर हैं।

बद्रीनाथ से भी नीलकंठ के दर्शन किए जा सकते हैं। बद्रीनाथ मंदिर के पिछले भाग की ओर से नीलकंठ शिखर का सुंदरतम रूप देखा जा सकता है। सुबह के समय सूर्य की किरणें जब इस शिखर पर पड़ती हैं तो उस समय शिखर की धवल छवि वास्तव में अपूर्व लगती है। कुछ लोग इसके सौन्दर्य को और निकट से देखने के लिए इसके बेस कैम्प तक पैदल यात्रा/ ट्रैकिंग करते हुए पहुंचते हैं। इसके लिए बद्रीनाथ से चरणपादुका होकर करीब 10 कि.मी. पैदल चलना पड़ता है। यह बेस कैम्प 4,270 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इस ट्रैक पर जाने के लिए यहां के किसी अनुभवी गाइड को साथ लेना जरूरी है।

माणा जाने का सबसे अच्छा समय : गर्मियों में भी यहां का तापमान आपकी हड्डियों तक को ठंडा देता है। जब दिल्ली के आस पास तापमान 40 डिग्री होता है उस दौरान यहां का तापमान औसतन 10–12 डिग्री होता है। इस समय यहां का मौसम बहुत ही सुखद और शांत होता है। इस दौरान यहां बमुश्किल सात से आठ कि.मी. प्रति घंटे की गति से चलती मस्ती भरी हवाएं, पूर्णतः शुद्ध वातावरण तन मन को विभोर कर देते हैं। आप यहां प्र ृ ति का पूरा आनंद ले सकते हैं। लेकिन रातें और भी ठंडी हो सकती हैं क्योंकि सूर्यास्त के बाद तापमान गिरता है। सर्दी के मौसम में अत्यधिक ठंड और मानसून के समय में भारी बारिश होती है जिससे यहां पहुंचने में कठिनाई होती है। लेकिन फिर भी माणा का लालित्य हर समय मानव को आकर्षित करता है।

तप्त कुंड

तप्त कुंड बद्रीनाथ मंदिर और अलकनंदा नदी के बीच स्थित एक प्रा ृ तिक गर्म पानी का चश्मा है। तालाब के सल्फर युक्त जल का तापमान 45 डिग्री सेल्सियस के आस पास होता है। भक्त इस तालाब को पवित्र मानते हैं क्योंकि इसे अग्निदेव का पवित्र निवास माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि कुंड के जल में औषधीय तत्व तथा उपचारक गुण हैं जिनसे त्वचा के रोगों का इलाज करने में सहायता मिलती हैं। भक्तगणों का विश्वास है कि पवित्र तप्त कुंड में डुबकी लगाने से शरीर ही नहीं मन की भी शुद्धि होती है। इसलिए, यहां स्नान करना एक धार्मिक अनुष्ठान बन गया है। यह बद्रीनाथ मंदिर के निकट ही है ताकि भक्त पवित्र मंदिर में प्रवेश करने से पहले एक डुबकी लगा सकें।

तप्त कुंड

बद्रीनाथ मंदिर

यह भारत के पवित्र मंदिरों में से एक है, जो भगवान विष्णु को समर्पित एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है।

यह माणा गांव से साढ़े चार कि. मी. दूर है। यह मंदिर भगवान विष्णु के रूप बद्रीनाथ को समर्पित है। पौराणिक कथा में उल्लेख है कि भगवान विष्णु ध्यानयोग करने हेतु एक सुरम्य स्थान खोज रहे थे और उन्हें अलकनंदा के पास शिवभूमि का स्थान बहुत पसंद आया। उन्होंने वर्तमान चरणपादुका स्थल पर ऋषि गंगा और अलकनंदा नदी के संगम के पास बालक रूप धारण किया और रोने लगे। उनके रोने की आवाज़ सुनकर माता पार्वती और शिवजी उस बालक के पास आए और पूछा कि तुम्हे क्या चाहिए? तब बालक ने ध्यानयोग करने के लिए केदार भूमि का यह स्थान मांग लिया। इस तरह से रूप बदल कर भगवान विष्णु ने शिव पार्वती से केदार भूमि को अपने ध्यानयोग करने हेतु प्राप्त कर लिया। अलकनंदा नदी के बाएं तट पर नर और नारायण नामक दो पर्वत श्रेणियों के बीच का यह स्थान बद्री विशाल के नाम से भी जाना जाता है यह प्राचीन शैली में बने भगवान

विष्णु के इस विशाल मंदिर की ऊँचाई करीब 15 मीटर है।

वसुधरा: जल–प्रपात हमेशा से मानव की कल्पना को आकर्षित करते रहे हैं। माणा गाँव से पांच कि.मी. दूर पश्चिम में स्थित वसुधरा बर्फ से ढकी चोटियों, ग्लेशियरों और ऊँची चट्टानों से घिरा 145 मी0 ऊँचा झरना है। कभी–कभी प्रचंड हवा का झोंका पूरे झरने की धारा को इस प्रकार बिखेर देता है लगता है जैसे कुछेक मिनट के लिए झरना रुक गया हो।

वसुधरा झरना

यह भी माना जाता है कि यह स्थान पांडवों के निर्वासन के दौरान उनका अस्थायी प्रवास था। वसुधरा नदी घाटी का दृश्य अत्यंत मनोहारी है। माणा से वसुधरा तक ट्रेकिंग में दो घंटे का समय लगता है। इस पैदलयात्रा के दौरान वसुधरा नदी घाटी का विचरण देखना बहुत ही सुंदर हैं। बद्रीनाथ मंदिर से नौ कि.मी. और माणा गांव से लगभग आठ कि. मी. दूर स्थित, वसुधरा फॉल्स इस स्थान पर आने वाले पर्यटकों के लिए एक और आकर्षण है।यह मुख्य मार्ग से 2.8 कि.मी. अंदर है। लेकिन यदि आप इसके लुभावने प्रवाह को देखने के इच्छुक हों तो लगभग छः कि.मी. की यात्रा करनी होगी। यद्यपि यह बहुत लंबी और थकाऊ यात्रा है लेकिन एक बार जब आप इस जगह तक पहुंच जाएंगे तो घाटी के मनोरम दृश्यों को देख कर सारी थकान गायब हो जाएगी ।

व्यास गुफा

व्यास गुफा: ऐसा माना जाता है कि माणा गांव ही यहां महर्षि वेद व्यास का निवास था और यहीं पर उन्होंने चार वेदों की रचना की थी। मंदिर की एक विशेषता इसकी छत है जो वेद व्यास की पुस्तकों के संग्रह के पन्नों जैसी दिखती है। गुफा में महऋषि व्यास का छोटा मंदिर है। इस मंदिर को 5000 वर्ष पुराना बताया जाता है। यह गुफा गांव से सिर्फ 200 मीटर दूर है।

गणेश गुफा: यहां श्री वेद व्यास ने महाभारत की रचना करते समय बोलकर गणेश से लिखवाया था।

ऐसा माना जाता है कि माणा ही वह स्थान है जहां महर्षि व्यास ने गणेश जी को महाभारत सुनाया था। यह एक कल्पना की तरह है कि वह स्थान जहां सबसे बड़ी भारतीय पौराणिक कथाओं के नायक स्वर्ग की यात्रा के आखिरी चरण पर थे और महाकाव्य महाभारत का जन्मस्थान उनके रास्ते में था।

महाभारत में ऐसा वर्णन आता है कि वेदव्यास जी ने हिमालय की तलहटी की एक पवित्र गुफा में तपस्या करते समय ध्यान योग में स्थिर होकर महाभारत की घटनाओं का आदि से अन्त तक स्मरण कर मन ही मन में महाभारत की रचना कर ली थी। मगर उनके सामने एक गंभीर समस्या आ खड़ी हुई कि इस काव्य के ज्ञान को जन साधारण तक कैसे पहुँचाया जाए क्योंकि इसकी जटिलता और लम्बाई के कारण यह

बहुत कठिन था कि कोई इसे बिना कोई गलती किए वैसा ही लिख दे जैसा कि वे बोलते जाएँ। इसलिए ब्रह्मा जी के कहने पर व्यासजी गणेश जी के पास पहुँचे और उनसे लिखने के लिए प्रार्थना की। गणेश जी एक शर्त पर लिखने को तैयार हुए कि एक बार कलम उठा लेने के बाद काव्य समाप्त होने तक बीच में नहीं रुकेंगे।

व्यास जी जानते थे कि यह शर्त बहुत कठिन थी इसलिए उन्होंने भी चतुरता से अपनी एक शर्त रखी कि कोई भी श्लोक लिखने से पहले गणेश जी को उसका अर्थ समझकर उन्हें बताना होगा। गणेश जी ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। इस तरह व्यास जी बीच–बीच में कुछ कठिन श्लोक बोल देते थे। जब गणेश उनके अर्थ पर विचार कर रहे होते उतने समय में ही व्यास जी कुछ और नये श्लोक रच लेते थे। इस प्रकार सम्पूर्ण महाभारत तीन वर्षों के समय में लिखी गयी थी।

सरस्वती मंदिर

पौराणिक कथाओं के अनुसार सरस्वती नदी को पवित्र नदियों में से एक माना जाता है। यह घाटी में स्थित है। सरस्वती मंदिर तक बहुत ही कम भक्त जाते हैं क्योंकि इस मंदिर तक पहुंचने के लिए एक कि.मी. तक सवारी और फिर लगभग डेढ़ कि.मी. की पैदल यात्रा करनी होती है। यह स्थान 24 कि. मी. उत्तर में नंदा देवी बायोस्फीयर रिजर्व में स्थित है। यह सरस्वती नदी का उद्गम माना जाता है। यहां

जाने वाली सड़क नदी के पास तीन कि.मी. दक्षिण पश्चिम और झील देवताल के बीच कई खूबसूरत छोटे तालाब हैं। इस प्रकार तालाबों के साथ साथ चलना एक अलग ही अनुभव है।

भीम पुलः माणा का एक धार्मिक स्थान होने के नाते पौराणिक कथाओं में भीम पूल का महत्वपूर्ण स्थान है। इसे उन पुलों में से एक माना जाता है जिसे पांडव पुत्र भीम ने बनाया था। उन्होंने सरस्वती नदी पार करने में अपने परिवार की सहायता करने के उद्देश्य से सरस्वती नदी पर भारी चट्टाने फेंक कर इस पुल का निर्माण किया था। यहां सरस्वती नदी पार करने के लिए एक पुल के रूप में दो विशाल चट्टाने जुड़ी हैं।

माता मूर्ति मंदिर : यह मंदिर भगवान नारायण की मां को समर्पित है। यहां के लोकगीतों में इस कथा के बारे में पता चलता है कि माता मूर्ति ने तपस्या कर भगवान विष्णु से अपने पुत्र के रूप में जन्म लेने का अनुरोध किया था, जिसे विष्णुजी ने स्वीकार कर लिया। इसलिए भगवान विष्णु ने नर और नारायण नामक जुड़वा बालकों के रूप में जन्म लेकर माता की इच्छा पूर्ण की थी। अगस्त के महीने में इस मंदिर में एक बहुत बड़ा वार्षिक मेला लगता है। इस दौरान यहां काफी भीड़ होती तथा खूब चहल पहल रहती है।

माता मूर्ति मंदिर

ठहरने की व्यवस्था ?

आवास के लिए यहां से लगभग 50 कि.मी. निकटतम शहर जोशीमठ है। जहां अच्छे गेस्ट हाउस, कॉटेज और बजट टैरिफ पर होटल मिल जाते हैं। इसके अलावा जोशीमठ और आसपास के स्थानों में कैम्पिंग रिसॉट्र्स भी काफी लोकप्रिय है। ट्रेकर्स और साहसिक उत्साही पर्यटक ज्यादातर शहर से बाहर टैंटनुमा कैम्पों में रहना पसंद करते हैं जहां से वह प्र ृ ति के शानदार नजारों का आनंद ले सकते हैं। इसके अलावा चमोली, पीपलकोटी और जोशीमठ में गढवाल मंडल विकास निगम के गेस्ट हाउस भी उपलब्ध हैं। माणा के पास बद्रीनाथ धाम में मंदिर समिति की धर्मशालाएं भी मिल जाती हैं।

माणा कैसे पहुंचे?

राष्ट्रीय राजमार्ग 58 तक, जोशीमठ उत्तराखंड के सभी प्रमुख शहरों के साथ–साथ दिल्ली तक सड़क से अच्छा सम्पर्क है। जोशीमठ माणा से लगभग 50 कि.मी. दूर है और यहां से गांव के लिए कैब या अपने वाहन से आसानी से पहुंचा जा सकता है। रेल से जाने पर निकटतम रेलवे स्टेशन हरिद्वार है। इसी प्रकार हवाई यात्रा करने पर निकटतम हवाई अड्डा देहरादून में है। लेकिन इन दोनों ही स्थानों से आपको टैक्सी या बसों की सेवाएं लेनी होंगी, जो काफी दूर हैं। इसलिए सलाह दी जाती है कि आप शुरू से ही अपने निजी या किराए के वाहनों से यात्रा करें।

माणा पास:

उत्तराखंड में जांस्कर पर्वत श्रृंखला के नंदा देवी बायोस्फीयर रिजर्व में माणा पास भारत और तिब्बत की सीमा पर समुद्र तल से 5610 मीटर की ऊंचाई पर, हिमालय में स्थित एक पर्वतीय पास है। इसे माणा–ला, चिरबिता–ला और डुंगरी–ला के नामों से भी जाना है और यह पास भारत (उत्तराखंड) और तिब्बत को जोड़ता है। यह दुनिया में सबसे ज्यादा वाहन–सुलभ पास में से एक है। माणा–पास पर पर्यटक सरस्वती नदी के स्रोत और देवताल झील देखने के लिए जाते हैं।

बद्रीनाथ से तिब्बत तक जाने वाली सड़क को माणा–पास नाम दिया गया था। भारत और तिब्बत के बीच माणा–पास एक प्राचीन व्यापार मार्ग था। चीन ने 1951 में इसे बंद कर दिया था लेकिन फिर भी छुटपुट व्यापार के लिए इस मार्ग का उपयोग जारी रहा।29 अप्रैल, 1954 को चीन और भारत ने तीर्थयात्रियों और स्थानीय यात्रियों को माणा पास के माध्यम से दोनों देशों के बीच यात्रा करने के अधिकारपत्र पर हस्ताक्षर किए।

ट्रेकिंग से पहले इस पास पर आपको गढ़वाल हिमालयी रेंज के शिखर चौखम्बा पर्वत के शानदार दृश्य देखने को मिलते हैं। इसी पास पर देवताल झील है जिसे सरस्वती नदी का स्रोत माना जाता है। माणा–पास पर जाने से पहले नागरिकों को प्रशासन से विशेष अनुमति लेनी जरूरी है। यह अनुमति केवल एसडीएम/डीएम और आईटीबीपी द्वारा दी जाती है। माणा–पास जाने के लिए वैध लाइसेंस और एक मतदाता आईडी प्रुफ और वाहन के पंजीकरण की फोटोप्रतियां लेकर जोशीमठ में एसडीएम/डीएम कार्यालय से या आईटीबीपी के कमांडेंट के कार्यालय से अनुमति लेनी होती है। वहां से अनुमति मिलने के बाद बद्रीनाथ में दो कि. मी. दूर सेना के बेस कैम्प में अधिकारियों से संपर्क करना होगा। वहां से भी अनुमति मिलने पर ही पर्यटकों को माणा–पास जाने दिया जाता है। लेकिन ध्यान रखें कि यदि आपके ग्रुप

में चार से अधिक व्यक्ति होंगे तो मना भी किया जा सकता है।

माणा जाने से पहले कुछ सावधानियां बरतनी चाहिए :

- देश की सबसे ऊंची पहाड़ी सड़कों में से एक माणा–पास सीमा सड़क संगठन द्वारा 2005–2010 की अवधि में बजरी से बनाई गई पक्की सड़क है मगर बारिश और भारी बर्फबारी के कारण इस सड़क पर अक्सर कीचड़ जमा हो जाता है। अनुभवी चालकों के लिए तो यह एक मजेदार यात्रा हो सकती है। परन्तु यदि आप कच्ची सड़कों पर गाड़ी चलाने के अभ्यस्त नहीं हैं तो इस क्षेत्र में ड्राइविंग न करें। खासकर मानसून के मौसम में, एकदम खड़ी चढ़ाई वाली और कभी कभी कीचड़ भरी गीली सड़क पर ड्राइविंग करना समझदारी नहीं है।
- यदि आपको सांस अथवा हृदय रोग से संबंधित कोई तकलीफ है तो भी ड्राइव न करें। पहाड़ों के शिखरों पर लगभग 40% कम ऑक्सीजन होती है। साधारणतया मैदानी इलाके का एक स्वस्थ व्यक्ति भी 2500–2800 की मीटर ऊंचाई पर आकर असहज महसूस कर सकता है। इसलिए सांस लेने में कठिनाई होती है। आपकी धड़कनें तेज हो जाती है और ऊंचाई पर चढ़ना कठिन हो जाता है। ऊंचाई,बीमारी, खराब मौसम, खड़ी सड़क यात्रा को मुश्किल बना देती है।
- यदि आप को ऊंचाइयों से डर लगता हो तो भी यहां से दूर रहें।
- यह मार्ग दक्षिण राष्ट्रीय राजमार्ग 58 के विस्तार से दक्षिण में पहुंचा है जो बद्रीनाथ के साथ दिल्ली को जोड़ता है। हालांकि इस मार्ग पर सड़क भूस्खलन का भी खतरा रहता है। माणा–पास पर आते ही कुछ रास्ता अच्छा है। तिब्बत की ओर की सड़क की तुलना में भारत की ओर की सड़क कुछ कमजोर ही है।
- यदि हो सके तो मानसून के मौसम में इस स्थान पर जाने से बचना चाहिए क्योंकि इस दौरान आपको यहां की सड़कों पर रोड ब्लॉक और भूस्खलन का सामना करना पड़ सकता है। यदि अति उत्साही हैं तो मानसून में यहां जाने की योजना बनाने से पहले मौसम के पूर्वानुमान का पता कर लेना चाहिए। वैसे भी मानसून के दौरान यहां का तापमान लगभग 13–14 डिग्री सेल्सियस के आस पास होता है।
- सर्दियों में माणा का मौसम बहुत ठंडा होता है क्योंकि इस समय में शाम और रात के दौरान तापमान शून्य डिग्री सेल्सियस से नीचे चला जाता है। इस दौरान यहां अक्सर अच्छी बर्फबारी होती है। इस कारण भी यहां आना मुश्किल हो जाता है।

अंत में हम यही बताना चाहते हैं कि हिमालय की प्रा ृतिक सुन्दरता देखना एक सुखद आश्चर्य होता है। अलकनंदा के चारों ओर अविश्वसनीय रूप से सुंदर और उभरती घुमावदार सड़क, शायद ऐसी एकमात्र गवाह हैं जिसने इस रास्ते से पांडवों को स्वर्ग की ओर जाते देखा होगा।

यहां, आप 'इंडिया की लास्ट टी शॉप' के रूप में प्रचारित दुकान पर एक कप ताज़ा चाय की चुस्की का आनंद लेना न भूलें। यदि आप साधारण रूप से घूमने आए हैं तो अधिक से अधिक दो घंटे का समय काफी है।

***

सेहत

अपनी सेहत का रखें ख्याल

–अनूपम कुमार

पर्यटन क्षेत्र में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। आज इस क्षेत्र में सैकड़ों नये लोग जुड़ रहे हैं। होटल व्यवसाय में भी लगातार उन्नति और प्रसार हो रहा है।

इस क्षेत्र में काम करने वाले लोग भी अपनी निजी जिन्दगी को भूल कर मेहमान नवाजी कर रहे हैं। लंबी कार्य अवधि तथा अव्यवस्थित दिनचर्या का जीवन इस क्षेत्र से जुड़े लोगों के स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है। यदि हम स्वस्थ नहीं रहेगे तो शायद इस क्षेत्र में अधिक अवधि तक अपनी सेवाएँ नहीं दे पायेंगे।

विगत आठ वर्षों में लगभग 1000 से ज्यादा बच्चे हमारे कॉलेज से अध्ययन करने के बाद प्रोफेशनल बने हैं। उनसे बातचीत में मैंने उनके स्वास्थ्य के संबंध में कुछ अध्ययन किया है जिनमें से कुछ कारण निम्नलिखित हैं जिनकी वजह से लोग बीमार हो रहे हैं।

➢ **खान पान की गलत आदतें**:– हम लोग इस क्षेत्र में ज्यादातर मांसाहार, तली हुई चीजें, फास्ट फूड, वसायुक्त दूध और दूध उत्पाद, चीनी आदि का अधिक मात्रा में सेवन करते हैं। चीनी और सामान्य कार्बोहाईड्रट जैसे ब्रेड, पास्ता और बेक की हुई चीजें, हृदय रोग और अल्जाईमर्स का खतरा बढ़ाती है, भोजन में सोडियम की अधिकता या पोटैशियम की कमी रक्तदाब को बढ़ाती है।

➢ **धूम्रपान** :– मेरे अध्ययन के मुताबिक लगभग 50 प्रतिशत प्रोफेशनल या तो धूम्रपान के आदि है अथवा परोक्ष रूप से धूम्रपान करते हैं। विषैले रसायन खून में अच्छे कोलेस्ट्रॉल को कम करते हैं जिससे रक्त का थक्का जमने और रक्त नलिकाओं के ब्लाकेज होने की आशंका बढ़ जाती है। धूम्रपान धमनियों को ब्लॉक के जमाव को बढ़ा देता है।

यह बातें केवल होटल प्रबंधकों पर लागू होती हो ऐसा नहीं है। वास्तव में हम सभी को अपने खानपान पर नियंत्रण रख कर अपनी सेहत और स्वास्थ्य का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए। एक बात गांठ बांध लीजिए कि सेहत है तो जान है और जान है तो जहान है। आप स्वस्थ हैं तो सभी कुछ आपके पास है। यदि बिमारियां पास आ गई तो बस फिर ... भगवान है।

➢ **तनाव**:– 24 घंटे लगातार काम, हमेशा मेहमान को खुश रखने की चाहत तथा अत्याधिक कार्य से ज्यादतर प्रोफेशनल तनाव में रहते हैं। अगर समय रहते इसको नियंत्रित न किया गया तो लगातार तनाव की स्थिति मस्तिष्क की कोशिकाओं और हिप्पोकैम्पस को नष्ट कर देगी। तनाव के कारण ब्लडप्रेशर और ब्लड कोलेस्ट्रॉल का स्तर बढ़ जाता है। हृदय रोगों की आशंका 15–20 प्रतिशत बढ़

* व्याख्यता, होटल प्रबन्ध संस्थान, हाजीपुर (बिहार)

जाती है। इसके अलावा मोटापा भी बढ़ता है अगर कोलेस्ट्रॉल का स्तर सामान्य से थोड़ा सा भी अधिक होता है तो हृदय रोगों का खतरा बढ़ जाता है। अगर एक दशक तक शरीर में कोलेस्ट्रॉल का स्तर अधिक होता है तो हृदय रोगों की आशंका 29 प्रतिशत बढ़ जाती है। रक्त में कोलेस्ट्रॉल की अधिक मात्रा से धीरे धीरे रक्त वाहिनियों में वसीय पदार्थ जम जाता है जो आपके हृदय में ही नहीं, मस्तिष्क तक रक्त के प्रवाह को अवरूद्ध करता है।

- **मोटापा**:— मोटापे से आपके शरीर के उत्तकों को अधिक मात्रा में ऑक्सीजन और रक्त की आवश्यकता होगी और जितना ज्यादा शरीर की धमनियों से रक्त का परिसंचरण होगा उतना ही उनकी दीवारों पर दबाव अधिक पड़ेगा। रक्तदाब अधिक होने से हृदय को शरीर में रक्त के प्रवाह के लिए अधिक मेहनत करनी पड़ती है। इससे हृदय का आकार बड़ा हो सकता है। मांसपेशियॉं कमजोर हो सकती हैं एवं रक्त नलिकाओं में वसा के जमा होने की आशंका बढ़ जाती है जिससे कई तरह के हृदय रोगों की आशंका कई गुणा बढ़ जाती है।

यह तो सच है कि होटल व्यवसाय क्षेत्र में लंबी अवधि तक कार्य करना पड़ता है। अपनी परिवारिक, सामाजिक तथा निजी जीवन के जिम्मेदारियों को दरकिनार कर व्यवसायिक जिम्मेदारियों को प्राथमिकता देनी होती है और हमारी व्यवसायिक जिम्मेदारियों की वजह से कई बाद हम अपनी स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह हो जाते हैं।

यह बात भी शत प्रतिशत सत्य है कि जो लोग अपनी युवा अवस्था से अपनी सेहत का बेहतर तरीके से घ्यान रखते हैं, आगे चलकर उनमें मानसिक समस्याएँ कम देखने को मिलती हैं। इसके लिए हमें निम्नलिखित बातों का घ्यान रखना चाहिए।

- **संतुलित भोजन ग्रहण करे**:— हमें कोशिश करनी चाहिए कि हम पौष्टिक और संतुलित भोजन खायें। दिन में तीन बार भरपूर भोजन की जगह छह बार संतुलित एवं कम मात्रा में भोजन करें। प्रतिदिन पॉंच प्रकार के फल और सब्जियों का सेवन करें। वसा रहित दूध एवं इसके उत्पादों का सेवन, साबुत अनाज वाला खाना, सलाद आदि का प्रयोग ज्यादा से ज्यादा करना स्वस्थ्य रहने मे लाभप्रद होता है। लाल मांस का सेवन कम से कम करना चाहिए।

- **व्यायाम करें**:— शरीर को स्वस्थ रखने के लिए कम से कम प्रतिदिन आध घंटा टहलना, व्यायाम अथवा योग करना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है।

- **वजन नियंत्रित रखें**:— हम जो भी भोजन के रूप में ग्रहण करते हैं उसका सीधा असर हमारे वजन पर पड़ता है अतः अपनी उम्र और लंबाई के अनूरूप अपना वजन भी बनाये रखना चाहिए।

''हर मनुष्य अपने स्वास्थ्य का लेखक होता है'' — भगवान गौतम बुद्ध

मौलिक व अप्रकाशित कहानी

भूकम्प

–सुशांत सुप्रिय

"समय के विराट वितान में मनुष्य एक क्षुद्र इकाई है।" ... अज्ञात।

ध्वस्त मकानों के मलबों में हमें एक छेद में से वह दबी हुई लड़की दिखी। जब खोजी कुत्तों ने उसे ढूंढ़ निकाला तब भुवन हाथ में माइक और मैं अपना कैमरा लिए खोजी दल के साथ ही थे। धूल–मिट्‌टी से सने उस लड़की के चेहरे को उसकी विस्फारित आँखें दारुण बना रही थीं। चारों ओर मलबे में दबी सड़ रही लाशों की दुर्गंध फैली हुई थी। ऊपर हवा में कुछ गिद्ध भी मंडराने लगे थे। मलबे में दबे–कुचले लोगों की कराहों और चीत्कारों से पूरा माहौल ग़मगीन हो गया था। इस सब के बीच दस–ग्यारह साल की वह लड़की जैसे जीवन की डोर पकड़े मृत्यु से संघर्ष कर रही थी। उसके दोनों पैर शायद भारी मलबे के नीचे दबे हुए थे। वह दर्द से बेहाल थी। एक बड़े–से छेद में से टीवी कैमरे उसकी त्रासद छवि पूरे देश में प्रसारित कर रहे थे और ठीक उस बड़े–से छेद के ऊपर भुवन मुस्तैदी से मौजूद था – उस लड़की से बातें करते हुए, उसे हौसला देता हुआ।

दिसम्बर की उस आधी रात में अचानक एक भीषण गड़गड़ाहट हुई थी। भूकम्प के झटके इतने तेज़ थे कि राज्य के दूर–दराज़ के उस पहाड़ी शहर की सभी इमारतें भड़भड़ा कर गिर गई थीं। सोए हुए लोगों को उठने और बचने का कोई मौक़ा ही नहीं मिला।

*संप्रति: लोक सभा सचिवालय में अधिकारी

सैकड़ों लोग कंक्रीट के टनों मलबे के नीचे दब गए थे। केन्द्रीय स्तर पर इस भूकम्प के भयावह झटके को रिक्टर स्केल 8.4 के पैमाने पर मापा गया था। यह एक विनाशकारी भूकम्प था जिसने पूरे इलाक़े को तबाह कर दिया था।

इस भयानक घटना की सूचना मिलते ही एकदम भोर में भुवन को बॉस का फ़ोन आया था कि वह हादसे वाले क्षेत्र के लिए फ़ौरन निकल जाए। हमारे टेलिविज़न चैनल वालों ने तुरत–फुरत एक हेलिकॉप्टर का बंदोबस्त कर दिया था। भुवन ने मुझे फ़ोन किया और तुरंत ही साथ चलने के लिए कहा। मैं उसका सहयोगी हूं। हमने कई आपात स्थितियों को साथ–साथ कवर किया है। भुवन का फ़ोन आते ही मैंने फटाफट काम का ज़रूरी सामान एक बैग में डाला और हेलीपैड पर पहुँच गया। हम दोनों तत्काल हेलिकॉप्टर में बैठ कर घटना–स्थल के लिए रवाना हो गए।

वहां पहुंचने वाले पहले पत्रकार हम ही थे। बाक़ी पत्रकार साइकिलों, जीपों और बसों के सहारे वहां पहुंचने का प्रयास कर रहे थे, जबकि हमारे हेलिकॉप्टर ने हमें ठीक घटना–स्थल पर ही उतार दिया था। वहां पहुंचते ही हम भूकम्प से होने वाली उस त्रासदी की भयावह तस्वीरें उपग्रह के माध्यम से वापस टीवी स्टेशन में बीम करने लगे थे। बिलखते हुए बच्चे, चीख़ते–कराहते घायल, मलबे में दबी सड़ रही लाशें – इन सभी छवियों के साथ भुवन की संयत आवाज़ देश भर में प्रसारित हो रही थी।

हम दोनों ने कई युद्धों और दुर्घटनाओं को साथ–साथ कवर किया था, चाहे वह कारगिल का युद्ध था या केदारनाथ, उत्तराखंड में आई भीषण तबाही। बड़े–से–बड़े हादसों के बीच भी मैंने कभी भुवन को विचलित होते नहीं देखा था। रिपोर्टिंग करते हुए वह हर ख़तरे, हर त्रासदी का सामना सधे हाथों से माइक पकड़े हुए सधी आवाज़ में करता था। मुझे लगता था कि कोई भी भयावहता उसे हिला नहीं सकी थी। शायद माइक और कैमरे के लेंस का उस पर गहरा प्रभाव पड़ता था – तब वह खुद को हादसे से अलग रखते हुए सारी घटना को तटस्थ भाव से देख पाता था। अलगाव की यह दूरी ही उसे भावनाओं की बाढ़ में बहने से बचाए रखती थी।

भुवन शुरू से ही मलबे के नीचे दबी उस लड़की को बचाने के प्रयास में जुट गया। उसने उस ध्वस्त इमारत के आस–पास की फ़िल्म बनवाई और फिर स्लो–मोशन में कैमरे को उस बड़े से छेद में डाल कर उस सहमी हुई लड़की पर ज़ूम करवा दिया। उसका धूल–मिट्टी से सना चेहरा, उसकी क़तार आँखें, उसके उलझे हुए बाल – सब कुछ भुवन की सधी हुई आवाज़ में हो रही कमेंट्री के साथ टीवी पर प्रसारित हो रहा था। भुवन ने उसे एक 'बहादुर लड़की' की संज्ञा दी जो अपनी जिजीविषा के सहारे विकट परिस्थितियों से जूझ रही थी। बचावकर्मियों ने उस छेद में से नीचे उस लड़की के पास एक मज़बूत रस्सी फेंकी, तब लड़की ने सबकी शंका को पुष्ट करते हुए बताया कि उसके दोनों पैर भारी मलबे के नीचे दबे हुए थे और वह खुद से बाहर नहीं निकल सकती थी। अब भारी क्रेन के आने की लम्बी प्रतीक्षा शुरू हुई – वह क्रेन जो मलबा हटा कर उस लड़की को सुरक्षित निकाल पाती।

वहां हमारा यह पहला दिन था और शाम घिरने लगी थी। साथ ही ठंड बढ़ने लगी थी। भुवन ने अपना जैकेट उतार कर नीचे फँसी ठंड से ठिठुरती लड़की को पहनने के लिए दे दिया। आस–पास फँसी सड़ रही लाशों में से सड़ांध बढ़ने लगी थी।

''बेटा, तुम्हारा नाम क्या है? '' भुवन ने कोमल स्वर में पूछा था। जवाब में उस लड़की ने कमज़ोर–सी आवाज़ में कहा थाए 'मीता'। भुवन लगातार उससे बातें कर रहा था, उसे दिलासा दे रहा था। "हम तुम्हें बचा लेंगे, मीता। कल बड़ी क्रेन आ जाएगी जो सारा मलबा हटा कर तुम्हें बाहर निकाल लेगी।"

एक डॉक्टर आ कर लड़की के लिए दर्द की दवाई दे गया था। मीता के खाने के लिए थोड़ा दूध और ब्रेड ऊपर छेद में से नीचे भेजा गया था। उसका ध्यान बँटाने के लिए भुवन उससे बातें करता रहा, उसे कहानियां सुनाता रहा। बातों–ही–बातों में मीता ने उसे बताया कि इसी मलबे में आस–पास कहीं उसके माता–पिता और भाई–बहन भी दबे हुए हैं। पता नहीं वे सब अब जीवित होंगे या नहीं। भुवन लगातार उसका हौसला बढ़ा रहा था। लेकिन पहली बार मैंने उसकी आवाज़ को भर्राया हुआ पाया। जैसे इस बार इस त्रासदी के सामने वह तटस्थ नहीं रह पा रहा था। जैसे इस भूकम्प की वजह से उसके भीतर भी कहीं कुछ दरक गया था, ढह गया था। फिर भी वह बड़ी शिद्दत से मीता का जीवन बचाने का भरपूर प्रयास कर रहा था।

अचानक मुझे दस साल पहले घटी वह त्रासद घटना याद आ गई जब इसी उम्र की भुवन की अपनी बेटी नेहा एक सड़क–दुर्घटना का शिकार हो गई थी। बुरी तरह घायल नेहा को गोद में उठाए भुवन पास के अस्पताल की ओर भागा था। पर डॉक्टर नेहा को नहीं बचा पाए थे। इस सदमे से उबरने में भुवन को कई महीने लग गए थे। मुझे लगा जैसे मलबे में फँसी इस लड़की मीता में भुवन अपनी बेटी नेहा की छवि देख रहा था ...

अगली सुबह और पूरा दिन भुवन राज्य की राजधानी में अलग–अलग अधिकारियों को फ़ोन करके भारी मलबा हटाने वाली बड़ी क्रेन को घटना–स्थल पर तुरंत भेजे जाने की माँग करता रहा। दूसरे दिन की शाम तक उसकी आवाज़ टूटने लगी थी और उसके हाथ काँपने लगे थे। अब मैंने माइक और कैमरा – दोनों का दायित्व सँभाल लिया थाए जबकि भुवन लगातार इधर–उधर फ़ोन कर रहा था और मीता का ध्यान रख रहा था।

उसी शाम केंद्र के गृह–मंत्री प्रदेश के गृह–मंत्री के साथ घटना–स्थल पर किए जा रहे राहत कार्यों तथा पीड़ितों को देखने आ गए। उनके साथ सरकारी अमले का पूरा ताम–झाम मौजूद था। टेलिविज़न कैमरों की रोशनी की चकाचौंध में दोनों मंत्रियों ने उस बड़े से छेद में से मीता से बात की और उसे आश्वस्त किया कि उसे बचा लिया जाएगा। उन्होंने राहत और बचाव–कर्मियों की भूरि–भूरि प्रशंसा की जो जी–जान से लोगों को बचाने के काम में लगे हुए थे। भुवन ने दोनों मंत्रियों से भी भारी मलबा हटाने वाली बड़ी क्रेन को यहाँ तुरंत भेजने की गुहार लगाई। दोनों मंत्रियों ने अधिकारियों से कहा कि यह काम फौरन होना चाहिए। फिर रात होने से पहले दोनों मंत्री और सारा सरकारी अमला वहाँ से लौट गया। बाक़ी टीवी कैमरे भी अन्य जगहों की स्थिति की रिपोर्टिंग करने के लिए इधर–उधर चले गए। उस लड़की के पास अब केवल भुवन और मैं बचे थे। भुवन ने उसे खाने के लिए बिस्कुट दिए, लेकिन उसकी हालत अब बिगड़ रही थी। शायद उसकी दबी–कुचली टाँगों में इन्फ़ेक्शन की वजह से उसे तेज़ बुखार हो गया था। वह जो कुछ भी खा रही थी उसको उल्टी हो जाती थी।

भुवन ने एक डॉक्टर से लेकर मीता को बुखार उतारने और उल्टी रोकने वाली दवाइयाँ नीचे भेजीं।

वह अब भी किसी तरह उम्मीद का उजला दामन थामे हुए था। सोच रहा था कि कल तक बड़ी क्रेन ज़रूर आ जाएगी और किसी तरह भारी मलबा हटा कर मीता को बचा लिया जाएगा।

वह एक बहुत लम्बी रात थी जो बड़ी मुश्किल से कटी थी।

सुबह होते ही भुवन एक बार फिर हर रसूख़ वाले जानकार को फ़ोन करके उससे एक अदद बड़ी क्रेन घटना–स्थल पर भेजने का आग्रह करता रहा। किंतु अब उसके स्वर में एक याचक का भाव आ गया था। जैसे वह क्रेन भेजे जाने के लिए गिड़गिड़ा रहा हो। टीवी कैमरे वाले अब भी मलबे में इधर–उधर फँसे हुए दूसरे लोगों की रिपोर्टिंग करने में व्यस्त थे। डॉक्टरों की टोली स्ट्रेचर पर लगातार लाए जा रहे घायलों का उपचार करने में लगी हुई थी। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्था के कर्मचारी और अधिकारी खोजी कुत्तों के साथ चारों ओर घूम रहे थे। महामारी से बचने के लिए निकाली गई लाशों का कुछ ही दूरी पर सामूहिक दाह–संस्कार किया जा रहा था।

उस बड़े–से छेद के नीचे मलबे में फँसी उस दस–ग्यारह साल की बच्ची मीता को जैसे राम–भरोसे छोड़ दिया गया था। वह अब तेज़ बुखार में काँप रही थी। वह इतनी क्षीण लग रही थी कि मुझे भी पहली बार लगा कि शायद उसके लिए अब देर हो चुकी थी। लेकिन भुवन अब भी उम्मीद का सिरा थामे यहां–वहां फ़ोन कर रहा था। बीच–बीच में वह मीता को आश्वस्त भी कर रहा था कि आज उसे ज़रूर बचा लिया जाएगा। हालांकि मैं देख सकता था कि इस आश्वासन पर मीता का भरोसा भी अब उठता जा रहा था। इस बीच इलाक़े का एक पुजारी भी वहां आया, जिसने मलबे में फँसी उस लड़की की जान बचाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की और राहत दल की ओर चला गया।

दोपहर बाद बारिश शुरू हो गई। बारिश की वजह से ठंड और बढ़ गई थी। वह इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक के किसी दिसम्बर का उदास, धूसर दिन था। मलबे की क़ब्रगाह में हमारे सामने एक लड़की का जीवन धीरे–धीरे ख़त्म हो रहा था और हम कुछ नहीं कर पा रहे थे। लोग अपने–अपने ड्राइंग और बेड–रूम में गप्पें मारते या खाना खाते हुए टीवी पर इस हादसे के 'लाइव' दृश्य देख रहे थे। मीता का दारुण चेहरा

ज़ूम हो कर राज्य और देश के कोने–कोने के घरों में पहुँच रहा था। हर टीवी चैनल इस 'बहादुर लड़की' की जिजीविषा को प्रेरणादायी बता रहा था। पर मीता का जीवन बचाने के लिए एक अदद बड़ी क्रेन का बंदोबस्त कोई नहीं कर पा रहा था। सरकार के अधिकारी अपनी लाचारी जता रहे थे कि भूकम्प की वजह से रास्ते क्षतिग्रस्त हो गए थे। इसलिए क्रेन के घटना–स्थल पर पहुँचने में देरी की बात की जा रही थी। उम्मीद जताई जा रही थी कि समय रहते क्रेन वहां पहुंच जाएगी और मीता को बचा लिया जाएगा।

देखते–ही–देखते तीसरे दिन की शाम भी आ गई। लेकिन छोटी–बड़ी किसी क्रेन का कोई अता–पता नहीं था। भुवन के लिए खुद से भाग सकना अब असम्भव हो गया था। क्या पुरानी स्मृतियों की धुँध उसे बदहवास कर रही थी? क्या उसका अतीत उसके वर्तमान का द्वार खटखटा रहा था? इस बीच ख़बर आई कि राज्य में एक हफ़्ते के सरकारी शोक की घोषणा कर दी गई थी। सभी सरकारी भवनों पर राष्ट्रीय ध्वज झुका दिया गया था। एक अनुमान के अनुसार इस भूकम्प की वजह से पूरे इलाक़े में लगभग दस हज़ार लोग मारे गए थे। जगह–जगह मृतकों की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना–सभाएं आयोजित की जा रही थीं।

मुझे लगा जैसे भुवन के लिए मीता और नेहा के चेहरे आपस में गड्ड–मड्ड हो गए थे। उसके ज़हन में मौजूद अपनी बेटी की अकाल–मृत्यु का भर रहा पुराना घाव जैसे फिर से हरा हो गया था। उस लड़की ने भुवन के अंतस के बरसों से शुष्क पड़े कोनों को फिर से आर्द्र कर दिया था। वे सूख चुके कोने जिन्हें वह खुद भी भूल गया था। मुझे लगा जैसे जीवन के दूसरी ओर से मैं असहाय–सा भुवन और मीता पर नज़र रखे हुआ था।

चौथे दिन बड़ी क्रेन आ गई। पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। पिछली रात ही जीवन मीता का साथ छोड़ गया था। जब उसका शव मलबे में से निकाला गया तब सबकी आँखें नम हो गई थीं। भुवन बहुत देर तक मीता के शव को गोद में लिए हतप्रभ बैठा रहा। इस भूकम्प में उसके भीतर भी बहुत कुछ भयावह रूप से तबाह हो गया था। उसके मन का बाँध टूट चुका था। मीता की अंत्येष्टि के समय वह बच्चों की तरह फूट–फूट कर रोया। उसके लिए मीता कीचड़ में धँसा वह अधखिला नीला कमल थी जो असमय मुरझा गया ...

हम वापस राजधानी लौट आए है। पर अब भुवन पहले जैसा नहीं रहा। वह उदास, गुमसुम और खोया हुआ लगता है। अक्सर हम साथ बैठ कर मीता के वे वीडियो देखते हैं जो हमने शूट किए थे। जैसे हम आइने में खुद को नंगा देख रहे हों। क्या हमसे कहीं कोई ग़लती हो गई थी ? क्या हम किसी तरह मीता को बचा सकते थे ? भुवन मेरा सहयोगी ही नहीं, मेरा अच्छा मित्र भी है। अब वह न ज़्यादा बातें करता है, न कोई गीत गुनगुनाता है। अक्सर अकेला बैठा शून्य में ताकता रहता है, जैसे दूर कहीं खो गया हो।

लेकिन मैं जानता हूँ कि अपनी इस भीतरी यात्रा के बाद भुवन लौटेगा। गहरे घावों को भरनेमें समय लगता है। मुझे यक़ीन है कि जब उसके दु:स्वप्न उसका पीछा छोड़ देंगे , तब सब

कुछ पहले जैसा हो जाएगा। हर भूकम्प के बाद पुनर्निर्माण होता है और इस भूकम्प के बाद भी ज़रूर होगा।

ए–5001, गौड़ ग्रीन सिटी, वैभव खंड, इंदिरापुरम, ग़ाज़ियाबाद – 201014 (उ.प्र.) मो : 8512070086
ई–मेल : sushant1968@gmail.com

एडवेंचर, पुरातत्व और आध्यात्मिकता

बेलुम की गुफाएं

–मोहन सिंह

बेलुम की गुफाएं :

आपने पर्वतों और पहाड़ियों में तो गुफाएं देखी होंगी और अधिकतर लोगों ने उनमें प्रवेश भी किया होगा। लेकिन क्या आपने धरती के नीचे अंदर कोई गुफा देखी? शायद नहीं, तो आइए आज हम आपको ऐसी गुफाओं में ले चलते हैं। यह एक ऐसा पयर्टन स्थल है जहां आप एडवेंचर, पुरातत्व और विज्ञान के साथ आध्यात्मिकता का भी अनुभव कर सकेंगे। बेलम गुफाओं में प्रवेश कर लोग प्रकृति की इस अद्भूत संरचना से निश्चित रूप से प्रभावित होते हैं। अहोबिलम से 82 कि.मी., नंदियाल से 70 कि.मी. और महानंदीश्वर से 95 कि.मी. दूर, आंध्रप्रदेश में ऐसी गुफाएं हैं जिसके बारे में कहा जाता है कि इसमें कभी पातालगंगा बहती है।

आंध्र प्रदेश के कुर्नूल जिले में स्थित पर्यटन स्थलों के बारे में आपने अभी तक यझंति, नवनंदलू और नवनरसिंहम के बारे में पढ़ा। इस अंतिम कड़ी में प्रस्तुत है बेलुम की अद्भूत गुफाओं के बारे में जो धरती से 150 मीटर नीचे है और कहा जाता है कि यहां पाताल गंगा बहती है। –सम्पादक

* कंसल्टेंट तथा अतुल्य भारत पत्रिका के प्रबंध–सम्पादक, पर्यटन मंत्रालय

कुरनूल जिले में नंदियाल और ताड़िपत्री के बीच स्थित यह गुफाएं लगभग 3229 मीटर लंबी हैं इन गुफाओं में लंबे मार्ग, विशाल कक्ष, ताजे पानी की नालियां* water galleries *हैं। गुफाओं का तल प्रवेश द्वार से 150 फीट नीचे हैं। भूवैज्ञानिकों का मानना है कि हजारों साल पहले चित्रावती नदी के तलक्षेत्र में जमा चूने-पत्थर में कटाव के कारण गुफाओं का गठन हुआ होगा। अब चित्रावती नदी यहां से लगभग 30 कि.मी. दूर दक्षिण में बहती है।

बेलुम गुफाओं के बाहर इनके प्रतीक के रूप में आंध्र प्रदेश पर्यटन विकास निगम द्वारा यहां ध्यानमुद्रा में महात्मा बुद्ध की 40 फीट ऊंची प्रतिमा स्थापित की गई है।

बेलुम गुफाएं भारतीय उपमहाद्वीप में दूसरी बड़ी और मैदानी क्षेत्र में सबसे लंबी प्राकृतिक रूप से बनी भूमिगत गुफाएं हैं, जो कि इसके स्टैलाटाइट यानि चूना मिले जल के टपकाव से गुफा की छत में प्राकृतिक रूप से बनी आकृतियों के लिए जानी जाती हैं।

बेलुम गुफाओं का नाम संस्कृत शब्द "बिलुम" से पड़ा है। स्थानीय लोग इसे तेलुगू में 'बेल्म गुहला' के नाम से जानते हैं। इन गुफाओं की लंबाई लगभग 3229 मीटर बताई जाती है। वैज्ञानिकों के अनुसार यह गुफाएं भूमिगत जल के निरंतर प्रवाह से बनी हैं। इन गुफाओं की गहराई 150 फीट है।

गुफा के अंदर..

बेलुम गुफाओं में चूना पत्थर से बनी 'रॉक फॉर्मेशन' में अनेक विशेषताएं लिए अद्‌भूत कृतियां

पातालगंगा

गुफा में एक गलियारा

देख सकते हैं। गुफा में माया मंदिर, ऋषि शैया, वटवृक्ष दालान के साथ ही रहस्यमयी पातालगंगा और उसमें बहता स्वच्छ जल देख सकते हैं। ध्यान कक्ष में बनी कुछ दिलचस्प संरचनाएं हैं जैसे कि प्राकृतिक रूप से बनी सफ़ेद पत्थर की कई झुकावदार चट्टानें, जो देखने में एक तकिए के साथ एक बिस्तर की तरह दिखती हैं। संभवतः सन्यासियों द्वारा सोने के लिए इनका उपयोग किया जाता होगा। यहां पर सबसे दिलचस्प सप्तशवराला गुहा यानि सात कक्षों की गुफा की संरचना है।

यहां प्राकृतिक रूप से बनी अनेक जटिल संरचनाएं पर्यटकों को लुभाती हैं। प्रकृति द्वारा बनाई लुभावनी मूर्तियों में सिम्हद्वारम (एक आर्क–जिसमें स्टैलाटाइट्स शेर के सिर की तरह दिखते हैं), कोटिंगलु (जिसमें छत पर सैकड़ों शिवलिंगों के सदृश्य आकृतियां दिखती हैं), वोदलामरि (बरगद के वृक्ष की आकृति) और हजारों नागों के फण के सामन आकृति में बनी संरचनाएं हैं।

गहरी और रहस्यमयी बेलुम गुफाओं की गहराई में एक बारहमासी भूमिगत धारा है जो गुफाओं में सबसे निचले बिंदु पर एक प्राकृतिक झरना (जमीन स्तर से नीचे 150 फीट) बनाती है। इसे पातालगंगा कहा जाता है, यह रहस्यमयी धारा पृथ्वी की गहराई में गायब होने से पहले थोड़ी दूर तक चिकनी तथा फिसलन वाली चट्टानों पर लगभग 10 फुट तक बहती दिखाई देती है और फिर लुप्त हो जाती है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि इसका पानी कहां जाता है यह अभी तक एक रहस्य बना हुआ हैं।

भूगर्भ विज्ञान के अलावा पुरातात्विक दृष्टि से भी इन गुफाओं का महत्व है। इन गुफाओं में जैन और बौद्ध भिक्षुओं द्वारा तपस्या करने के प्रमाणों के साथ जैन तथा बौद्ध काल के कुछ बहुत ही अनोखे अवशेष मिले थे। जिन्हें अब अनंतपुर के म्यूजियम में सुरक्षित रखा गया है। साक्ष्यों के अनुसार, उस काल में ध्यान–तपस्या करने के लिए यह गुफाएं भिक्षुओं में बेहद लोकप्रिय थीं। सदियों पहले, जैन और बौद्ध भिक्षुओं ने इन गुफाओं में बनी एक भूलभुलैया में ध्यान–तपस्या की थी। उनके द्वारा इस्तेमाल किए गए बर्तनों आदि के अवशेष अनंतपुर के संग्रहालय में रखे गए हैं।

संरचना ...

भूवैज्ञानिकों का मत है कि चूंकि दक्षिणी भारत का अधिकतर भाग पथरीला है इसलिए हजारों साल पहले इस क्षेत्र में धरती के नीचे पानी का वेग प्रभावशाली रूप से तीव्र रहा होगा, जिस कारण यह गुफाएं बनी होगी। इस क्षेत्र में डेढ़ से दो किलोमीटर की समानांतर दूरी पर तीन बड़े कुएं बने हैं जिन्हे गुफा का द्वार माना जाता है। इनमें से बीच वाले द्वार को

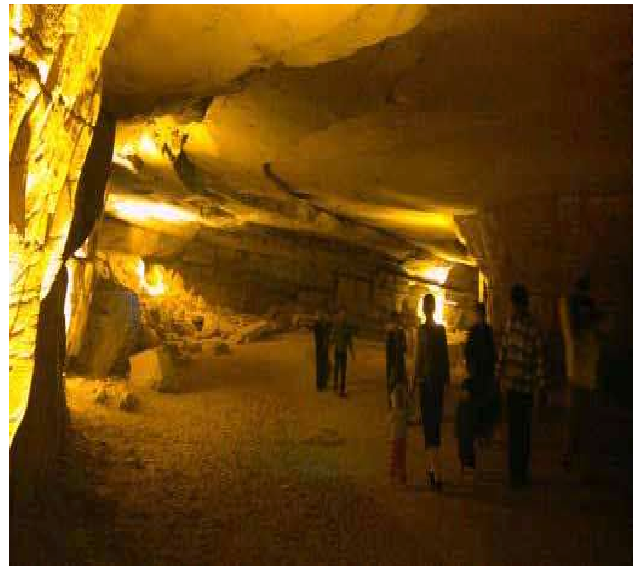

गुफा के भीतर का दृश्य

पर्यटक प्रवेश द्वार बनाया गया है।

बेलुम गुफाएं बेलम गांव के समतल मैदानी कृषि क्षेत्र में स्थित हैं। यहां कुछ कुछ दूरी पर तीन कूंए बने हैं। स्थानीय लोग इन्हें गुफाओं का प्रवेश द्वार मानते हैं तथा इस क्षेत्र में और भी कई गुफाएं होने की बात करते हैं। इस पर अभी खोजबीन चल रही है।

कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि हजारों साल पहले चित्रावती नदी क्षेत्र में चूना पत्थर और पानी के बीच कार्बनिक एसिड की प्रतिक्रिया के कारण अम्लीय भूजल का गठन हुआ होगा जिससे यह गुफाएं बनी होंगी। इस क्षरण प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप ही गुफा की दीवारें बहुत चिकनी हैं। भूमिगत गुफा में एक भूलभुलैया का होना इस बात का प्रमाण हो सकता है कि कहीं यह चित्रावती नदी का तल ही रहा होगा। वर्तमान में चित्रावती नदी बेलुम से लगभग 30 कि.मी. दूर दक्षिण की ओर चली गई है।

खोज ...

1884 में रॉबर्ट ब्रूस फ्रुटे ने, जो एक भूवैज्ञानिक एवं पुरातत्वविद् थे और भारत में सर्वेक्षण का कार्य कर रहे थे, अपनी रिपोर्ट में इन गुफाओं का पहली बार उल्लेख किया था। उसके बाद लगभग एक सदी तक बेलुम गुफाओं की ओर किसी का ध्यान नहीं गया। काफी बड़े समय से इसके आसपास के लोगों द्वारा इन गुफाओं में कूड़ा करकट डाला जा रहा था।

इसी दौरान इस क्षेत्र के मूल निवासी और सेवानिवृत्त एडीशनल सुपरिंटेंडेंट एम. नारायण रेड्डी और डॉ. बी. चलपति रेड्डी ने बेलम गांव के निवासियों के साथ मिल कर आंध्र प्रदेश सरकार के साथ इस मामले को उठाया और एक लम्बी लिखा–पढ़ी तथा संघर्ष के बाद अच्छे परिणाम सामने आए और सरकार इनका विस्तृत सर्वेक्षण कराने के लिए तैयार हो गई।

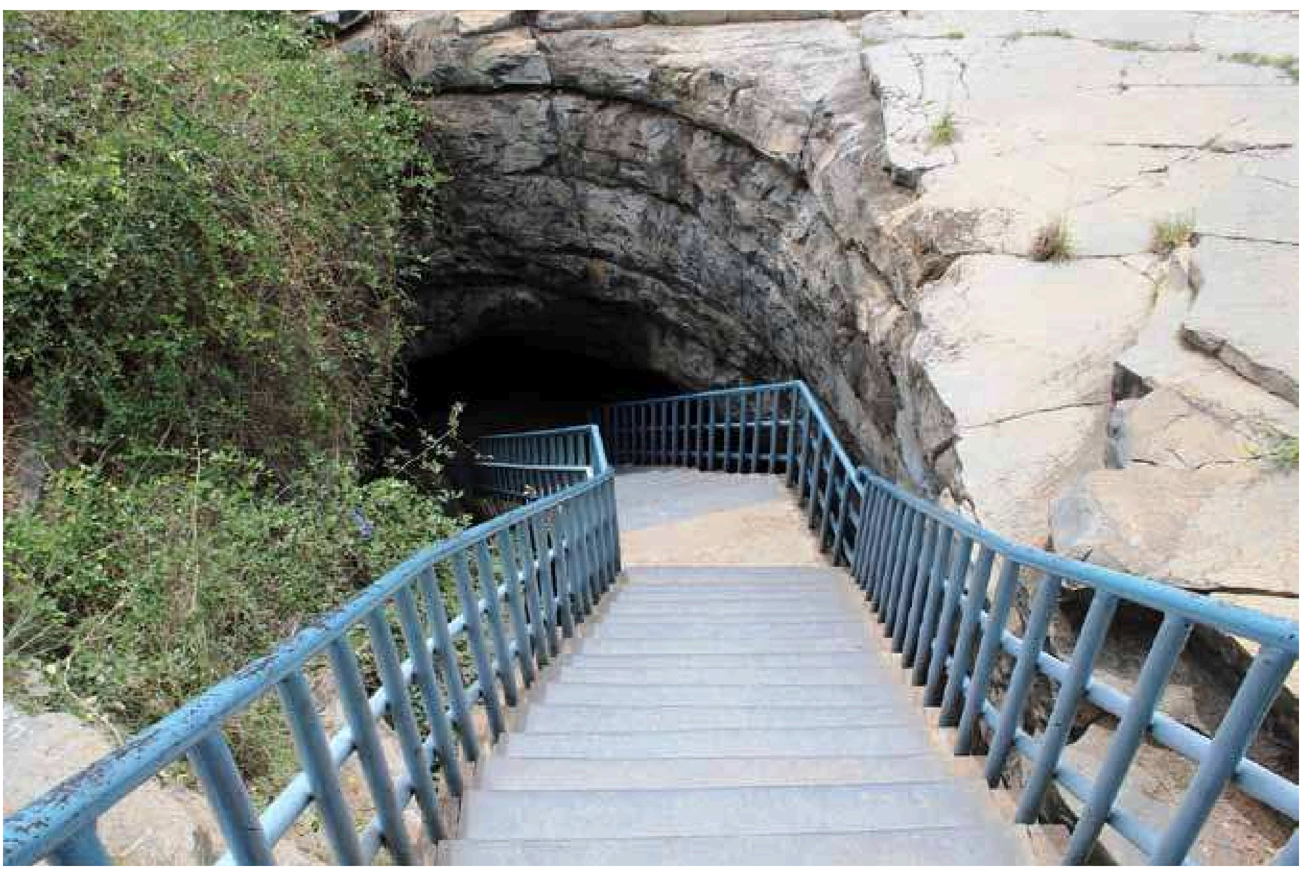

प्रवेश द्वार

जिबॉयर हॉल

इसके बाद श्री हरबर्ट डैनियल जिबॉयर की अध्यक्षता में एक जर्मन टीम ने 1982–1983 में स्थानीय लोगों की मदद लेकर इन गुफाओं का विस्तृत अन्वेषण कर इनकी साढ़े तीन कि.मी. लम्बाई का पता लगाया और इन्हें पूरी तरह से सुरक्षित पाए जाने के बाद, इनके पुनरोद्धार का कार्य आम्भ किया गया। आंध्र प्रदेश सरकार ने वर्ष 1988 में इस क्षेत्र को संरक्षित क्षेत्र घोषित कर पर्यटन आकर्षण के रूप में विकसित करने की घोषणा की। आखिरकार 1989 में, आंध्र प्रदेश पर्यटन विकास निगम (एपीटीडीसी) को पर्यटक आकर्षण के रूप में इन गुफाओं का विकास करने तथा उनकी देखभाल करने का कार्य सौंपा गया। अंततः निगम द्वारा फरवरी, 2003 में केवल 1.5 कि.मी. का गुफास्थल जनता और पर्यटकों के लिए खोल दिया गया है।

बेलुम में काले चूने के पत्थर की 16 गुफाएं हैं। निगम ने गुफाओं में करीब दो कि.मी. लंबे रास्ते तैयार किए हैं और इनमें कृत्रिम रोशनी के साथ–साथ गुफाओं में ताजा हवा के लिए शाफ्ट बनाए हैं। निगम ने गुफाओं में पहुंच आसान करने के लिए रास्ते और सीढ़ीनुमा पुल बनाए हैं तथा प्रवेश द्वार के पास एक सहायता कक्ष भी बनाया गया है।

प्रवेश द्वार से नीचे उतरते ही एक बड़ा हॉल बनाया गया है जिसे ''जिबॉयर हॉल'' कहा जाता है, जो इन की मैपिंग करने वाली जर्मन टीम के प्रमुख वैज्ञानिक श्री एच. डैनियल जिबॉयर के नाम पर रखा गया है। यहां पर्यटकों के बैठने की व्यवस्था की गई है।

फरवरी, 2003 से इन गुफाओं को पर्यटकों के लिए खोलने के बाद इन गुफाओं का प्रबंधन आंध्र

प्रदेश पर्यटन विकास निगम द्वारा किया जाता है। प्रति व्यक्ति 100/ – रूपए का प्रवेश टिकट लगता है। यहां गाइड की सुविधा भी उपलब्ध है। चूंकि शाम पांच बजे गुफाएं बंद कर दी जाती है, इसलिए शाम चार बजे तक ही अंतिम प्रवेश की अनुमति है।

अगर आप बेलुम गुफाएं घूमने का कार्यक्रम बना रहे हैं तो यहां कुछ उपयोगी बातें आपकी सुविधा के लिए बताई जा रही हैं।

- बेलुम गुफाओं तक पहुंचने के लिए सबसे निकटतम रेलवे स्टेशन ताड़िपत्रि है। ताड़िपत्रि जाने के लिए नई दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, हैदराबाद, कन्याकुमारी, तिरुवनंतपुरम, कोयम्बटूर आदि से प्रतिदिन रेलगाड़ियां मिलती हैं। यहां से बेलुम गुफाओं की दूरी 30 कि.मी. है और बसों के अलावा कैब मिलती हैं। इसके अलावा कुछ टूर आपरेटर भी बेलुम के लिए सेवाएं प्रदान करते हैं।

- गुफाओं के पास आंध्र प्रदेश पर्यटन विकास निगम द्वारा संचालित एक छोटे से हास्टल के अलावा ठहरने की कोई व्यवस्था नहीं है। इसके लिए भी आपको पहल से ही बुकिंग करानी होती है। ताड़ीपत्री में अच्छे बजट होटल और गेस्ट हाउस मिल जाते हैं।

- यह क्षेत्र गर्मियों में कुछ अधिक ही में गर्म होता है, इसलिए सर्दियों में यात्रा करना सबसे अच्छा है। यदि आप गर्मियों में गुफाओं की यात्रा करने की योजना बना रहे हैं, तो अपने साथ तौलिया और पर्याप्त पेयजल लेकर जाएं।

- गुफाओं की यात्रा आपको थका सकती है क्योंकि इनमें पैदल चलना, कई स्थानों पर झुकते हुए चलना और कुछ जगहों पर रेंगना भी पड़ सकता है। अतः यह सुनिश्चित कर लें कि आपके पास सही तरह के कपड़े और जूते हैं।

इन आकर्षक प्राकृतिक गुफाओं की जादुई दुनिया में घूमना, अक्सर अंधेरे में अज्ञात अंदरूनी स्थानों का अन्वेषण निश्चित रूप से एक ऐसा अविस्मरणीय अनुभव है जिसके सामने अन्य–सांसारिक खजाने भी फीके लगेंगे।

क्यों नहीं अब की बार का LTC/ LFC लेकर कुर्नूल में बेलूम की जादुई गुफाएं देखते हुए यझंती, नवनंदुलू और नवनरसिंह स्वामियों की पहाड़ियों का आनंद लिया जाए ?

ग्रामीण पर्यटन

कोकिला वन

– राजकुमार

शहर की भीड़–भाड़ भरी जिंदगी में कभी तो आपका मन करता होगा कि कहीं दूर पेडों की छांव में कुछ दूर बैठा जाए। एक ऐसा स्थान जहां आस पास खेत हों उनमें पक्षी चहचहाते हों और ज्यादा दूर भी न हो तो आप दिल्ली से लगभग 120 कि.मी. दूर कोसी कलां के कोकिला धाम में सूर्यपूत्र श्री शनिदेव जी के एक अति सुंदर मंदिर में दर्शन करने आ सकते है। मथुरा जिले में पड़ने वाला यह स्थान ग्रामीण परिवेश से सराबोर है। इसके आस–पास ही नंदगांव, बरसाना और बांके बिहारी मंदिर स्थित है।

कोकिला वन नन्दगांव से तीन मील उत्तर में स्थित है। इस सुरक्षित रमणीय वन में आज भी मयूर–मयूरी, शुक–सारी, हंस–सारस आदि विविध प्रकार के पक्षी मधुर स्वर से कलरव करते रहते हैं तथा हिरण, नीलगाय आदि पशु भी विचरते दिख जाते हैं। यहां की एक विशेषता है कि इस वन में सैकड़ों कोयल एक साथ अपने कुहू–कुहू के मीठे स्वर से वन को गुंजायमान कर देती हैं। ब्रज के अधिकांश वन नष्ट हो जाने पर भी यह वन कुछ सुरक्षित है। इस वन में शनिदेव की प्रदक्षिणा यानि परिक्रमा पौने दो कोस अर्थात तीन मील की है।

*निजी सचिव, पर्यटन मंत्रालय

कोकिला वन का यह सुंदर ग्रामीण परिसर लगभग 20 एकड़ क्षेत्र में फैला है। इसमें मुख्यतः शनि देव मंदिर है और परिसर में देवबिहारी जी, गोकुलेश्वर महादेव मंदिर, गिरिराज मंदिर और बाबा बनखंडी के मंदिर हैं। ऐसी मान्यता है कि जो लोग यहां आकर शनि महाराज के दर्शन करते हैं उन्हें शनि की दशा, ढैया या साढ़ेसती नहीं सताते हैं। शनिश्चरी अमावस्या को यहां एक विशाल मेले का आयोजन किया जाता है। प्रत्येक शनिवार को यहां पर आने वाले भक्तगण सबसे पहले शनि मंदिर की सीमा से पहले ही तीन किलो मीटर की परिक्रमा करते हैं।

शनिदेव मंदिर से लगभग एक किलो मीटर पहले ही एक पगडंडी बाई ओर मुड़ती है। यहां भोले बाबा का छोटा सा मंदिर है। यही है परिक्रमा आरंभ करने का स्थान। बाबा को प्रणाम कर भक्तजन परिक्रमा शुरू करते हैं। यहां से थोड़ा चलने पर आपको हरे भरे खेतों और पेड़ों के झुंडों के बीच से आती ठंडी हवाएं आपका स्वागत करती हैं। कुछ समय पहले तक यहां कच्चा रास्ता था लेकिन पिछले दो वर्षो से प्रशासन की ओर से पक्की सड़क का निर्माण कराया गया है। साथ थोड़ी–थोड़ी दूरी पर पेयजल की व्यवस्था भी की गई है। इस रास्ते में करीब दस छोटे–बड़े मंदिर हैं, साथ ही कुछ रेस्तरां भी बनाए गए हैं। जिनमें शाकाहारी जलपान उपलब्ध हैं। रात में रोशनी की व्यवस्था भी की गई है।

यहां भक्तजन अपनी–अपनी श्रृद्धा के अनुसार परिक्रमा करते हैं। कुछ लोग नंगे पांव तो कुछ जूते व चप्पलें पहने ही तथा कुछ दंडवत परिक्रमा भी करते है। अभी तक यहां रिक्शे, कार आदि से परिक्रमा करने की अनुमति नहीं है। इस परिक्रमा में लगभग आधे घंटे का समय लगता है। परिक्रमा उसी स्थान पर, जहां से आरंभ होती है, दाई ओर आकर समाप्त होती है।

इसके बाद श्रद्धालु सीधे ही सरोवर की ओर प्रस्थान करते हैं जहां स्नान किया जाता है। स्नान के पश्चात ही दर्शन आरंभ होते हैं। सबसे पहले बनखंडी बाबा के मंदिर में दर्शन किए जाते हैं क्योंकि बनखंडी बाबा शनि देव के गुरू थे। इसके पश्चात देवबिहारी जी, गोकुलेश्वर महादेव मंदिर और नवग्रह मंदिर में पूजा अर्चना के बाद श्री गिरिराज मंदिर में दूध एवं जलार्पण के बाद ही शनिदेव के मंदिर की ओर आते हैं। यहां काफी लंबी लाइन होती है मगर एक आध घंटे में आप शनिदेव जी के सामने पहुंचे ही जाते हैं। यहां तेल अर्पित कर शनिदेव को प्रणाम किया जाता हैं।

शनि महाराज भी श्रीकृष्ण के भक्त माने जाते है। एक कथा के अनुसार जब श्रीकृष्ण का जन्म हुआ तो सभी देवी –देवता बालक को देखने अथवा उनके दर्शन करने नंदगांव में पधारे। इनमें शनि देव भी आए थे। मगर यशोदा जी ने शनि को नंदलला दिखाने से मना कर दिया और उन्होंने अपने मन की बात को छुपाया नहीं। स्पष्ट रूप से बता दिया कि शनि की दृष्टि वक्री होती है और यह दृष्टि कान्हा पर नहीं पड़ने देंगी।

यशोदा द्वारा नंदलाला के दर्शन करने से मना करने पर शनिदेव नाराज होकर वहीं जंगल में बैठ गए और यह कहते हुए कि प्रभु आपने ही तो मुझे पापियों को दंडित करने के लिए न्यायाधीश बनाया है। अब मेरे नेत्र वक्री है तो क्या इनसे आपको भी नहीं देख सकता, शनिदेव कठोर तपस्या करने लगे अंततः उनकी तपस्या से भगवान श्रीकृष्ण द्रवित हो गए और शनि देव के सामने कोयल के रूप में दर्शन देकर कहा, हे शनिदेव, निसंदेह आप अपने कर्तव्य के प्रति समर्पित हैं और पापियों, अत्याचारियों का दमन करते हैं। इससे कर्म–परायण और धर्म–परायण सज्जन व्यक्तियों का कल्याण होता है। आपके दंड से डर कर भी बहुत से कुकर्मी सदाचारी हो जाते हैं। इस प्रकार आप उन्हें धर्म परायण बना रहे है। आप एक

सजग व बलवान पिता की तरह जगत का कल्याण करते रहिए परन्तु भक्तिरत्नाकर में कोकिलावन का अलग उल्लेख मिलता है। इस कथा के अनुसार एक समय महाकौतुकी श्रीकृष्ण की रास खेलने की इच्छा हुई राधिकाजी से मिलने के लिए बड़े उत्कण्ठित थे, लेकिन राधा अपनी सखी विशाखा के साथ न आने से, नहीं आई। किन्तु विशाखा की सास जटिला, ननद कुटिला और पति अभिमन्यु की बाधा के कारण वह इस संकेत स्थल पर नहीं आ सकी। बहुत देर तक प्रतीक्षा करने के पश्चात् कृष्ण वहाँ ऊँचे वृक्ष पर चढ़ गये और कोयल के समान एवं मधुर रूप से कूकने लगे। इस अद्भूत कोकिल के मधुर और ऊँचे स्वर को सुनकर सखियों के साथ राधिका कृष्ण के संकेत को समझ गयीं और उनसे मिलने के लिए अत्यन्त व्याकुल हो उठीं। उस समय जटिला ने विशाखा को सम्बोधित करते हुए कहा– विशाखे! मैंने कोयलों की मधुर कूक बहुत सुनी है, किन्तु आज की कूक तो अद्भूत है। विशाखा ने कहा कि वह ठीक कहती है। यदि आदेश हो तो हम इस निराली कोयल को देख आएँ। वृद्धा ने प्रसन्न होकर उन्हें जाने का आदेश दे दिया। विशाखा के साथ राधा और फिर दूसरी सखियां आ गई और श्रीकृष्ण के साथ रास खेल कर बड़ी प्रसन्न हुई।

कोकिलावन का मुख्य पर्यटन है इसकी परिक्रमा

कोकिला वन के शनि मंदिर की एक और विशेषता है कि यह मंदिर सप्ताह में केवल एक दिन खोला जाता है। शुक्रवार की रात ठीक बारह बजकर कर एक मिनट पर मंदिर के कपाट खोले जाते हैं और शनिवार संध्या आरती के बाद बंद कर दिए जाते हैं। अभी तक यहां रात्रि विश्राम आदि की कोई व्यवस्था नहीं है।

आजकल परिक्रमा स्थल पर रोशनी की अच्छी व्यवस्था है। कुछ वर्ष पहले तक पूरी परिक्रमा में रोशनी के लिए तीन चार ही खम्भे थे इसलिए ज्यादातर क्षेत्र में अंधेरा ही रहता था और आसपास कुछ जंगली जानवर भी आ जाते थे। लोग ग्रुप में टार्च जलाकर ही परिक्रमा करते थे। यहां आने वाले श्रृद्धालुओं को दो श्रेणी में बांटा जा सकता है। एक वह जो अकेले या सपरिवार शुक्रवार रात में 10 –11 बजे तक पहुंच जाते हैं और रात में ही 11.00 –11.30 बजे तक परिक्रमा शुरू कर देते हैं और 12.00 बजे तक शनि देव के मंदिर में दर्शन के लिए आ जाते हैं। ऐसे भक्तजन रात्रि में ही दर्शन कर वापस लौट जाते हैं और ऐसे भक्तों की संख्या कम ही है।

दूसरी श्रेणी में वह लोग है जो आराम से प्रातः 10 बजे तक था उसके बाद ही आते हैं, धीरे–धीरे परिक्रमा करते हुए यहां बैठ कर प्रकृति का नजारा लेते हैं और शाम को तीन–चार बजे तक वापसी करते हैं। ऐसे भक्तों की संख्या अधिक है।

भंडारे की व्यवस्था ....

दिल्ली, मथुरा, डीग और अलवर के कुछ सेवक संघ यहां भंडारा लगाते हैं। ऐसे सेवक ट्रकों या बड़े टैम्पो में सारा सामान, जिसमें गैस सिलेंडर, चूल्हे, पतीले, पत्तलें तथा भंडारे की सामग्री साथ लाते हैं। सेवक/ श्रृद्धालु प्रातः लगभग छः–सात बजे तक यहीं भंडारा तैयार कर बांटना आरंभ कर देते हैं तो कुछ दोपहर के लिए भंडारे की व्यवस्था करते हैं।

शुक्रवार आधी रात से शुरू हुई चहल–पहल शनिवार दो तीन बजे के बाद कम होने लगती है और लगभग छः बजे के बाद तो यहां एक दो भक्त ही दिखाई देते हैं।

कैसे पहुंचे। कोकिलावन जाने के लिए दिल्ली से कोसीकलां तक रेल मार्ग अथवा सड़क मार्ग से जाया जा सकता है। रेलवे स्टेशन और बस अड्डे से कोकिलावन की दूरी लगभग आठ किलो मीटर है। आप यहां से स्थानीय वाहन ले सकते हैं। आप अपने वाहन से भी जा सकते है।

आध्यात्मिक तथा पर्या–पर्यटन

शाकुम्भरी देवी मंदिर : सहारनपुर

–अनिरूद्ध सिंह

हिमालय की शिवालिक पर्वत श्रेणी में श्री माता शाकुम्भरी देवी का प्रख्यात तीर्थस्थल है। दुर्गा पुराण में वर्णित 51 शक्तिपीठों में से एक मां शाकुम्भरी का सिद्धपीठ उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में शिवालिक वन प्रभाग के आरक्षित वन क्षेत्र में स्थित है। यहां की पहाड़ियों पर पंच महादेव व भगवान विष्णु के प्राचीन मंदिर भी स्थित हैं। इस पावन तीर्थ के आसपास गौतम ऋषि की गुफा, बाण गंगा व प्रेतशिला आदि स्थल भी स्थापित हैं।

शाकुंभरी देवी का महत्व ....

यह मंदिर शक्तिपीठ है और माना जाता है कि यहां सती का शीश गिरा था। मंदिर में अंदर मुख्य प्रतिमा शाकुंभरी देवी की है और उसके दाईं ओर भीमा और भ्रामरी और बायीं ओर गर्भगृह में शाकुम्भरी, भीमा, भ्रामरी व शताक्षी देवियों की प्रतिमाएं स्थापित हैं। शताक्षी देवी को शीतला माता भी कहते है।

*ब्लॉगर, अतुल्य भारत में योगदान देते रहे हैं।

शिवालिक घाटी में मां शाकुम्भरी आदि शक्ति के रूप में विराजमान हैं। यहां साल में तीन मेले लगते हैं, जिसमें शारदीय नवरात्र मेला बहुत महत्वपूर्ण है। यहां लोगों का विश्वास है कि मां भगवती सूक्ष्म शरीर में इसी स्थान पर वास करती हैं। यह भी मान्यता है कि सिद्धपीठ पर शीश नवाने वाले भक्त सर्व सुख संपन्न हो जाते हैं। जब भक्तगण श्रृद्धा पूर्व देवी माता की आराधना करते हैं तो करुणामयी मां शाकुम्भरी स्थूल शरीर में प्रकट होकर भक्तों के कष्ट हरती हैं।

हर मास की अष्टमी व चतुर्दशी (चौदस) को श्रद्धालु यहां आते हैं। स्थान–स्थान पर भोजन बनाकर भंडारा लगाते हैं। माता के मंदिर के इर्द–गिर्द कई अन्य मंदिर भी हैं। मुख्य मंदिर से एक कि.मी. पहले भूरादेव का मंदिर है, जहां श्रद्धालु पहले पूजा– अर्चना करते हैं। मुख्य मंदिर के निकट वीर खेत के नाम से प्रसिद्ध मैदान है। इसके बारे में मान्यता है कि माता शक्ति ने यहां महासुर दुर्गम सहित कई दैत्यों का वध किया थाए तभी मां जगद्जननी दुर्गा कहलाती है। सिद्धपीठ क्षेत्र में पहाडियों पर एक ओर देवी छिन्नमस्ता व कुछ दूरी पर देवी रक्तिदंतिका के भव्य मंदिर हैं। इस पंचकोसी क्षेत्र में पांच स्वयंभू शिवलिंग हैं। मान्यता है इनके दर्शन मात्र से ही चारों धाम की यात्रा का पुण्य प्राप्त होता है।

कलकल छलछल बहती नदी की जलधारा के पार ऊंचे पहाड़ और जंगलों के बीच माता शाकुम्भरी देवी का स्थान, उत्तरप्रदेश में सहारनपुर से 42 कि.मी. और बेहटा कस्बे से 15 कि.मी दूर है। इस सिद्धपीठ में बने माता के पावन भवन में मां शाकुम्भरी देवी, भीमा देवी, भ्रामरी देवी व शताक्षी देवी स्थापित हैं। लोगों का मानना है कि मां शाकुम्भरी देवी लोगों को धनधान्य का आशीर्वाद देती हैं। इनकी अराधना करने वालों के घर हमेशा शाक यानी अन्न के भंडार से भरे रहते हैं।

इतिहास में भी शाकुम्भरी का महत्व....

सिद्धपीठ धार्मिक ही नहीं ऐतिहासिक रूप से भी महत्वपूर्ण है। कहा जाता है कि सेना का गठन करने से पूर्व चाणक्य भी चंद्रगुप्त को लेकर इस स्थान पर पूजा अर्चना कर माता का आशीर्वाद प्राप्त करने आए थे। आजकल इस सिद्धपीठ की सारी व्यवस्था जसमौर रियासत घराना करता है। इस घराने का संबंध कलिंग राज्य से बताया जाता है। इसके अनुसार शाकुम्भरी माता उनकी कुलदेवी है।

यह मंदिर शिवालिक पर्वतमाला की तलहटी में घने जंगल में नदी के किनारे पर है। भूरादेव का मंदिर एक कि.मी. पहले के पास ही में है। मंदिर तक पहुंचने के लिए शाकुम्भरी नदी से होकर रास्ता जाता है।

थोड़ा रास्ता जंगल से होकर भी है। पथरीली राहों के साथ ही बरसात के दिनों में तेज बारिश होने से नदी में पानी काफी बढ़ जाता है। इस दौरान मंदिर तक जाने में मुश्किल होती है। इसलिए बरसात के मौसम में दर्शन करने वालों को थोड़ी सावधानी बरतनी चाहिए।

हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश तथा आसपास के कुछ क्षेत्रों में शाकुम्भरी माता उनकी कुलदेवी मानी जाती है। परिवार के हर शुभकार्य के समय यहां आकर माता का आशीर्वाद प्राप्त किया जाता है। यहां आने वाले श्रद्धालु भक्तगण धनधान्य व अन्य चढ़ावे लेकर यहां मनौतियां मांगने आते हैं। उनका अटूट विश्वास है कि माता उनके परिवार को भरपूर प्यार व खुशहाली प्रदान करेंगी।

द्वारिका ज्योर्तिपीठाधीश्वर जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती महाराज का ''शंकराचार्य सिद्धपीठ आश्रम'' यहां की शोभा बढ़ाता है और मंदिर के पास श्रद्धालुओं के ठहरने व भंडारे आदि की व्यवस्था करता है। यात्रियों की सुविधा के लिए करीब 150 कमरे बने हैं। संत समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष महंत भैरवतंत्राचार्य श्री सहजानंद ब्रह्मचारी आश्रम की व्यवस्था तथा श्रद्धालुओं की सेवा–सुश्रुषा की देखरेख करते हैं। लेकिन यहां ठहरने की अनुमति शाम पांच बजे के बाद ही मिलती है।

आम तौर पर भक्तगण सवेरे 10 से 12 बजे तक पहुंच जाते हैं और देवी दर्शन के बाद आस पास के स्थानों पर घूमने के बाद चार बजे तक वापस होने लगते हैं। यदि आपको मंदिर पहुंचते समय देरी हो जाए और आपके पास अपनी वाहन व्यवस्था नहीं हो तब शाम को लौटना मुश्किल होता है क्योंकि शाम को ठीक 5.00 बजे आखरी बस चलती है और उससे पहले ही बसों में काफी भीड़ होती है। उसके बाद वहां से वापसी का कोई साधन उपलब्ध नहीं है। इसलिए आपको वहीं रुकना पड़ेगा ऐसी स्थिति में आपके लिए सिद्धपीठ आश्रम में ठहरना ही उचित होगा और अगले दिन ही वापसी हो सकेगी। यहां रूकना भी अपने आप में एक अलग ही अनुभव होता है। शाकुम्भरी के मंदिर के पास प्रसाद की दुकानें और खाने पीने से स्टाल है।

कैसे पहुंचे

आप देश में कहीं से भी रेल या बस द्वारा सहारनपुर पहुंच सकते हैं। सहारनपुर में बेहटा के बस अड्डे से 15–15 मिनट के बाद शाकुम्भरी देवी के लिए बसें मिलती हैं। 42 कि.मी. का रास्ता तय करने में लगभग डेढ घंटा लग जाता है। शाकुम्भरी देवी के बस स्टाप पर उतरने से पहले भूरादेव के दर्शन किए जाते हैं। फिर मंदिर के लिए एक कि.मी. का रास्ता पैदल तय करना पड़ता है। यदि आप अपने वाहन से जा रहे हैं तो मेरठ से खतौली, देवबंद होकर छुटमलपुर जाएं। वहां से बायीं ओर संसारपुर और बेहटा पहुंच कर शाकुम्भरी देवी के लिए जा सकते हैं। दिल्ली से शाकुम्भरी धाम की दूरी लगभग 300 कि.मी. है।

शाकुम्भरी देवी के बारे में ....

कहा जाता है कि माता शाकुम्भरी अपने भक्तों के याद करने पर अवश्य आती हैं। इस संबध में एक प्राचीन कथा का उल्लेख आता है। पौराणिक काल में दुर्गम नाम का एक असुर था। उसने घोर तपस्या से ब्रह्मा जी को प्रसन्न करके देवताओं पर विजय पाने का वरदान प्राप्त कर लिया। वर मिलते ही उसने धरती को नष्ट करने के लिए पक्षियों को मारना और वनों में आग लगानी शुरू दी। ऋषियों पर अत्याचार कर उनके आश्रमों को नष्ट करने लगा। अनेक वर्षो तक बारिश न होने के कारण अन्न–जल के अभाव में भयंकर सूखा पड़ने लगा और धरती पर जीवन समाप्त होने लगा था। दुर्गम ने ब्रह्माजी से चारों वेद चुरा लिए और वरदान के कारण एक दिन वह इंद्रलोक को विजित करने चला तो सारे देवता जंगलों में छिप गए।

ऐसे में देवता और मानव एकत्रित होकर देवी मां की स्तुति करने लगे, भक्तों की करुण पुकार सुनकर आदिशक्ति मां दुर्गा शाकंभरी देवी के रूप में माता भगवती प्रकट हुई जिनके सौ नेत्र थे। देवताओं व मानवों की दुर्दशा देख कर मां के नेत्रों से करुणा के आंसुओं की धाराएं फूट पड़ीं जिससे धरती पर जल का प्रवाह हो गया। देवी के ममतामयी नेत्रों से दयारूपी जल बहने के कारण शीघ्र ही सारी वनस्पतियां हरी भरी हो गईं। पेड़ पौधे नए पत्तों व फूलों से भर गए। इसके तुरंत बाद माता ने अपनी माया से शाक, फल, व अन्य कई खाद्य पदार्थ उत्पन्न कर दिए, जिन्हें खाकर देवताओं सहित सभी प्राणियों ने अपनी भूख–प्यास शांत की। समस्त प्र ृ ति में प्राणों का संचार होने लगा। पशु – पक्षी फिर से चहकने लगे। इसके तुरंत बाद सभी मिलकर मां का गुणगान गाने लगे। चूंकि मां ने अपने शतनेत्रों से करुणा की वर्षा थी इसलिए उन्हें शताक्षी के नाम से पुकारा गया। इसी प्रकार विभिन्न शाक–आहार उत्पन्न करने के कारण भक्तों ने माता की शाकुम्भरी अर्चना की।

भगवती माता की जय–जयकार सुनकर मां का एक परम भक्त भूरादेव भी अपने पांच साथियों चंगल, मंगल, रोड़ा, झोड़ा व माने के साथ वहां आ पहुंचा। उसने भी माता की अराधना गाई। अब मां ने देवताओं से पूछा कि वह कैसे उनका कल्याण करें? देवताओं ने माता से प्रार्थना की कि वह दुर्गम से चारों वेद वापस दिलाएं ताकि सृष्टि का संचालन सुचारु रूप से चल सके।

तभी देवताओं को ढूंढता हुए दुर्गम अपनी सेना के साथ वहां आ पहुंचा। देवताओं ने मां के नेतृत्व में राक्षसों पर आक्रमण कर दिया। युद्ध भूमि में भूरादेव और उसके साथियों ने दानवों में खलबली मचा दी। इस बीच दानवों के सेनापति शुम्भ निशुम्भ मारे गए तो रक्तबीज नामक दैत्य क्रोधित होकर विकराल रूप ध ारण कर संहार करने लगा और उसने हजारों मानवों का संहार कर दिया। उसने भूरादेव का भी वध कर दिया। रक्तबीज पर हो रहे प्रहारों से उसके शरीर से रक्त की जितनी बूंदें धरती पर गिरतीं उतने ही और राक्षस प्रकट हो जाते थे। तब मां ने महाकाली का रूप धारण कर घोर गर्जना की और युद्ध भूमि में उनकी गर्जना से धरती कम्पायमान हो उठी और असुर डर कर इधर उधर भागने लगे। मां काली ने रक्तबीज को पकड़ कर उसका सिर धड़ से अलग कर दिया और उसके रक्त को धरती पर गिरने से पूर्व ही चूस लिया। इस प्रकार रक्तबीज का अंत हो गया। अब दुर्गम की बारी थी। रक्तबीज का संहार देखकर वह युद्ध भूमि से भागने लगा लेकिन माता उसके सम्मुख प्रकट हो गई और त्रिशूल के एक ही प्रहार से वह भी यमलोक भेज दिया।

जनश्रुति यह है कि जब शेर पर सवार होकर मां रणभूमि में घूम रही थीं तब उन्हें भूरादेव का शव दिखाई दिया। मां ने संजीवनी विद्या का प्रयोग कर उसे जीवित कर दिया तथा उसकी वीरता तथा भक्ति से प्रसन्न होकर उसे वरदान दिया कि जो भी भक्त मेरे पास आएंगे वह पहले भूरादेव के दर्शन करेंगे। तभी उनकी यात्रा पूर्ण मानी जाएगी। इस प्रकार देवताओं को अभयदान देकर मां शाकुम्भरी नाम से यहीं स्थापित हो गई।

एक अन्य कथा के अनुसार शाकुम्भरा (शाकंभरी) देवी ने ऐसे निर्जन वन में जहां पर दूर दूर तक जल भी नहीं था, सौ वर्षों तक तपस्या की और उनकी तपस्या से वहां पर पेड़–पौधे उत्पन्न हो गए। साधु–संत माता का चमत्कार देखने के लिए आए और उन्हें शाकाहारी भोजन दिया गया। इस घटना के बाद से माता का नाम 'शाकंभरी माता' पड़ा।

माता के मंदिर में हर समय श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। नवरात्रों व अष्टमी के अवसर पर यहां बहुत भीड़ होती है। भक्तों का अटूट विश्वास है कि माता उनके परिवार को भरपूर प्यार व खुशहाली प्रदान करेंगी। हर मास की अष्टमी व चौदस को बसों, ट्रकों व ट्रैक्टर टालियों में भर कर श्रद्धालु यहां आते हैं।

भूरादेव का मंदिर

आज भी मां के दरबार से एक कि.मी. पहले भूरादेव का मंदिर है। जहां पहले दर्शन किये जाते हैं और उसके बाद ही माता के दर्शनों के लिए आगे जाते हैं।

यद्यपि इस मंदिर का कोई पुरातात्विक उल्लेख नहीं मिलता है। लेकिन सामान्य रूप से माना जाता है कि यह मंदिर काफी प्राचीन है। इस मंदिर की मूर्तियां बहुत प्राचीन नहीं दिखती हैं और कुछ लोगों का तो मानना है कि इन्हें मराठा काल के दौरान स्थापित किया गया था। कुछ लोगों का मानना है कि आदि शंकराचार्य ने अपनी तपस्या की थी। बहरहाल, अलग अलग मतों के होते हुए भी इस मंदिर में साल भर में हजारों श्रद्धालु दर्शन करने आते हैं।

ट्रैकिंग: यदि आप हरी भरी पहाड़ियों पर घूमने के शौकीन हैं तो यह स्थान आपके लिए एक आदर्श स्थान है। मंदिर के पीछे की पहाड़ियां आपके पैदल घूम कर यहां के फूलों से लदे पेड़ पौधों का आनंद लेने के लिए काफी हैं। परन्तु कहा जाता है कि केवल दिन में चार बजे तक ही आप यहां का आनंद ले सकते हैं क्योंकि कुछ लोगो के अनुसार यहां सियार, नेवले, साही, बिच्छू, भालू, लोमड़ी, जंगली बिल्ली, सूअर, बंदर, लंगूर आदि पाए जाते हैं। इसके अलावा कई चिकित्सा और सुगंधित पौधे भी पाए जाते हैं।

एक बार ग्रामीण पयर्टन का आनंद लेने अवश्य जाएँ

शुभकामनाएँ

इस तिमाही में सेवा निवृत्त होने वाले कार्मिक

क्र.सं.	नाम	पद	माह
1.	श्री एस.आर. मीणा, जयपुर	सहायक निदेशक	जुलाई, 2018
2.	श्री जे.बी. तंवर, नई दिल्ली	स्टाफ कार ड्राईवर	जुलाई, 2018

पर्यटन मंत्रालय से सेवा निवृत्त हुए सभी पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए उनके अच्छे स्वास्थ्य एवं सुखद जीवन की कामना करते हैं।

–अतुल्य भारत

हिंदी दिवस पर जानकारी

गर्व से कहो-हिंदी है हम

क्या आप जानते हैं:

- 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने निर्णय लिया था कि हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी। हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए वर्ष 1953 से पूरे देश में प्रति वर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है।
- दुनिया में दूसरी सबसे ज्यादा बोले जाने वाली भाषा हिन्दी है। दुनिया में करीब 60 करोड़ लोग हिन्दी बोलते है।
- दुनिया की 176 विश्वविद्यालयों में हिन्दी एक विषय के तौर पर पढ़ाई जाती है। इसमें से 45 यूनिवर्सिटी अमेरिका की है।
- यही नहीं, विदेश में 25 से ज्यादा पत्र–पत्रिकाएं रोजना हिन्दी में निकलती है।
- साल 1805 में प्रकाशित लल्लू लाल द्वारा लिखित श्री ृष्ण पर आधारित किताब प्रेम सागर को हिन्दी में लिखी गई पहली किताब माना जाता है।
- बिहार देश का वह पहला राज्य है जिसने हिन्दी को अपनी आधिकारिक भाषा के तौर पर स्वीकार किया। साल 1881 तक बिहार की आधिकारिक भाषा उर्दू होती थी जिसके स्थान पर हिन्दी को अपनाया गया।

*वरिष्ठ अनुवादक, पर्यटन मंत्रालय

विदेशों में भी चल रहा हिन्दी का जादू

कई देशों में अब हिंदी के प्रति लगाव, जिसे कुछ लोग ट्रेंड भी कहते हैं, निरन्तर बढ़ रहा है । नेपाल में 80 लाख, दक्षिण अफ्रीका में 8.90 लाख, मॉरीशस में 6.85 लाख, यमन में 2.82 लाख, युगांडा में 1.47 लाख, सिंगापुर में पांच हजार, न्यूजीलैंड में 20 हजार, जर्मनी में 30 हजार लोग हिन्दी बोलते हैं।

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में शामिल है कई शब्द

विश्व में सबसे अधिक मान्यता प्राप्त और विश्वसनीय मानी जाने वाली ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में भी हिन्दी के अनेक शब्दों को शामिल किया गया है। इनमें 'अच्छा', 'बड़ा दिन', 'बच्चा', 'सूर्य नमस्कार', हड़ताल, गुरु, जंगल, कर्मा, योगा, बंगला, चीता, लूट, ठग लाठी आदि न जाने कितने अंग्रेजी के प्रचलित शब्द भी हिन्दी भाषा से लिए गए हैं। इस साल जनवरी में 'आधार' शब्द को भी ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में शामिल किया गया है।

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि अमेरिका में भी हिन्दी का बोलबाला है। वहां भारतीय भाषाओं में सबसे ज्यादा हिन्दी का ट्रेंड है। अमेरिका की जनगणना 2009–13 के अनुसार, वहां की 33 करोड़ की आबादी में करीब 6.5 लाख लोग हिन्दी में बातचीत करते हैं।

सूदर पूर्व के एक देश फिजी की आधिकारिक भाषा हिन्दी है। इसे फिजी हिन्दी के नाम से जानते हैं।

फिजी हिन्दी देवनागरी लिपी और रोमन लिपि दोनों में लिखी जाती है। बताया जाता है कि अंग्रेजों द्वारा भारत के संयुक्त प्रान्त (आज का उत्तर प्रदेश) के पूर्वी जिलों के साथ–साथ बिहार से मजदूरी को फिजी भेजा गया था। ये लोग वहां ज्यादातर हिन्दी में ही बात करते थे। इस समय फिजी में करीब 37 प्रतिशत लोग हिन्दी भाषा में बात करते हैं।

1997 में जब फिजी के संविधान में हिन्दी को आधिकारिक भाषा कहा गया, जहां इसे हिन्दुस्तानी लिखा गया।

साल 2013 में सुधार करते हुए इसे हिन्दी लिखा गया। फिजी हिन्दी में अवधी भाषा, भोजपुरी और यूपी बिहार की दूसरी बोलियां भी शामिल है।

हिन्दी भाषा इंटरनेट की दुनिया में भी छाई हुई है। इंटरनेशनल कम्पनियां भी हिन्दी भाषियों को रिझाने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है। इसका हालिया उदाहरण ई–कॉमर्स वेबसाइट ऐमेजॉन में अपनी ऐप में हिन्दी भाषा को जोड़ा है। यानि अब हिन्दी भाषी लोग ऐमेजॉन पर प्रोडक्ट के बारे में हिन्दी में जानकारी ले सकेंगे। वहीं दूसरी ओर इंटरनेट पर हिन्दी सामग्री भी काफी तेजी से बढ़ रही है। इसका अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि इंटरनेट और 'डिजिटल वर्ल्ड' में हिन्दी सामग्री की खपत 94 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है। वहीं 15 से ज्यादा सर्च इंजन और लाखों वेबसाइट हिन्दी में हैं।

भारत में इंटरनेट की दुनिया में आधे से ज्यादा यूजर गैर–अंग्रेजी भाषी है। स्मार्टफोन ने हिन्दी की सूरत बदल दी है और हर व्यक्ति तक पहुंच बना दी है। वहीं सस्ते 3G और 4G कनेक्शन ने देश में इंटरनेट के इस्तेमाल को बढ़ावा दिया है। भारत में इंटरनेट पर आधे से अधिक यूजर्स गैर–अंग्रेजी भाषी है। एक अध्ययन के मुताबिक वर्ष 2021 तक इंटरनेट पर हिन्दी दूसरी क्षेत्रीय भाषाओं का इस्तेमाल करीब 75 फीसदी लोग करने लग जाएंगे।

गुगल पर हिन्दी में बोलकर टाइपिंग: 5 में से 1 भारतीय हिन्दी में सर्च करना पसंद करता है। वहीं देश में इंटरनेट पर अंग्रेजी सिर्फ 14 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है। हिन्दी इस्तेमाल करने वालों के बीच अपनी पकड़ बनाने की होड़ में गूगल सबसे आगे है। कम्पनी में गूगल डॉक्यूमेंट के जरिए हिन्दी में बोलकर टाइपिंग की सुविधा भी दी है।

–नभाटा से साभार

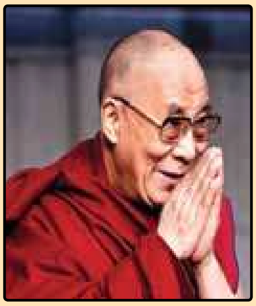

आज की स्थिति में कोई यह नहीं सोच सकता कि कोई और उसकी समस्या हल कर देगा। अपने परिवार को सही दिशा देने में मदद करना हममें से हर एक की जिम्मेदारी है।

– दलाई लामा, बौध धर्म गुरू

पर्यटन की रैली : आतिथ्य की शैली

– प्रदीप कुमार

किताबों से कभी गुजरों तो
यूं किरदार मिलते हैं
गये वक्तों की ड्योढ़ी पर
खड़े कुछ यार मिलते हैं
जिसे हम दिल का वीराना
समझ छोड़ आये थे
वहीं उजड़े हुये शहरों के कुछ
आसार मिलते हैं।

उपर्युक्त कविता पर्यटन के पक्ष में लिखी गई है। अब आपके मन में यह सवाल होगा कि आखिर यह पर्यटन है क्या ? पर्यटन एक ऐसी यात्रा है जो मनोरंजन या फुरसत के क्षणों का आनंद उठाने के उद्देश्यों से की जाती है। विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार पर्यटक वे लोग हैं जो ''यात्रा करके अपने सामान्य वातावरण से बाहर के स्थानों में रहने जाते हैं, यह दौरा एक दो दिन अथवा ज्यादा से ज्यादा एक साल के लिए मनोरंजन, व्यापार, अन्य उद्देश्यों से किया जाता है, यह उस स्थान पर किसी खास क्रिया से संबंधित नहीं होता है।''

आतिथ्य को परिभाषित किया जाए तो आतिथ्य एक मेहमान तथा मेजबान के मध्य एक ऐसा संबंध अथवा सत्कार शीलता का प्रचलन है जो कि मेहमान पर्यटकों, आगंतुक यात्रियों अथवा अजनबियों को आश्रय स्थल, सदस्यता क्लब, कन्वेंशन आदि के आकर्षण के साथ, विशेष घटनाओं का स्वागत तथा मनोरंजन जैसी सुविधा और सेवाएं प्रदान करता है।

''आतिथ्य'' का आशय उन लोगों के प्रति देखभाल तथा दयालुता प्रदान करना भी हो सकता है जिनको उसकी आवश्यकता है।

भारत में एक प्राचीन परंपरा का चलन है,

''अतिथि देवो भवः।''

वास्तव में, ये शब्द बहुत ही महत्वपूर्ण है जिसमें 'अतिथि से तात्पर्य किसी मेहमान से है और 'देवो भवः' का अर्थ है देव के

* व्याख्यता, होटल प्रबन्ध संस्थान, भोपाल, (मध्यप्रदेश)

समान यानी भगवान के समान। कहने का तात्पर्य यह है कि अतिथि भगवान के समान होता है। वास्तव में, शुरू से ही हमारे देश में अतिथि को भगवान के समान समझा जाता है। प्राचीन काल से ही जब भी कोई अतिथि किसी के घर आता है तो उसका सम्मान किया जाता है, उसको भोजन कराया जाता है और उसके रहने की उचित व्यवस्था की जाती है।

प्रक्रिया आज भी वही है, बस व्यवस्था में अंतर उत्पन्न हो चुके है। पर्यटन और आतिथ्य का संबंध यह है कि हम अपने देश में आने वाले पर्यटकों को आतिथ्य प्रदान करते हैं। आजकल के दौर में आतिथ्य से जुड़ी हुई सबसे आवश्यक कड़ी का नाम है– होटल अथवा होटल प्रबंधन। देखा जाए तो होटल अतिथियों को खान–पान भ्रमण–सुविधा एवं रहन–सहन से लेकर हर आवश्यक सुविधा प्रदान करते हैं। बदलते वक्त के साथ यह देखा जा सकता है कि युवा वर्ग ने आतिथ्य क्षेत्र की ओर अपना रूझान दिखाया है और इसीलिए देश में होटल प्रबंधन संस्थानों की संख्या बढ़ी है।

होटल के अलावा पर्यटक अन्य आवास–स्थलों में भी शरण लेते हैं जैसे कि धर्मशाला, छात्रावास अथवा कुछ स्थानों पर होम–स्टे इत्यादि। इन सभी आवास गृह का उद्देश्य अतिथियों को स्वागत, सत्कार, सुविधाएं एवं आतिथ्य प्रदान करना है।

पर्यटन, आतिथ्य एवं पर्यटकों के माध्यम से देश वासियों को भी नई संस्कृति एवं सभ्यता के बारे में जानने का अवसर प्राप्त होता है।

पर्यटन भारत में रोजगार का भी एक महत्वपूर्ण जरिया बन चुका है। वर्ल्ड ट्रेवल एंड टूरिज्म काउंसिल की गणना के अनुसार, 2017 में पर्यटन ने भारत के जीडीपी में 9.4 प्रतिशत और रोजगार के कुल अवसरों में आठ प्रतिशत का योगदान किया था । इस क्षेत्र की भविष्यवाणी 2028 तक 6.9 प्रतिशत की दर से बढ़ने की है। अतः यह देखा जा सकता है कि पर्यटन न केवल भावनात्मक रूप से बल्कि आर्थिक रूप से भी वृद्धि कर रहा है। आतिथ्य का वास्तविक अर्थ समझना हम देशवासियों के लिए अत्यंत आवश्यक है ताकि हम अपने अतिथियों को आवश्यक सुविधाएं दे सकें एवं देश में ''अतिथि देवो भवः'' एवं ''वसुदैव कुटुम्बकम'' जैसी भावनाओं का प्रचार कर सके।

श्रद्धांजलि

भारत के पूर्व प्रधान मंत्री
श्री अटल बिहारी बाजपेयी

25 दिसंबर 1924 को ग्वालियर के एक मध्यमवर्गीय परिवार के एक स्कूल मास्टर के घर जन्मे वाजपेयी की प्रारंभिक शिक्षा–दीक्षा ग्वालियर के ही विक्टोरिया कॉलेज और कानपुर के डीएवी कॉलेज में हुई थी। उन्होंने राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर के बाद पत्रकारिता में अपना करियर शुरू किया। उन्होंने 'राष्ट्र धर्म', 'पांचजन्य' और 'वीर अर्जुन' संपादन का कार्य किया।

ग्वालियर से वाजपेयी का बड़ा गहरा लगाव रहा है। वाजपेयी जी अक्सर ग्वालियर चले जाते थे और वहां की सड़कों पर यहां–वहां घूमते रहते थे। यह बात उन दिनों की है जब विजया राजे सिंधिया पार्टी में आई ही थीं। किसी ने उन्हें बताया कि अटल जी छाता लगाए ग्वालियर के पाटनकर बाजार में घूम रहे हैं। यह सुनते ही राजमाता सिंधिया ने एक स्थानीय नेता को फोन करके कहा कि कैसी पार्टी है आपकी? पार्टी के एक बड़े नेता सड़क पर पैदल घूम रहे हैं, क्या उनके लिए गाड़ी का इंतजाम नहीं हो सकता? थोड़ी देर बाद राजमाता सिंधिया के पास उस नेता का फोन आया। उसने उन्हें बताया कि वाजपेयी ने गाड़ी सध न्यवाद वापस भेज दी है और कहा है कि ग्वालियर में उन्हें गाड़ी की जरूरत नहीं होती है।

लगभग 47 सालों से अधिक समय तक अटल बिहारी वाजपेयी के साथ रहे श्री शिव कुमार, जो अटल जी के चपरासी, रसोइए, बॉडीगार्ड, सचिव और लोकसभा क्षेत्र प्रबंधक की भूमिकाएं एक साथ ही निभाते रहे थे, ने एक संस्मरण में लिखा है, "उन दिनों मैं उनके साथ फ़िरोज़शाह रोड पर रहा करता था। एक बार वे बेंगलुरु से दिल्ली वापस लौट रहे थे। मुझे उन्हें लेने पालम हवाई अड्डे पर जाना था। जनसंघ के एक नेता जे.पी. माथुर ने मुझसे कहा चलो रीगल में बहुत अच्छी अंग्रेज़ी पिक्चर चल रही है क्यों न देख ली जाए। छोटी पिक्चर है, जल्दी ख़त्म हो जाएगी।

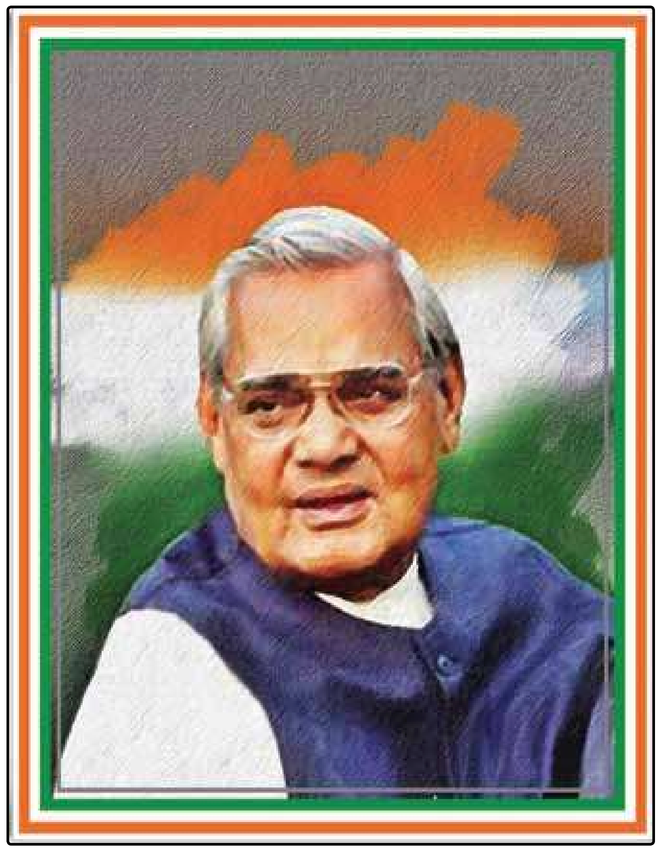

स्व. श्री वाजपेयी जी का एक तैलचित्र

उन दिनों फ़्लाइटें अक्सर देर से आती थी। बेंगलुरु से आने वाली फ़्लाइट में भी देरी हो जाएगी, यह सोचकर मैं माथुर जी के साथ पिक्चर देखने चला गया।" मैं जब हवाई अड्डे पहुंचा तो पता चला कि उस दिन फ़्लाइट समय पर आ गई थी। घर की चाबी तो मेरे

ही पास थी। मैं अपने सारे देवताओं को याद करता हुआ फ़िरोज़ शाह रोड पहुंचा तो देखा कि वाजपेयी जी लॉन में टहल रहे थे। उन्होंने मुझसे पूछा कहाँ चले गए थे? मैंने डरते हुए बता दिया कि पिक्चर देखने गया था। वाजपेई ने मुस्कराकर कहा यार हमें भी ले चलते। अकेले चले गए। मैने उन्हें बताया कि माथुर जी साथ थे। उन्होंने कहा चलो कल चलेंगे। वो मुझ पर नाराज़ हो सकते थे लेकिन उन्होंने मेरी उस लापरवाही को हंसकर टाल दिया।"

1977 में श्री मोरार जी देसाई के नेतृत्व में सरकार बनी तो उन्होंने अटल जी को विदेश मंत्रालय जैसा महत्वपूर्ण मंत्रालय दिया। अटल ही पहले विदेश मंत्री थे जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी में भाषण देकर भारत को गौरवान्वित किया था।

सन् 1998 में प्रधानमंत्री बनने पर उन्होंने परमाणु शक्ति सम्पन्न देशों की संभावित नाराजगी से विचलित हुए बिना परमाणु परीक्षण–2 और अग्नि–दो मिसाईल के परीक्षण करा कर देश की सुरक्षा के लिये साहसिक कदम उठाये।

सन् 1998 में राजस्थान के पोखरण में भारत के दूसरे परमाणु परीक्षण से पहले ही उन्हें इस बात का अहसास हो चुका था कि यदि इस मिशन के बारे में किसी को भी पता चला तो अंतर्राष्ट्रीय दबाव आने लगेंगे। उन्होंनें डॉ. अब्दुल कलाम को यह बात बताई और परीक्षण की इस प्रकार व्यवस्था की गई कि दुनिया की बड़ी बड़ी ताकतों को भनक तक नहीं लग पाई कि भारत परमाणु परीक्षण करने वाला है।

अटल सबसे लम्बे समय तक सांसद और बाद में सबसे लम्बे समय तक गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री भी रहे। वह पहले प्रधानमंत्री थे जिन्होंने गठबन्धन सरकार को न केवल स्थायित्व दिया अपितु सफलता पूर्वक संचालन भी किया।

कवि के रूप में अटल

राजनीति के साथ–साथ समाज एवं राष्ट्र के प्रति उनकी वैयक्तिक संवेदनशीलता प्रकट होती ही रही है। उनके संघर्षमय जीवन, परिवर्तनशील परिस्थितियाँ, राष्ट्रव्यापी आन्दोलन, जेल–जीवन आदि के अनेक आयामों के प्रभाव एवं अनुभूति को काव्य में अभिव्यक्ति पाई। वाजपेयी जी को काव्य रचनाशीलता एवं रसास्वाद के गुण विरासत में मिले थे। उनके पिता ृष्ण बिहारी वाजपेयी ग्वालियर रियासत में अपने समय के जाने–माने कवि थे। पारिवारिक वातावरण साहित्यिक एवं काव्यमय होने के कारण उनकी रगों में काव्य रक्त–रस अनवरत घूमता रहा था। अटल बिहारी वाजपेयी राजनीतिज्ञ होने के साथ–साथ एक ओजस्वी एवं पटु वक्ता एवं सिद्ध हिन्दी कवि भी थे।उनकी सर्व प्रथम कविता ताजमहल थी। इस कविता में उन्होंने श्रृंगार रस के प्रेम प्रसून न चढ़ाकर ताजमहल के कारीगरों के शोषण के बारे में लिखा था। "एक शहंशाह ने बनवा के हसीं ताजमहल, हम गरीबों की मोहब्बत का उड़ाया है मजाक" इस तरह वास्तविकता को उनके कवि हृदय ने उजागर किया।

वह हिंदी के प्रसिद्ध कवि भी थे। उनकी प्रकाशित पुस्तकों में कैदी कविराय की कुंडलियां शामिल हैं, जो 1975–77 आपातकाल के दौरान लिखी गई कविताओं का संग्रह है। अपनी कविता के संबंध में उन्होंने लिखा, "मेरी कविता युद्ध की घोषणा है, हारने के लिए एक निर्वासन नहीं है। यह हारने वाले सैनिक की निराशा की ड्रमबीट नहीं है, लेकिन युद्ध में जीत योद्धा की होगी।

उनकी कुछ प्रमुख प्रकाशित रचनाएँ इस प्रकार हैं:

रग–रग हिन्दू मेरा परिचय, कैदी कविराय की कुण्डलियाँ, मेरी इक्यावन कविताएँ आदि चर्चित पुस्तकें रही है।

वाजपेयी को 2009 में दिल का दौरा पड़ा था, जिसके बाद वह बोलने में अक्षम हो गए थे। उन्हें 11 जून 2018 को 'किडनी' में संक्रमण और कुछ अन्य स्वास्थ्य समस्याओं की वजह से अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में भर्ती कराया गया था, जहाँ 16 अगस्त, 2018 को उनका निधन हो गया।

उनकी समाज और देश के प्रति सेवा को देखते हुए 1992 में 'पद्मविभूषण', 1993 में कानपुर विश्वविद्यालय द्वारा डी लिट. की उपधि प्रदान की गई। एक सांसद के रूप की गई उनकी सेवाओं के लिए 1994 में श्रेष्ठ सांसद पुरस्कार प्रदान किया गया। 2015 में उन्हें भारतरत्न से सम्मानित किया गया।

वे एक ओजस्वी एवं पटु वक्ता एवं सिद्ध हिन्दी कवि भी हैं।

अतुल्य भारत की ओर से श्रद्धांजलि

अतुल्य भारत' पत्रिका में प्रकाशन हेतु पर्यटन क्षेत्र के लेखकों, अनुसंधानकर्ताओं, ब्लॉगर्स, उद्यमियों आदि से लेख आमंत्रित हैं।

- लेख का विषय पर्यटन और उससे संबंधित क्षेत्र में किसी सामयिक विषय एवं विकास कार्यों पर आधारित हो।
- साधारणतया लेख अधिकतम लगभग 3,000 शब्दों का हो वस्तुस्थिति के अनुसार अधिक भी हो सकता है। किसी विशेष अवसर अथवा स्तंभ के लिए भेजे गए लेख में लगभग 1500 शब्दों अथवा अधिकतम का भी स्वागत है। लेख को बोधगम्य एवं सुरूचिपूर्ण बनाने हेतु कृपया लेख के साथ उपयुक्त फोटोचित्र/रेखाचित्र (प्रिंट करने योग्य क्वालिटी के) भी संलग्न करें।
- लेख सरल हिंदी भाषा में लिखा हो।
- ई–मेल से भेजे जाने वाले लेख OPEN FILE में तथा फोटोग्राफ यदि कोई हो, . jpg अथवा .png में ही भेजें। कोई भी लेख/सामग्री pdf में भेजने का कष्ट **नहीं** करें। कागज के एक ओर टाइप किया हुआ या स्पष्ट रूप से हस्तलिखित हो। टाइप किया लेख (फोन्ट सहित) ई–मेल माध्यम से भेजें।
- लेखक द्वारा भेजे गए लेख एवं फोटोचित्रों/रेखाचित्रों के संदर्भ में कॉपीराइट संबंधी उत्तरदायित्व स्वयं लेखक का होगा।
- लेख इस पते पर भेजें : प्रबंध संपादक, अतुल्य भारत, पर्यटन मंत्रालय,कमरा नं0 18, सी–1 हटमेंट्स, दाराशिकोह मार्ग, नई दिल्ली–110011, ई–मेल : editor.atulyabharat@gmail.com है।

श्रद्धांजलि

भारत के एक दिग्गज राजनेता
करूणानिधि

भारत के एक दिग्गज राजनेता, साहित्यकार, फिल्मकार, द्रविड़ राजनीतिक दल डी.एम.के. के प्रमुख, और तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. एम. करूणानिधि का 7—अगस्त,2018 को निधन हो गया। उन्होंने 20 वर्ष की आयु में मद्रास राज्य के तमिल फिल्म उद्योग में ज्यूपिटर पिक्चर्स के लिए पटकथा लेखक के रूप में अपना करियर शुरु किया। और पहली फिल्म 'राजकुमारी ' से ही लोकप्रियता हासिल की। पटकथा लेखक के रूप में उनकी कला में यहीं से निखार आना शुरु हुआ। एक पटकथा लेखक के रूप में की और बहुत ही कम समय में समाजवादी और बुद्धि वादी आदर्शों को बढ़ावा देने वाली ऐतिहासिक और सामाजिक, सुधारवादी कहानीकार के रूप में मशहूर हो गए। उन्होंने सौ से अधिक फिल्मों की पटकथाएं लिखी।

जस्टिस पार्टी के अलगिरिस्वामी के एक भाषण से प्रेरित होकर करूणानिधि ने 14 साल की उम्र में ही राजनीति में प्रवेश किया अपनी बुद्धि और भाषणकला कौशल के माध्यम से वे बहुत जल्दी ही नेता बन गए और द्रविड़ आंदोलन से जुड़ गए थे। उन्होंने तमिल सिनेमा जगत के माध्यम से 'पराशक्ति' नामक फिल्म के माध्यम से अपने राजनीतिक विचारों का प्रचार करना शुरू किया। पराशक्ति तमिल सिनेमा जगत के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुई क्योंकि इसने द्रविड़ आंदोलन की विचारधारा का समर्थन किया और इस फिल्म ने तमिल फिल्म जगत के दो प्रमुख अभिनेताओं शिवाजी गणेशन और एस. राजेन्द्रन से दुनिया को परिचित करवाया। शुरू में इस फिल्म पर

प्रतिबन्ध लगा दिया गया था लेकिन अंत में इसे 1952 में रिलीज कर दिया गया। यह बॉक्स ऑफिस पर एक बहुत बड़ी हिट फिल्म साबित हुई लेकिन इसकी रिलीज विवादों से घिरी थी। रूढ़िवादी समाज की ओर से इस फिल्म का विरोध हुआ क्योंकि इसमें कुछ ऐसे तत्व शामिल थे जिनमें परम्परावादी सामाजिक सोच की कटू आलोचना की गई थी। इस तरह के संदेशों वाली करूणानिधि की दो अन्य फ़िल्में 'पनम' और 'थंगारत्नम' थीं। इन फिल्मों में विधवा पुनर्विवाह, अस्पृश्यता उन्मूलन, आत्मसम्मान विवाह, ज़मींदारी उन्मूलन और धार्मिक पाखंड जैसे विषय शामिल थे। जैसे—जैसे उनकी सुदृढ़ सामाजिक संदेशों वाली फ़िल्में और नाटक लोकप्रिय होते गए, वैसे—वैसे उन्हें अत्यधिक सेंसरशिप का सामना करना पड़ा था।

राजनीति में प्रवेश

जस्टिस पार्टी के अलगिरिस्वामी से प्रेरित होकर करूणानिधि ने हिंदी विरोधी आंदोलन में भाग लिया। उन्होंने अपने इलाके के स्थानीय युवाओं के लिए एक संगठन की स्थापना की। उन्होंने इसके

सदस्यों को 'मनावर नेशन' नाम से एक हस्तलिखित अखबार भी चलाया। बाद में उन्होंने तमिल मनावर मंद्रम नामक एक छात्र संगठन की स्थापना की जो द्रविड़ आन्दोलन का पहला छात्र विंग था। करूणानिधि ने अन्य सदस्यों के साथ छात्र समुदाय और खुद को भी सामाजिक कार्य में शामिल कर लिया। यहाँ उन्होंने इसके सदस्यों के लिए मुरासोली नाम से एक समाचारपत्र शुरू किया। आज यही 'मुरासोली; डी.एम.के. पार्टी का आधिकारिक अखबार है।

उन्होंने अपनी राजनीतिक विचारधारा से संबंधित मुद्दों को जनता के सामने लाने के लिए एक पत्रकार और कार्टूनिस्ट के रूप में अपनी प्रतिभा दिखाई। वह 50 वर्षों से अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं को संबोधित करके रोज चिट्ठी लिखते थे। इसके अलावा उन्होंने कुडियारसु के संपादक के रूप में काम किया है और मुत्तरम पत्रिका को अपना काफी समय दिया है। वे स्टेट गवर्नमेंट्स न्यूज़ रील, अरासु स्टूडियो और तमिल एवं अंग्रेज़ी में प्रकाशित होने वाली सरकारी पत्रिका तमिल अरासु के भी संस्थापक हैं।

करूणानिधि को तिरुचिरापल्ली जिले के कुलिथलई विधानसभा से 1957 में तमिलनाडु विधानसभा के लिए पहली बार चुना गया। वह 1961 में डी.एम.के. के कोषाध्यक्ष बने और 1962 में राज्य विधानसभा में विपक्ष के उपनेता बने और 1967 में जब द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम सत्ता में आई तब वे लोक निर्माण मंत्री बने। 1969 में अन्नादुरई के निधन के पश्चात करूणानिधि को तमिलनाडु का मुख्यमंत्री बना दिया गया। तमिलनाडु राजनीतिक क्षेत्र में अपने लंबे करियर के दौरान वे पार्टी और सरकार में विभिन्न पदों पर रह चुके हैं। करूणानिधि के नाम हर चुनाव में अपनी सीट न हारने का रिकॉर्ड भी रहा है। सेन्ट्रल चेन्नई के चेपौक विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हुए वह पांच बार मुख्यमंत्री और 12 बार विधानसभा सदस्य रहे।

साहित्य

करुणानिधि तमिल साहित्य में अपने योगदान के लिए जाने जाते हैं। उनके योगदान में कविताएं, चिट्ठियाँ, पटकथाएं, उपन्यास, जीवनी, ऐतिहासिक उपन्यास, मंच नाटक, संवाद, गाने इत्यादि शामिल हैं।

साहित्य के अलावा करूणानिधि ने कला एवं स्थापत्य कला के माध्यम से भी योगदान दिया है। कन्याकुमारी में विवेकानंद रॉक तक जाने वाले पयर्टकों और श्रृद्धालुओं की सुविधा के लिए उन्हीं के प्रयास से फैरी चलाई गई। इससे पूर्व श्रृद्धालु पयर्टकों को समुद्र में रस्सियों के सहारे जाना पड़ता था। इतना ही नहीं, कन्याकुमारी में करूणानिधि ने तिरुवल्लुवर की एक 133 फुट ऊँची मूर्ति का निर्माण करवाया है जो उस संत विद्वान के प्रति उनकी भावनाओं को बयान करता है।

अतुल्य भारत की ओर से श्रद्धांजलि

> एक घड़ी खरीदकर हाथ में क्या बांध ली, वक्त पीछे ही पड़ गया मेरे।
>
> – हरिवंश राय बच्चन

श्रद्धांजलि

गोपालदास 'नीरज'

–संतोष सिल्पोकर

सांसों की डोर के आखिरी मोड़ तक बेहतहरीन नगमे लिखने वाले हिंदी और उर्दू के मशहूर गीतकार और कवि गोपालदास 'नीरज' का दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में 19 जुलाई 2018 की शाम 93 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

नीरज पहले व्यक्ति थे जिन्हें शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में भारत सरकार ने दो बार सम्मानित किया और 1991 में 'पद्मश्री' और 2007 में 'पद्मभूषण' पुरस्कार प्रदान किए गए। 1994 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने 'यश भारती पुरस्कार' प्रदान किया। गोपाल दास नीरज को विश्व उर्दू पुरस्कार से भी नवाजा गया था। नीरज के लिखे गीत बेहद लोकप्रिय हुए। हिन्दी फिल्मों में भी उनके गीतों ने खूब धूम मचायी और फ़िल्मों में सर्वश्रेष्ठ गीत लेखन के लिये उन्हें लगातार तीन बार फिल्म फेयर पुरस्कार भी मिला।

गोपालदास सक्सेना 'नीरज' का जन्म इटावा जिले के पुरावली गाँव में श्री ब्रजकिशोर सक्सेना के घर 4 जनवरी, 1925 को हुआ था। जब वह सिर्फ छः साल के ही थे कि सिर से पिता का साया उठ गया। जैसे तैसे कर 1942 में एटा से हाई स्कूल परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इटावा की कचहरी में टाइपिस्ट का काम किया, उसके बाद एक सिनेमाघर में नौकरी कर ली। काफी समय तक कोई काम न मिलने के बाद दिल्ली में सफाई विभाग में टाइपिस्ट की नौकरी मिली

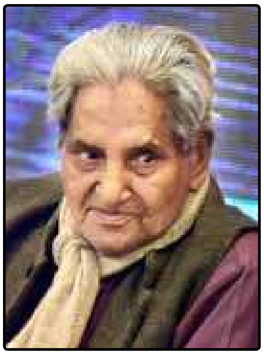

गीतकार और कवि गोपालदास नीरज

मगर वह जल्दी ही छूट गई तो कानपुर के डी.ए.वी. कॉलेज में क्लर्क का काम कर लिया। कुछ समय के बाद वह भी छोड़ दिया और बाल्कट ब्रदर्स नाम की एक प्राइवेट कम्पनी में पाँच वर्ष तक टाइपिस्ट का काम किया। लेकिन नौकरी करने के साथ प्राइवेट परीक्षाएँ देकर 1949 में इण्टरमीडिएटए 1951 में बी.ए. और 1953 में प्रथम श्रेणी में हिन्दी साहित्य से एम.ए. किया।

मेरठ कॉलेज मेरठ में हिन्दी प्रवक्ता के पद पर नियुक्त हुए। कुछ समय के बाद कॉलेज प्रशासन द्वारा उन पर कक्षाएं न लेने और छात्रों को रोमांटिक गीत सुनाने के आरोप लगाये गये जिससे उन्होंने स्वयं ही नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। उसके बाद वे अलीगढ़ के डी.एस. कॉलेज में हिन्दी विभाग के प्राध्यापक नियुक्त हुए और मैरिस रोड, जनकपुरी अलीगढ़ में स्थायी आवास बनाकर रहने लगे।

*संयुक्त निदेशक (रा.भा.) पर्यटन मंत्रालय

कवि सम्मेलनों में उनकी अपार लोकप्रियता को देखते हुए संगीतकार रोशन ने नीरज को 'नई उमर की नई फसल' के गीत लिखने का मौका दिया तो उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। यह फिल्म युवा आक्रोश पर बनाई थी। इसकी ज्यादातर शूटिंग अलीगढ़ युनिवर्सिटी में की गई थी। पहली ही फिल्म में उनके लिखे कुछ गीत जैसे 'कारवाँ गुजर गया गुबार देखते रहे' और 'देखती ही रहो आज दर्पण न तुम' बहुत लोकप्रिय हुए। इसके बाद संगीतकार सचिन देव बर्मन और शंकर जयकिशन ने उन्हें गीत लिखने के लिए बुलाया।

जैसे राजेश खन्ना को हिंदी फिल्मों का पहला सुपरस्टार माना जाता है वैसे ही गोपाल दास 'नीरज' कवि सम्मेलनों और मुशायरों के पचास साल तक स्टार और शान रहे थे। उनके जाने से दिनकर, हरिवंशराय बच्चन, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा के समय की थाती का अवसान ही कहा जाएगा।

वह मुम्बई में रहकर फ़िल्मों के लिये गीत लिखने लगे। फिल्मों में गीत लेखन का सिलसिला मेरा नाम जोकर, शर्मीली, पहचान, गैम्बलर, कन्यादान और प्रेम पुजारी जैसी अनेक चर्चित फिल्मों में कई वर्षों तक जारी रहा। गोपाल दास नीरज के लिखे गीत बेहद लोकप्रिय रहे। हिन्दी फिल्मों में भी उनके गीतों ने खूब धूम मचायी। 1970 के दशक में लगातार तीन वर्षों तक उन्हें सर्वश्रेष्ठ गीत लेखन के लिए फिल्म फेयर पुरस्कार प्रदान किया गया। उनके पुरस्-ृत गीतों में काल का पहिया घूमे रे भइया! (वर्ष 1970, फिल्मः चंदा और बिजली), बस यही अपराध मैं हर बार करता हूं (वर्ष 1971, फिल्मः पहचान), ए भाई! ज़रा देख के चलो (वर्ष 1972, फिल्मः मेरा नाम जोकर)। इतना ही नहीं, पहचान के निदेशक सोहन लाला कंवर ने उनका एक गीत 'पैसे की पहचान यहां इंसान की कीमत कोई नहीं' उन्हीं पर फिल्माया गया था।

उनके गीतों ने फिल्मों की लोकप्रियता में बड़ा योगदान दिया। कई फिल्मों में सफल गीत लिखने के बाद भी कुछ सालों में ही मुम्बई की गहमागहमी की ज़िन्दगी से भी उनका मन उचट गया और मायानगरी को छोड़ कर अलीगढ़ वापस लौट आये।

उनके एक दर्जन से भी अधिक कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं। उनकी प्रमुख ृतियों में 'दर्द दिया है' (1956), 'आसावरी' (1963), 'मुक्तकी' (1958), 'कारवां गुज़र गया' (1964), 'लिख–लिख भेजत पाती' (पत्र संकलन), पंत–कला, काव्य और दर्शन (आलोचना) शामिल हैं।

नीरज धर्मनिरपेक्ष रचनाकार थे। उन्हें कवि सम्मेलनों के साथ ही मुशायरों में भी शोहरत मिली। नीरज अपने बारे में अक्सर एक शेर सुनाते थे और लगभग हर मुशायरे में श्रोता इसकी फरमाइश जरूर करते थे :

इतने बदनाम हुए हम तो इस ज़माने में, लगेंगी आपको सदियां हमें भुलाने में।

न पीने का सलीका न पिलाने का शऊर, ऐसे भी लोग चले आये हैं मयखाने में?

स्व. श्री नीरज का एक लोकप्रिय गीत

आदमी को आदमी बनाने के लिए
जिंदगी में प्यार की कहानी चाहिए
और कहने के लिए कहानी प्यार की
स्याही नहीं, आँखों वाला पानी चाहिए।

जो भी कुछ लुटा रहे हो तुम यहाँ
वो ही बस तुम्हारे साथ जाएगा,
जो छुपाके रखा है तिजोरी में
वो तो धन न कोई काम आएगा,
सोने का ये रंग छूट जाना है
हर किसी का संग छूट जाना है
आखिरी सफर के इंतजाम के लिए
जेब भी कफन में इक लगानी चाहिए।
आदमी को आदमी बनाने के लिए
जिंदगी में प्यार की कहानी चाहिए।

रागिनी है एक प्यार की
जिंदगी कि जिसका नाम है,
गाके गर कटे तो है सुबह
रोके गर कटे तो शाम है
शब्द और ज्ञान व्यर्थ है
पूजा–पाठ ध्यान व्यर्थ है
आँसुओं को गीतों में बदलने के लिए,
लौ किसी यार से लगानी चाहिए।

जो दुःखों में मुस्कुरा दिया
वो तो इक गुलाब बन गया
दूसरों के हक में जो मिटा
प्यार की किताब बन गया,
आग और अँगारा भूल जा
तेग और दुधारा भूल जा
दर्द को मशाल में बदलने के लिए
अपनी जवानी खुद जलानी चाहिए।

दर्द गर किसी का तेरे पास है
वो खुदा तेरे बहुत करीब है
प्यार का जो रस नहीं है आँखों में
कैसा हो अमीर तू गरीब है
खाता और बही तो रे बहाना है
चैक और सही तो रे बहाना है
सच्ची साख मंडी में कमाने के लिए
दिल की कोई हुंडी भी भुनानी चाहिए।

गीत

– क्षेत्रपाल शर्मा

मैं तो अपने दिल की कह न पाया कोई बात,
तुम पूछो तो देखो शायद बदल जाए मौसम।
बहुत दिनों से आसमान का मिज़ाज़ था फीका ,
अनहोनी हो गई ज़ायका बदल गया जी का ,
बस फुहार से तर होने की हसरत थी बाकी,
ओले जैसे पाए मैंने झोली के शबनम
तुम पूछो तो..........।

कई बार जीवन में ऐसे अवसर आए हैं,
एक ओर हैं पुष्प कुंड, तो उधर शिलाएं हैं
मैं चुपचाप सहमकर अपनी राह चला आया ,
नाम रूप पर पाने जाने कितने संस्करन
तुम पूछो तो.........।

शैल शिखर से टकराना भी देखो तो आसान नहीं
अब तक तो सब कुछ था लेकिन अब देखो पहचान नहीं
दर्दे– दिल बादल का, सच में दरिया हो जाना
बह बह जाना गली– गली वन, उपवन जड़ जंगम
तुम पूछो तो देखो .....।

संप्रति : वित्त मंत्रलय (राजस्व विभाग),
नार्थ ब्लाक, नई दिल्ली में अधिकारी

मन की इच्छा

– विश्वरंजन

तू अमृत, तुझे पाने की हर ख्वाइश मेरी।
बन के अमृत रोम रोम मे बस गई मेरी।
जब जब अमृत धारा की रुख फैरती है !
न जाने क्यों हौसला की शिखर टूटती है मेरी।
तू.. अमृत, तुझे पाने की हर ख्वाइश मेरी।

कुदरत

– आशीष कुमार शील

हर शख्स इस शहर में परेशान सा है
इन मकानों में उसका मुकाम कौन सा है!
ये रास्ते जो इस शहर से दूर ले जाते है
वो भी तो उसे किसी और शहर में छोड आते है!
पूछते है ये पंछी किसी बेघर फरिश्ते की तरह
इस जमीन पर कुदरत का निशान कौन सा है!
वो तो शुक्र है इतनी ऊँचाई तक इंसान के हाथ नहीं पहुँचे,
वरना खुदा भी पूछता मेरा आसमान कौन सा है!
मैंने तो बनाई थी दुनिया पानी, मिट्टी, पत्थर और हवाओं से,
ये कांक्रीट, कारखानों और काले धुए का कब्रिस्तान कौन सा है!
''ठाकुर'' अपनी खिड़की में बैठा–बैठा अक्सर ये सोचता है
इन मकानों के बीच ये अकेला पेड़ कौन सा है!

*बी.एस.सी प्रथम वर्ष के छात्र
होटल प्रबंध संस्थान, हैदराबाद (तेलंगाना)

मृग मरीचिका

तेरी वो बात,
जज्बात,
और जुड़े एहसास
सब..! मृग मरीचिका है!
सपनो में आना,
घण्टों समय बिताना
और बातों बातों में छु जाना
सब..! मृग मरीचिका है!
समय है कम,
चाहता हूँ रहू जीवन भर तेरे संग।
लेकिन अमृत को पाना
शायद मेरे नसीब की मृग मरीचिका है।

*सहायक प्रोजेक्ट मैनेजर, पर्यटन मंत्रालय

पर्यटन मंत्रालय
की
सचित्र गतिविधियाँ
एवं
समाचार

दिल्ली में धरोहर स्थलों को 'धरोहर मित्र' निर्दिष्ट किए जाने के संबंध में स्पष्टीकरण

यह 01 एवं 02 जुलाई, 2018 को प्रेस के कुछ हिस्सों में 'लाल किला, दिल्ली के चार अन्य धरोहर स्थलों को धरोहर मित्र निर्दिष्ट किए जाने से संबंधित' खबरों के छपने के संदर्भ में है।

पर्यटन मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि इन सभी खबरों में कुछ गंभीर तथ्यात्मक विसंगतियां हैं और सही स्थिति नीचे दी गई हैं–

1. लेखों में कहा गया है कि धरोहर मित्रों की नियुक्ति दिल्ली में लाल किला एवं चार धरोहर स्थलों के लिए की गई है। लेकिन यह स्पष्ट किया जाता है कि दिल्ली में केवल एक ही स्थल के लिए धरोहर मित्र को निर्दिष्ट किया गया है।

2. इसके अतिरिक्त लेख में गलत रूप से कहा गया है कि केपर ट्रैवल कंपनी को दिल्ली में चार धरोहर स्थलों अर्थात् अजीम खान का मकबरा, जमाली कमाली मस्जिद एवं मकबरा, राजाओं की बावली एवं मोठ की मस्जिद के लिए धरोहर मित्र के रूप में नियुक्त किया गया है। पर्यटन मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि कथित कंपनी का विजन दस्तावेज वर्तमान में आंकलन के चरण में है और अभी तक उनके साथ किसी समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर नहीं किए गए है।

यहां यह उल्लेख करना समीचीन है कि 'एक धरोहर को गोद लें– अपनी धरोहर अपनी पहचान' पर्यटन मंत्रालय, संस्ृति मंत्रालय, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण तथा राज्य सरकारों/संघ शासित सरकारों द्वारा एक सहयोगात्मक प्रयास है। इसका उद्देश्य भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण/राज्य धरोहर स्थलों एवं भारत में अन्य महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों में विश्व स्तरीय पर्यटन अवसंरचना एवं सुविधाओं के विकास, परिचालन एवं रख–रखाव के जरिए हमारे धरोहरों एवं पर्यटन को अधिक स्थायी बनाने की जिम्मेदारी उठाने के लिए सार्वजनिक/निजी क्षेत्र कंपनियों एवं कॉरपोरेट जगत/गैर सरकारी संगठनों एवं विशेष व्यक्तियों को प्रोत्साहित करना है। (04 जुलाई,2018)

मथुरा में गोवर्धन तीर्थ पर विश्व श्रेणी की सुविधाए

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. अल्फोंस कहा है कि मथुरा के गोवर्धन तीर्थ को विश्व श्रेणी स्थल बनाने की आवश्यकता है तथा प्रत्येक वर्ष अक्टूबर में "गोवर्धन महाराज उत्सव" आयोजित किया जाएगा। माननीय मंत्री ने सुविधाओं के विकास के लिए अपेक्षाओं के आकलन हेतु 10 जुलाई, 2018 को मथुरा में स्थल निरीक्षण के पश्चात यह बात राज्य सरकार के अधिकारियों के साथ एक बैठक में कही। उन्होने आगे बताया कि सैद्धांतिक रूप से यह भी निर्णय लिया गया है कि परियोजना में तीर्थ यात्रा की सुविधाओं के विकास के लिए कुसुम सरोवर, मानसी द्वार, चंद्र सरोवर पर पर्यटन सुविधाएं भी शामिल की जाएंगी। इसके अलावा सीसीटीवी, सार्वजनिक उद्घोषणा प्रणाली, वाई–फाई प्रणाली, मार्गसूचक बोर्ड लगाने की व्यवस्था भी शामिल की जाएगी। उत्तर प्रदेश राज्य सरकार इस संबंध में विस्तृत परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी।

पहले, उत्तर प्रदेश सरकार ने मथुरा के गोवर्धन तीर्थ पर अवसंरचनात्मक सुविधाओं के विकास का प्रस्ताव भेजा था। निरीक्षण के दौरान माननीय मंत्री जी ने गोवर्धन परिक्रमा के विकास के लिए 50 करोड़ रूपये स्वीृत करने की घोषणा की। पिछले चार वर्ष के दौरान प्रसाद योजना के अंतर्गत पर्यटन मंत्रालय द्वारा अभी तक 118.23 करोड़ रूपये की परियोजनाएं पहले ही स्वीृत की जा चुकी हैं जो राज्य के मथुरा और वाराणसी में कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं।

राजदूतों एवं राजनयिक प्रतिनिधियों के साथ परस्पर विचार विमर्श

10 जुलाई, 2018 को नई दिल्ली में द्विपक्षीय पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए एक परस्पर संवादात्मक सत्र के बाद राजदूत और राजनयिक प्रतिनिधियों के साथ पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. अल्फोंस। इस अवसर पर सचिव (पर्यटन) श्रीमती श्रीमती रश्मि वर्मा भी उपस्थित हैं।

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. अल्फोंस ने 10 जुलाई,2018 को नई दिल्ली में विभिन्न देशों के राजदूतों एवं राजनयिक प्रतिनिधियों के साथ परस्पर विचार विमर्श किया। ऑस्ट्रिया, अर्जेंटीना, भूटान, साइप्रस, चेक गणराज्य, ग्रीस, फिलीपींस, ब्राजील, मलेशिया, जर्मनी, इंडोनेशिया, फिनलैंड, रूस, न्यूजीलैंड और यमन समेत पंद्रह देशों के राजदूत और प्रतिनिधि बैठक में उपस्थित थे।

यह बैठक भारत और इन देशों के बीच द्विपक्षीय पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए आयोजित की गई थी। अतिथियों को संबोधित करते हुए मंत्री महोदय ने कहा कि भारतीय संस्-ृति विश्व समुदाय के लिए बहुत योगदान दे सकती है और भारतीय दर्शन और संस्-ृति सभी को प्रसन्नता देने की बात करती है तथा हम इस संदेश का दुनिया में प्रचार और प्रसार करना चाहते हैं। उन्होंने भारतीय पर्यटन उद्योग के समग्र विकास के बारे में बताते हुए वर्ष 2017 का विशेष रूप से में उल्लेख किया, जब पहली बार '10 मिलियन से अधिक विदेशी पर्यटक आगमन दर्ज किया गया और अनिवासी भारतीयों (एनआरआई) के समावेश के साथ अंतरराष्ट्रीय पर्यटक आगमन 15.54 मिलियन रहा था। मंत्री महोदय ने पर्यटन अवसंरचना के विकास, यात्रा–सुरक्षा और पर्यटकों की सुरक्षा और एकी-ृत वैश्विक विपणन अभियान की दिशा में भारत सरकार द्वारा किए गए विभिन्न उपायों का विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि इस वर्ष के अन्त तक बौद्ध परिपथ के अंतर्गत सारनाथ एवं इसके आस–पास पर्यटन सुविधाओं का विकास किया जाएगा।

'पूर्वोत्तर सर्किट विकासः इंफाल और खोंगजोंग' का मणिपुर में उद्घाटन

मणिपुर की राज्यपाल डॉ. नजमा ए. हेपतुल्ला ने 14 अगस्त, 2018 को इंफाल में पर्यटन मंत्रालय की स्वदेश दर्शन योजना के अंतर्गत ''पूर्वोत्तर सर्किट विकासः इंफाल और खोंगजोंग, परियोजना का उद्घाटन किया। इस अवसर पर पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री के. अल्फोंस, मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बिरेन सिंह, सचिव (पर्यटन) श्रीमती रश्मि वर्मा और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इंफाल और खोंगजोंग स्वदेश दर्शन योजना के अंतर्गत उद्घाटन की जाने वाली पहली परियोजना है।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय पर्यटन मंत्री जी ने कहा कि स्वदेश दर्शन योजना 2014–15 में लांच की गई थी और पर्यटन मंत्रालय ने इस योजना के अंतर्गत अब तक 29 राज्यों तथा संघ शासित प्रदेशों को 5708.88 करोड़ रुपये की 70 परियोजनाओं को मंजूरी दी है। मणिपुर राज्य में आरम्भ की गई 72.30 करोड़ रुपये की लागत की इस परियोजना को पर्यटन मंत्रालय ने सितंबर, 2015 में स्वी ृति दी थी। परियोजना में दो स्थल– कांगला फोर्ट तथा खोंगजोंग को कवर किया गया है।

पर्यटन मंत्रालय पूर्वोत्तर क्षेत्र में पर्यटन के विकास पर विशेष ध्यान देते हुए इस क्षेत्र में पर्यटन विकास और प्रोत्साहन के लिए अनेक गतिविधियां चला रहा है। स्वदेश दर्शन तथा प्रसाद योजनाओं के अंतर्गत पर्यटन संरचना विकसित की जा रही है। मंत्रालय की दोनों योजनाओं को मिलाकर 15 परियोजनाएं स्वी ृत की गई हैं, जो सभी पूर्वोत्तर राज्यों को कवर करती हैं।

एक रिपोर्ट

अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन : 2018

–सुधीर कुमार

भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद ने 23 अगस्त,2018 को नई दिल्ली में 'अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन2018' का उद्घाटन किया। पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के.जे. अल्फोन्स ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की।

अपने उद्घाटन भाषण में महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने कहा कि बौद्धधर्म का भारत से एशिया गमन और अंतर–महाद्वीपीय संपर्क केवल अध्यात्म तक सीमित नहीं थे। वे अपने साथ ज्ञान और शिक्षा का भंडार ले गए थे। इतना ही नहीं, वे अपने साथ यहां की कला और शिल्प, योग– ध्यान की तकनीक और मार्शल आर्ट भी ले गए थे। इस प्रकार भिक्षुओं और भिक्षुणियों ने जो मार्ग खोला, वह व्यापार मार्ग के रूप में विकसित हुआ। इस प्रकार बौद्ध धर्म भूमंडलीकरण के शुरूआती रूप का आधार बना है। इसके जरिये हमारे महाद्वीप में आपसी संपर्क बढ़ा। यही सिद्धांत और मूल्य आज भी हमारा मार्गदर्शन करते हैं।

महामहिम राष्ट्रपति जी दीप प्रज्जवलित करते हुए, उनके साथ है माननीय पर्यटन मंत्री श्री के.जे. अल्फोन्स, सचिव (पर्यटन) श्रीमती रश्मि वर्मा तथा जापान के राजदूत श्री केन्जी हिरामात्सु

*पूर्व सहायक महानिदेशक, पर्यटन मंत्रालय

प्राचीन भारत ने दुनिया को बेशकीमती तोहफे के रूप में बुद्ध और उनका दिखाया हुआ मार्ग दिया है। भगवान बुद्ध की असाधारण शिक्षाएं, शान्ति, खुशहाली और सौहार्द का संदेश देती हैं। दूसरी तरफ यह बौद्ध विरासत के आठ महान स्थानों को दर्शाते हैं। इन आठों स्थानों का संबंध भगवान बुद्ध के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं, उनके जन्म, ज्ञान, पीडित मानवता के लिए धम्म शिक्षा और उनके महापरिनिर्वाण से है। 80 वर्ष की आयु में जब भगवान बुद्ध को महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ तो इन स्थलों को बौद्धवाद के मार्ग से जोड़ा गया। बुद्ध मार्ग एक सजीव विरासत है। सांस्ृ तिक एवं धार्मिक यात्रा और पर्यटन भारत के लिए नये नहीं है। हजारों सालों से दूसरे देशों से बौद्ध भिक्षु, विद्वान और श्रद्धालु भारत की यात्रा करते रहे हैं। यह हमारी सभ्यता के लिए बेहद गर्व का विषय है। यह लाखों लोगों को शांति, प्रसन्नता, सद्भव और सांत्वना के लिए प्रेरित करती है। हम भारतीय बुद्ध के इस आसाधारण विरासत को अत्याधिक महत्व देते हैं और इस पर गर्व करते हैं। इसलिए पर्यटन मंत्रालय द्वारा आयोजित छठे अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन की थीम है। 'बुद्ध मार्ग–सजीव विरासत'

महामहिम राष्ट्रपति जी के करकमलों से महत्वपूर्ण बौद्ध स्थलों पर आधारित पर्यटन मंत्रालय की एक वेबसाइट indiathelandofbuddha.in भी आरंभ की गई। इस अवसर पर देश के बौद्ध स्थलों के बारे में एक नई फिल्म भी जारी की गई है।

राष्ट्रपति महोदय ने कहा कि पर्यटन एक ऐसा उद्यम है, जिसमें अनेक हितधारक शामिल होते हैं। इसमें निजी क्षेत्र और सिविल सोसाइटी की भी महत्वपूर्ण भूमिकाएं होती हैं। अतिथियों को सुरक्षित और संरक्षित अनुभव प्रदान करने के लिए राज्य और नगर निकाय प्रशासन एक अहम भूमिका निभा सकते हैं। पर्यटन में अपार व्यापारिक संभावना मौजूद है। पूरे विश्व में पर्यटन उद्योग बड़े स्तर पर, विशेषकर स्थानीय समुदायों के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध कराता है। बौद्ध धर्म की तरह पर्यटन भी लोगों से संबंधित होता है और उन्हें अपनी क्षमता के प्रति जागरूक होने में शक्ति संपन्न बनाता है।

महामहिम राष्ट्रपति जी ने कहा कि पिछले कुछ सालों में पर्यटक स्थलों तक हवाई सेवा को बढ़ाया गया है जबकि बहुत से गंतव्यों तक पहुंचने के लिए रेल या सड़क मार्ग का सहारा भी लेना पड़ता है। ऐसी समस्याओं को दूर करने की जरूरत है। इस सम्मेलन में उपस्थित प्रतिनिधियों के संयुक्त प्रयास से ऐसी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

माननीय पर्यटन राज्य मंत्री श्री के.जे. अल्फोन्स ने अपने संबोधन में कहा कि भारत में एक समृद्ध प्राचीन बौद्ध विरासत मौजूद है। यहां भगवान बुद्ध के जीवन से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण स्थल हैं। भारतीय बौद्ध विरासत पूरे विश्व के बौद्ध धर्म के अनुयायियों को आकर्षित करती है। सम्मेलन का उद्देश्य भारत में बौद्ध विरासत को प्रदर्शित करना तथा देश के बौद्ध स्थलों में पर्यटन को बढ़ावा देना है। इसके जरिये बौद्ध धर्म में रुचि रखने वाले समुदायों और देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध भी विकसित होते हैं।

भारत में जापान के राजदूत श्री केन्जी हिरामात्सु ने अपने संबोधन में कहा कि भारत के साथ जापान के बहुत पुराने सांस्ृ तिक संबंध हैं और पर्यटन भारत–जापान संबंधों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भारत और जापान के बीच सांस्ृ तिक संबंध लगातार

कायम हैं। बौद्ध धर्म के संवर्धन के लिए जापान अपने यहां बौद्ध स्थलों के पर्यटन को बढ़ावा दे रहा है।

पर्यटन सचिव श्रीमती रश्मि वर्मा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि बौद्ध धर्म भारत की संस्-ृति को भूटान, चीन, कंबोडिया, इंडोनेशिया, जापान, कोरिया, म्यांमार, सिंगापुर, श्रीलंका, थाईलैंड और वियतनाम जैसे देशों से जोड़ता है। उन्होंने कहा कि इस सम्मेलन में जापान हमारा प्रतिभागी देश है, जिसके लिए हमें गर्व है। उन्होंने जापान के राजदूत के नेतृत्व में जापानी प्रतिनिधिमंडल की बड़े पैमाने पर भागीदारी के लिए उसकी प्रशंसा की। उन्होंने आगे कहा कि पर्यटन मंत्रालय ने देश के 12 कलस्टरों में 17 स्थलों की पहचान की है। इन स्थलों को एक प्रतिष्ठित आदर्श पर्यटन स्थल विकास परियोजना के अंतर्गत विकसित किया जाएगा। स्थल से संपर्क, स्थल पर पर्यटकों के लिए बेहतर सुविधाएं, कौशल विकास, स्थानीय समुदाय की भागीदारी, निजी निवेश के द्वारा स्थल को बढ़ावा देना और ब्रांड निर्माण करना, इन सभी विषयों को ध्यान में रखते हुए मंत्रालय इन स्थलों को विकसित करेगा। मंत्रालय ने आदर्श स्थल के रूप में दो स्थानों की पहचान की हैः महाबोधी मंदिर, बिहार और अजंता, महाराष्ट्र।

एक अनुमान के अनुसार पूरे विश्व में बौद्ध धर्मानुयायियों की संख्या 50 करोड़ है, जो विश्व की आबादी का सात प्रतिशत है। इस तरह बौद्ध धर्म के अनुयायी विश्व में चौथे सबसे बड़े समुदाय हैं। इनमें से अधिकांश पूर्व एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया और सुदूर पूर्व देशों में रहते हैं। लेकिन बौद्ध धर्मावलंबियों की एक छोटी संख्या ही प्रत्येक वर्ष बौद्ध स्थलों के भ्रमण के लिए भारत आती है। इसलिए जहां भगवान बुद्ध ने जीवन व्यतीत किया और उपदेश दिए, उन स्थलों में पर्यटन बढ़ने की असीम संभावनाएं हैं।

इस चार दिवसीय सम्मेलन का आयोजन पर्यटन मंत्रालय ने महाराष्ट्र, बिहार और उत्तर प्रदेश की राज्य सरकारों के सहयोग से किया था। यह आयोजन 23 से 26 अगस्त, 2018 को नई दिल्ली और अजंता (महाराष्ट्र) में भी किया गया था। 24 से 26 अगस्त, 2018 की अवधि के दौरान प्रतिनिधिमंडलों के सदस्यों को औरंगाबाद, राजगीर, नालंदा, बोधगया और सारनाथ की यात्राएं भी कराई गईं।

पर्यटन मंत्रालय दो वर्ष में एक बार अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन का आयोजन करता है। पहला सम्मेलन फरवरी,2004 में नई दिल्ली और बौद्धगया में, दूसरा फरवरी,2010 में नई दिल्ली, नालंदा और बौद्धगया में, तीसरा सितम्बर, 2012 में नई दिल्ली, वाराणसी और बौद्धगया में, सितम्बर 2014 में नइ दिल्ली वाराणसी और बौद्ध गया में, अक्तूबर, 2016 में नई दिल्ली, सारनाथ/वाराणसी और बौद्धगया में आयोजित किए गए थे।

सम्मेलन में पर्यटन मंत्रालय और राज्य सरकारों द्वारा प्रस्तुतिकरण दिए गए। बौद्ध विद्वानों और भिक्षुओं के बीच विचार–विमर्श बैठकें की गई तथा विदेशी और भारतीय टूर–ऑपरेटरों के बीच बी2बी बैठकों के साथ साथ बौद्ध स्थलों पर विश्वस्तरीय अवसंरचना के विकास के संबंध में निवेश के लिए सम्मेलन के दौरान 'निवेशक शिखर सम्मेलन' का भी आयोजन किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन के प्रतिनिधि अजन्ता, महाराष्ट्र में

अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन में – ऑस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, भूटान, ब्राजील, कंबोडिया, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, हांगकांग, इंडोनेशिया, जापान, लाओस, मलेशिया, मंगोलिया, म्यांमार, नेपाल, नॉर्वे, रूस, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया, स्लोवाक गणराज्य, स्पेन, श्रीलंका, ताइवान, थाईलैंड, इंग्लैंड, अमेरिका और वियतनाम आदि 29 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। बांग्लादेश, इंडोनेशिया, म्यांमार और श्रीलंका से मंत्रिस्तरीय प्रतिनिधि मंडल सम्मेलन में हिस्सा लिया।

अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन के प्रतिनिधि महाबोधी मंदिर, बिहार में

छत्तीसगढ़ में पहले आदिवासी परिपथ का उद्घाटन

केन्द्रीय पर्यटन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. जे. अलफोंस ने 14 सितंबर 2018 को छत्तीसगढ़ के गंगरेल में 'जशपुर, कुंकुरी, मैनपत, कमलेशपुर, महेशपुर, कुरदार, सरोदादादर, गंगरेल, कोंडगांव, नाथिया, नवागांव, जगदलपुर, चित्रकूट, तीर्थगढ़ः आदिवासी परिपथ विकास परियोजना' का उद्घाटन किया। यह स्वदेश दर्शन योजना के तहत देश की दूसरी ऐसी परियोजना है।

पर आधारित पर्यटन परिपथों का सुनियोजित तरीके से विकास किया जाता है। यह योजना 2014–15 में आरंभ की गई थी। अभी तक मंत्रालय द्वारा 31 राज्यों एवं संघीय क्षेत्रों में 5997.47 करोड़ रु. की लागत की 74 परियोजनाओं को मंजूरी दी है। 30 से अधिक परियोजनाओं या इनके महत्वपूर्ण हिस्सों के इस वर्ष पूरा होने की उम्मीद है।

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री के. अल्फोंस 14 सितंबर, 2018 को छत्तीसगढ़ में स्वदेश दर्शन योजना के तहत जनजातीय परिपथ परियोजना का उद्घाटन करते हुए

पर्यटन मंत्रालय ने फरवरी 2016 में 99.21 करोड़ रु. की लागत पर इस परियोजना को मंजूरी दी थी। इस योजना के दायरे में छत्तीसगढ़ के जशपुर, कुंकुरी, मैनपत, कमलेशपुर, महेशपुर, कुरदार, सरोदादादर, गंगरेल, कोंडगांव, नाथिया नवागांव, जगदलपुर, चित्रकूट और तीर्थगढ़ शहर आते हैं।

स्वदेश दर्शन पर्यटन मंत्रालय की सबसे अहम परियोजनाओं में से एक है जिसके तहत एक विषय

आदिवासियों एवं आदिवासी संस्कृति के विकास पर पर्यटन मंत्रालय का विशेष ध्यान है। मंत्रालय आदिवासी क्षेत्रों में विभिन्न परियोजनाओं पर काम कर रहा है और स्वदेश दर्शन योजना के तहत इन क्षेत्रों में पर्यटन अवसंरचना का विकास कर रहा है। आदिवासी परिपथ विषय के तहत मंत्रालय ने नागालैण्ड, तेलंगाना और छत्तीसगढ़ में 381.47 करोड़ रु. की लागत से तैयार की जाने वाली चार योजनाओं को स्वीकृति प्रदान की जा चुकी है।

राष्ट्रीय होटल प्रबंध एवं केटरिंग टेक्नोलॉजी परिषद राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से पुरस्कृत

14 सितंबर 2018 को हिंदी दिवस के अवसर पर महामहिम उपराष्ट्रपति द्वारा विज्ञान भवन में आयोजित एक भव्य समारोह में राष्ट्रीय होटल प्रबंध एवं केटरिंग टेक्नोलॉजी परिषद, नोयडा को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्रदान किया। परिषद को वर्ष 2017–18 के दौरान राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कारों की स्वायत्त संस्थानों की श्रेणी में –क' क्षेत्र की श्रेणी में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है। पुरस्कार ग्रहण करने के लिए राष्ट्रीय परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री ज्ञान भूषण, परिषद के निदेशक श्री एल.के. गांगुली तथा मनोनीत हिंदी अधिकारी श्री नर सिंह उपस्थित थे।

राष्ट्रीय परिषद को यह पुरस्कार राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य के निष्पादन के लिए दिया गया है। राष्ट्रीय होटल प्रबंध एवं केटरिंग टेक्नोलॉजी परिषद, पर्यटन मंत्रालय भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्तशासी निकाय है।

पर्यटन पर्व 2018

नई दिल्ली के राजपथ पर 16 सितम्बर से 27 सितम्बरए 2018 (12 दिनों) तक पर्यटन पर्व का आयोजन किया गया । माननीय गृह मंत्री राजनाथ सिंह ने माननीय पर्यटन राज्य मंत्री के.जे. अल्फोंस की गरिमामयी उपस्थिति में पर्यटन पर्व 2018 का उदघाटन करते हुए कहा कि भारत एकमात्र ऐसा देश है जहां दुनिया के सभी प्रमुख धर्म, विभिन्न संस्कृतियां और अलग–अलग खानपान देखने को मिलते हैं। उन्होंने आगे कहा कि देश में पयर्टकों की संख्या में वृद्धि हुई है। पिछले चार वर्षों के दौरान इस क्षेत्र में रोजगार के डेढ़ करोड़ से अधिक अवसर सृजित हुए हैं।

पर्यटन मंत्रालय द्वारा अन्य केंद्रीय मंत्रालयों और राज्य सरकारों एवं पर्यटन के क्षेत्र के हितधारकों के सहयोग से पर्यटन को बढ़ावा देने के निमित्त पर्यटन पर्व का आयोजन किया जाता है । 16 से 27 सितंबर, 2018 तक आयोजित पर्यटन पर्व में पूरे देश भर में लगभग 3100 से ज्यादा समारोहों का आयोजन किया गया, जिनमें योग प्रदर्शन, सांस्कृतिक संध्या, चित्रकारी प्रतियोगिताएं, खाद्य व्यंजन स्टॉल आदि शामिल किए गए थे ।

'पर्यटन पर्व' का मुख्य उद्देश्य देश की सांस्कृति विविधता का प्रदर्शन एवं ''सभी के लिए पर्यटन'' के

सिद्धांत को सुदृढ़ बनाना है।

पर्यटन पर्व के मुख्य तत्व इस प्रकार हैं.

1. देखो अपना देश– अर्थात भारतीयों को अपने देश का भ्रमण करने के लिए प्रोत्साहित करना।
2. सभी के लिए पर्यटन (टूरिज्म फॉर ऑल) देश के सभी राज्यों में विभिन्न स्थानों पर पर्यटन कार्यक्रम।
3. पर्यटन एवं शासन–विभिन्न विषयों पर हितध ाारकों के साथ संवाद सत्र एवं कार्यशालाओं का आयोजन।

पर्यटन पर्व शुरु होते ही राजपथ रंगारंग कार्यक्रमों से गुलजार हो गया है। यहां विभिन्न राज्यों की संस्कृति एक साथ देखने को मिल रही थीं। देश के अलग.अलग राज्यों से लोग वहां की कला, नृत्य–संगीत और शिल्प लेकर पहुंचे हैं। सिर्फ सांस्कृतिक झलकियां ही नहीं, यहां अलग.अलग राज्य के विशेष पकवान उपलब्ध थे ।

प्रथम भारत पर्यटन मार्ट-2018

माननीय रेल एवं कोयला मंत्री श्री पीयूष गोयल ने 16 सितम्बर, 2018 को नई दिल्ली में माननीय पर्यटन मंत्री श्री के. जे. अल्फोंस और मोरक्को के पर्यटन मंत्री श्री मोहम्मद साजिद की गरिमामयी उपस्थिति में 'प्रथम' भारत पर्यटन मार्ट (आईटीसी 22018) का उद्घाटन किया। भारत पर्यटन मार्ट का आयोजन पर्यटन मंत्रालय द्वारा भारतीय पर्यटन एवं आतिथ्य संघों के महासंघ की सहभागिता और राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों की सरकारों के सहयोग से 16 सितम्बर से लेकर 18 सितम्बर, 2018 तक आयोजित किया गया था। इस अवसर पर सचिव (पर्यटन), श्रीमती रश्मि वर्मा, मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण, फेथ के अध्यक्ष/सदस्य और देश के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

मंत्री महोदय ने कहा कि जब तक पर्यटन क्षेत्र में बुनियादी सुविधाओं की स्थापना नहीं हो जाएगी, तब तक भारत एक अत्यंत पसंदीदा पर्यटन गंतव्य के तौर पर नहीं उभर सकता है। उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार इन सुविधाओं को विकसित करने में जुटी हुई है जिनमें पर्यटन स्थलों पर चौबीसों घंटे विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करना, विभिन्न प्रकार की नवीकरणीय ऊर्जा को प्रोत्साहित करना और सुदूरवर्ती गंतव्यों को बढिया से जोड़कर बेहतर सम्पर्क स्थापित करना शामिल हैं। मंत्री महोदय ने यह भी कहा कि पर्यटन को बढ़ावा देने में जो चीज सबसे ज्यादा कारगर साबित होगी वह है स्वच्छता।

श्री पीयूष गोयल ने भारत पर्यटन मार्ट का उद्घाटन करते हुए पर्यटन मंत्रालय द्वारा पांच वर्षों के भीतर 100 अरब अमेरिकी डॉलर की एफईई (मुद्राअर्जन) राशि के महत्वाकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त कर लेने की कामना की।

रेलवे और कोयला मंत्री श्री पीयुष गोयल ने 17 सितंबर, 2018 को नई दिल्ली में 'भारत पर्यटन मार्ट 2018' का उद्घाटन किया। इस अवसर पर पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री के. अल्फोन्स, पंजाब के पर्यटन मंत्री श्री नवजोत सिंह सिद्धू तथा केरल के पर्यटन मंत्री श्री सुरेन्द्रन, सचिव (पर्यटन) श्रीमती रश्मि वर्मा और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

सरकार के स्वच्छता अभियान से भारत को विदेशी पर्यटकों में लोकप्रिय देश बनाने में काफी मदद मिलेगी। पर्यटन क्षेत्र में आमदनी को कई गुना बढ़ाने की क्षमता का उल्लेख करते हुए मंत्री महोदय ने कहा कि पर्यटन औपचारिक एवं अनौपचारिक क्षेत्रों में रोजगार के अनगिनत अवसर सृजित करता है और यह भारत की नियति बदल सकता है। रेल मंत्री ने यह भी कहा कि देश के युवा इस क्षेत्र में आकर उद्यमी, सेवा प्रदाता इत्यादि बन सकते हैं।

इस अवसर पर माननीय पर्यटन मंत्री ने घोषणा की कि अन्य अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट की तर्ज पर ही अब से हर साल आईटीएम का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रत्येक वर्ष सितम्बर में आईटीएम का आयोजन किया जाएगा। मंत्री महोदय ने कहा कि भौगोलिक, सांस्ृतिक, पारंपरिक, स्थापत्य कला एवं धार्मिक विविधता की दृष्टि से भारत इतना विशाल देश है कि यहां आने वाले पर्यटक को हर बार नया अनुभव मिलता है। उन्होंने आगे कह कि नई ई–वीजा व्यवस्था के बल पर भारत में आगमन और भी ज्यादा आसान हो गया है। ई–वीजा व्यवस्था अब 166 देशों के लिए खुली हुई है।

भारत पर्यटन मार्ट 2018 में विश्व भर जैसे कि उत्तरी अमेरिका, पश्चिमी यूरोप, पूर्वी एशिया, लैटिन अमेरिका, सीआईएस देशों इत्यादि से लगभग 225 मेजबान अंतर्राष्ट्रीय खरीदार एवं मीडिया कर्मियों ने भाग लिया। खरीदारों के साथ विमर्श करने हेतु विक्रेताओं की सुविधा के लिए लगभग 225 मंडप उपलब्ध कराए गए।

पर्यटन विकास के लिए आईटीडीसी और मोरक्को एजेंसी के बीच सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर

पर्यटन विकास के लिए भारत पर्यटन विकास निगम (आईटीडीसी) और मोरक्को पर्यटन विकास एजेंसी के बीच सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।

मोरक्को के पर्यटन, वायु परिवहन, हस्तकला और सामाजिक अर्थव्यवस्था मंत्री श्री मोहम्मद साजिद और भारत के पर्यटन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के जे अलफोंस के नेतृत्व में 17 सितम्बर, 2018 को नई दिल्ली में भारत और मोरक्को के बीच पर्यटन सहयोग पर एक द्विपक्षीय बैठक हुई। इस बैठक के दौरान दोनों मंत्रियों ने भारत और मोरक्को के बीच पर्यटन सहयोग बढ़ाने और दोनों देशों में पर्यटकों की संख्या बढ़ाने की दिशा में काम करने पर सहमति जताई। पर्यटन विकास के लिए इस बैठक में भारत पर्यटन विकास निगम (आईटीडीसी) और मोरक्को पर्यटन विकास एजेंसी के बीच सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए गए

पर्यटन मंत्रालय द्वारा 15 सितंबर से 2 अक्टूबर, 2018 तक स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े का आयोजन

पर्यटन मंत्रालय ने पूरे देश में पर्यटन स्थलों पर स्वच्छता बनाए रखने के उद्देश्य से 15 सितंबर से 2 अक्टूबर, 2018 तक स्वच्छता ही सेवा / स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया।

पर्यटन मंत्रालय के अधीन संस्थानों द्वारा भी भारत के विभिन्न पर्यटन स्थलों/ तीर्थस्थानों पर स्वच्छता अभियान चलाए। यह अभियान पूरे देश में 120 से अधिक स्थानों पर आयोजित किया गया है। माननीय पर्यटन राज्य मंत्री जी ने 15.09.2018 को साई मंदिर, लोधी रोड़, नई दिल्ली में स्वच्छता गतिविधियों में भाग लेकर अभियान का आरम्भ किया। इस अवसर पर माननीय पर्यटन राज्य मंत्री जी ने अधिकारियों और कर्मचारियों को स्वच्छता की शपथ दिलाई। पर्यटन मंत्रालय के अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ–साथ आईआईटीटीएम, आईएचएम और क्षेत्रीय स्तर पर्यटक गाइड एसोसिएशन के सदस्य भी मौजूद थे। इसके अलावा पखवाड़े के दौरान प्रमुख सफाई गतिविधियां, प्रतिज्ञा शपथ, जागरूकता गतिविधियों, निबंध प्रतियोगिता, नुक्कड़ नाटक आदि का आयोजन किया गया था। पर्यटन मंत्रालय के कर्मचारियों ने स्वच्छता अभियान के तहत अंतर्राज्यीय बस अड्डा, साईं मंदिर, लोदी रोड, निजामुद्दीन दरगाह, जनपथ मार्केट, पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन, दिल्ली में पर्यटन स्थलों पर जाकर सफाई की।

इस अवसर पर राष्ट्रीय होटल प्रबंधन एवं खानपान प्रौद्योगिकी परिषद, नोयडा के तत्वानवधान में राष्ट्रीय स्तर पर एक प्रश्नोत्तरी और निबंध प्रतियोगिता भी आयोजित की गई ताकि प्रतिभाओं को प्रेरित करते हुए आतिथ्य से जुड़े लोगों को स्वच्छ भारत मिशन में शामिल किया जा सके। यह प्रतियोगिता प्रश्नोत्तरी और निबंध के रूप में पहली बार संस्थान स्तर पर आयोजित की गई जिसमें 70 से अधिक संस्थानों ने भाग लिया। इसके पश्चात, क्षेत्रीय स्तर पर आठ अलग–अलग क्षेत्रीय केंद्रों पर हुई। क्षेत्रीय स्तर पर विभिन्न – संस्थानों का प्रतिनिधित्व करने वाले 150 से अधिक छात्रों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। क्षेत्रीय दौर के विजेताओं में से राष्ट्रीय स्तर पर भाग लेने के लिए 48 प्रतिभागी उपस्थित हुए। 1 अक्टूबर, 2018 को विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए थे।

भारतीय पाक कला संस्थान, तिरूपति का उद्‌घाटन

उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडू ने 24 सितम्बर, 2018 को तिरुपति, आंध्र प्रदेश में भारतीय पाककला संस्थान का उद्‌घाटन किया। इसे केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय द्वारा प्रवर्तित किया गया है ।

इस अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपराष्ट्रपति महोदय ने कहा कि भारतीय पाक कला संस्थान (आईसीआई) का मुख्य उद्देश्य भारतीय व्यंजनों का संरक्षण, दस्तावेजीकरण, प्रचार और प्रसार

करने के प्रयासों के लिए एक संस्थागत तंत्र बनाना है। साथ ही, यह भारतीय व्यंजनों के लिए विशिष्ट विशेषज्ञों की क्षेत्रीय आवश्यकताओं को पूरा करने और विशिष्ट पर्यटन उत्पाद के रूप में व्यंजनों को बढ़ावा देने का भी प्रयास करता है।

यह उत्ृष्टता का केंद्र होगा जो पाक कला और पाक प्रबंधन के लिए विशिष्ट अध्ययन के संरचित नियमित कार्यक्रम प्रस्तुत करेगा। यह अनुसंधान और नवाचार को भी बढ़ावा देगा, जरूरत के अनुसार डिग्री और डिप्लोमा पाठ्यक्रम आयोजित करेगा। यह भारतीय व्यंजनों पर अध्ययन और सर्वेक्षण कर उनके लिए विशिष्ट 'डेटा बेस' दस्तावेज का निर्माण भी करेगा। यह विकसित दुनिया के विभिन्न हिस्सों में काम कर रहे कुलीन "शेफ स्कूल" के समान ही उपयुक्त प्रशिक्षण मंच भी प्रदान करेगा।

इस अवसर पर संबोधित करते हुए माननीय पर्यटन राज्य मंत्री जी ने कहा कि अभी तक भारत में, भारतीय व्यंजन और पाक कला के लिए विशिष्ट औपचारिक शिक्षा नहीं है। इसके अलावा, अब तक क्षेत्र के लिए व्यंजन विशेषज्ञों के प्रशिक्षण आदि के निमित्त शीर्ष स्तर पर कोई नियमित विश्वसनीय संस्थान, व्यंजन एवं पाक–शिक्षा से संबंधित ज्ञान के का दस्तावेजीकरण कर उसके प्रचार–प्रसार के लिए कोई संस्थागत तंत्र नहीं था।

अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार शीर्ष स्तर पाक शास्त्री तैयार करने और उनकी कला का पोषण करने के लिए अत्याधुनिक प्रशिक्षण संस्थानों की भी कमी है। आईसीआई इन सभी बाधाओं को दूर करने में मदद करेगा।

मुम्बई से गोवा तक क्रूज यात्रा

सड़क परिवहन एवं राजमार्ग, नौवहन और जल संसाधन, नदी विकास तथा गंगा संरक्षण मंत्री श्री नितिन गडकरी और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेद्र फडनविस ने मुम्बई में नए घरेलू क्रूज टर्मिनल का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि मुम्बई से गोवा तक अरब सागर पर क्रूज में जाने एक सपना सच हुआ है। घरेलु क्रूज सेक्टर से अगले पांच वर्षों में 2.5 लाख युवाओं को रोजगार मिल सकेंगे। भारत में 2041 तक 40 लाख पर्यटक यात्रियों को आकर्षित करने की क्षमता तैयार करेगा। जल परिवहन, तटीय सड़कों, मोनोरेल और मेट्रो रेल के लिए टिकट प्रणाली जल्द ही एकी ृत की जाएगी। सी–ईगल क्रूज प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से मुम्बई पोर्ट ट्रस्ट लिमिटेड ने यात्री क्रूज जहाज–आंग्रीया शुरू कर दी है।

मराठा नौ सेना के पहले प्रतिष्ठित एडमिरल कान्होजी आंग्रे तथा महाराष्ट्र और गोवा के बीच स्थित आंग्रीया (सरखेल) समुद्रतट के नाम पर इस क्रूज को आंग्रीया नाम दिया गया है। गोवा हमेशा से पर्यटकों के दिल के करीब रहा है। मुम्बई से गोवा जाने के लिए फिलहाल पर्यटकों के पास सिर्फ बस, ट्रेन या हवाई सफर जैसे ही साधन थे, लेकिन अब सैलानियों के पास जल सफर करना भी आसान हो गया है। 70 क्रू मेंबर के साथ क्रूज की लग्जरी सुविधा का लुत्फ उठाने के लिए इसे 14 घंटे में गोवा पहुंचाया जाता है।

अपने आप में अनूठा...

यदि हम टिकट की बात करें तो प्रति व्यक्ति 7,000 से 12,000 रुपए टिकट है। जिसमें रहने और तीन समय का भोजन भी शामिल है। क्रूज़ में आठ

आंग्रीया, जहाज जिसे क्रूज के लिए तैनात किया गया है।

श्रेणियों के कमरे हैं, जिनमें विशिष्ट चाय, स्वादिष्ट भोजन और नाश्ते की सुविधाओं समेत फुर्सत के पल बिताने के लिए एक बेहतरीन वातावरण प्रदान किया गया है। कैप्टन के अनुसार आंग्रीया, भारतीय जरूरतों के अनुसार तैयार किया गया एक विश्व स्तरीय समुद्री जहाज है। यह क्रूज़ उल्लेखनीय विशेषताओं और सुरक्षा के इंतजामों के साथ अपने आप में अनूठा है।

क्रूज के डैक से समुद्र दर्शन

ईंधन कुशलता, समुद्री पर्यावरण सुरक्षा और अपशिष्ट प्रबंधन की नीतियों पर विश्व व्यापी मानकों में खरा उतरता है। मुम्बई से गोवा क्रूज पिछले साल नवंबर में शुरू होना था। फिर दिसंबर, जो फरवरी बन गया, जो फिर से देरी हो गई। अंततः क्रूज आधिकारिक तौर पर 11 अक्टूबर को शुरू किया गया।

आंग्रीया से 16 घंटों में मुम्बई से गोवा तक यात्रा पूरी होने की उम्मीद है। यह मुम्बई और गोवा से वैकल्पिक दिनों में चलेगा। फिलहाल, यह एक नॉन–स्टॉप क्रूज होगा। कोंकण तट के साथ दीघी, दाभोल और मालवन में जेटियां तैयार होने के बाद इन स्थानों को भी स्टॉप में शामिल करने की योजना है।

क्रूज के लिए लाए गए यात्री जहाज में बड़े पैमाने पर परिवर्तन कर इसे आंग्रीया नाम दिया गया है। जहाज को क्रूज के लिए महत्वपूर्ण रूप से अपग्रेड किया गया है। बोर्ड पर कई रेस्तरां, 24 घंटे की कॉफी शॉप, बार, एक लाउंज और डिस्कोथेक, एक पूल, स्पा और सम्मेलन सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। क्रूज में विभिन्न श्रेणियों के 104 स्टैटरूम/केबिन हैं। जहाज को पर्यावरण के ध्यान में रखते हुए प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के तरीके में डिजाइन किया गया है।

पर्यटन मंत्रालय द्वारा क्रूज पर्यटन के संवर्धन के लिए आवश्यक निधियाँ और क्षमता निर्माण हेतु आवयक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं।

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री के. अल्फोन्स 05 जुलाई, 2018 को मुंबई में 'भारत में क्रूज पर्यटन का प्रचार और विकास' पर एक सत्र में संबोधित करते हुए। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री, नौवहन और जल संसाधन, नदी विकास और गंगा कायाकल्प, मंत्री श्री नितिन गडकरी भी उपस्थित थे।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्य मंत्री, श्रीमती अनुप्रिया पटेल ने 10 जुलाई, 2018 को पर्यटन राज्य मंत्री श्री के. अल्फोन्स से मुलाकात की।

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री के. अल्फोन्स 17 जुलाई, 2018 को नई दिल्ली में 'पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए Google के साथ साझेदारी' पर वार्ता करते हुए।

17 जुलाई, 2018 को नई दिल्ली में भारत साम्राज्य – व्यापार और कूटनीति शिखर सम्मेलन में एक ग्रुप फोटोग्राफ में पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री के. अल्फोंस।

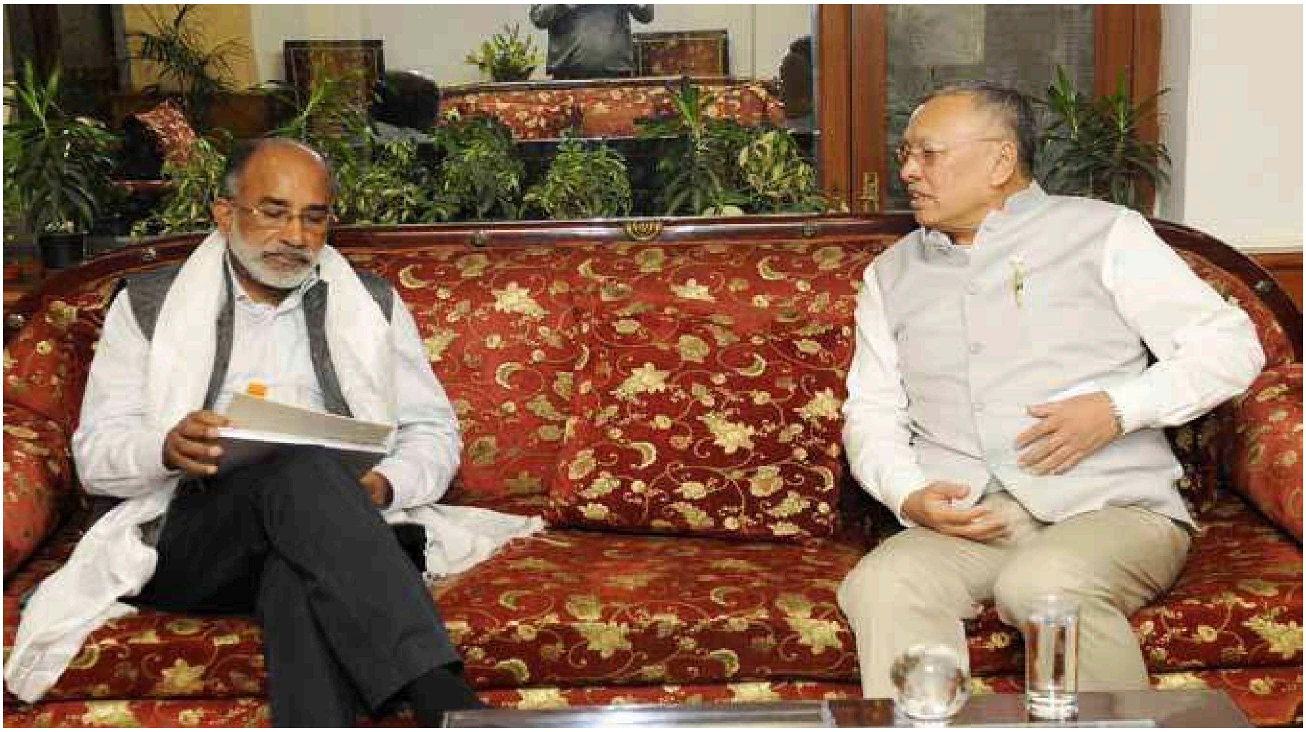

अरुणाचल प्रदेश के पर्यटन मंत्री श्री जरकार गैमलिन 23 जुलाई, 2018 को नई दिल्ली में पर्यटन (स्वतंत्र प्रभार) राज्य मंत्री श्री के. अल्फोंस से मुलाकात करते हुए।

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. अल्फोंस नई दिल्ली में 24 जुलाई, 2018 को माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाले भारत के पहले पिता–पुत्री की जोड़ी श्री अजीत बजाज और सुश्री दीया बजाज को सम्मानित करते हुए। इस अवसर पर सचिव (पर्यटन) श्रीमती रश्मि वर्मा तथा श्री सत्यजीत राजन, महानिदेशक (पर्यटन) भी उपस्थित थे।

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)ए श्री के. अल्फोन्स ने 30 जुलाई, 2018 को नई दिल्ली में "इज़राइल के प्रधान मंत्री की भारत यात्रा" के कवरेज पर फोटो प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्ृत किया। इस मौके पर भारत में इज़राइल के राजदूत, श्री डैनियल कारमेन और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

पर्यटन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री के. जे. अल्फोन्स 03 अगस्त, 2018 को नई दिल्ली में सड़क परिवहन और राजमार्ग, नौवहन और जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री, श्री नितिन गडकरी के साथ बैठक करते हुए।

मणिपुर की राज्यपाल डॉ नज्मा हेपतुल्ला ने 07 अगस्त, 2018 को पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री के. अल्फोन्स से मुलाकात की।

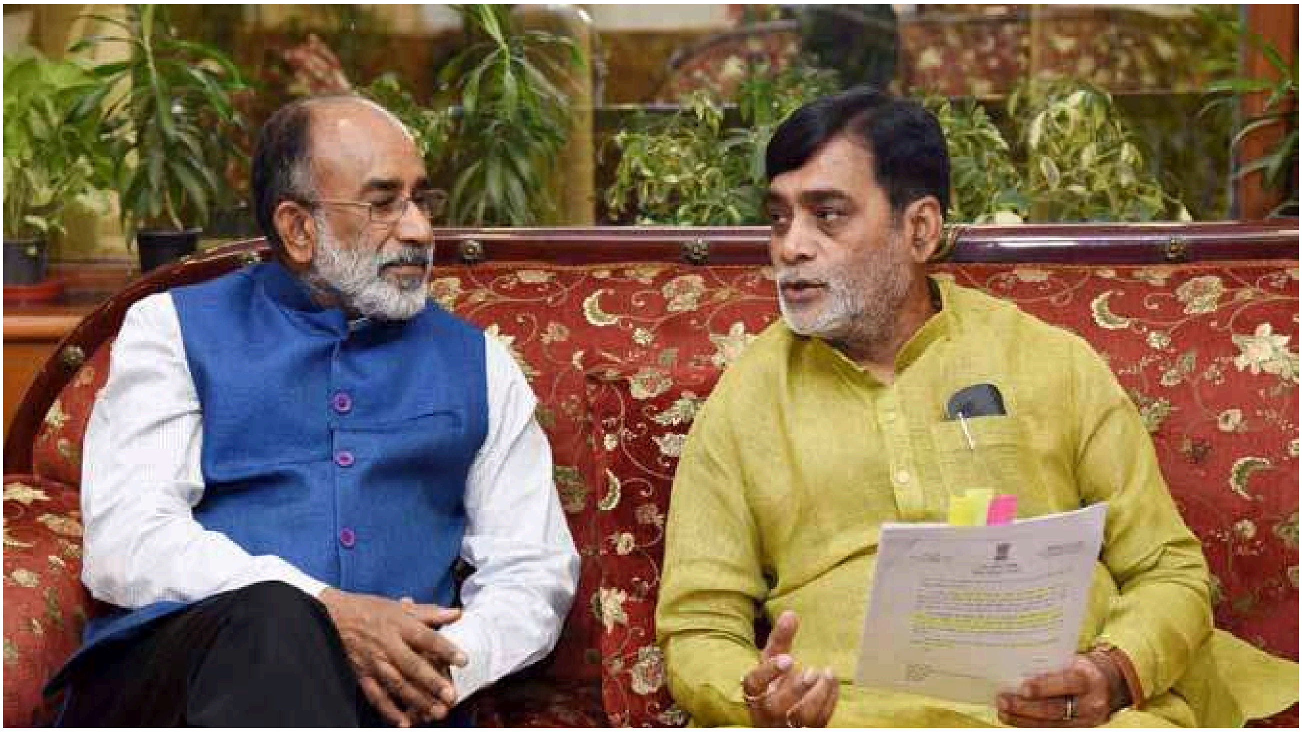

ग्रामीण विकास राज्य मंत्री श्री राम ृपाल यादव ने 07 अगस्त, 2018 को नई दिल्ली में पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री के. अल्फोंस से मुलाकात की।

पर्यटन विकास पर उजबेकिस्तान गणराज्य की स्टेट कमेटी के अध्यक्ष, श्री बख्तियार उमरोव 08 अगस्त, 2018 को नई दिल्ली में पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री के. अल्फोन्स से भेंट की।

13 अगस्त, 2018 को नई दिल्ली में विश्व हाथी दिवस 2018 समारोह के अवसर पर गज महोत्सव में पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री के. अल्फोन्स और अन्य गणमान्य अतिथि।

14 अगस्त, 2018 को इम्फाल, मणिपुर में स्वदेश दर्शन योजना के तहत 'पूर्वोत्तर सर्किट का विकास : इम्फाल और खोंगजॉम परियोजनर' के उद्घाटन के अवसर पर दीप प्रज्जवलित करते हुए मणिपुर की राज्यपाल डॉ. नज्मा हेपतुल्ला के साथ मंच पर हैं पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री के. अल्फोंस, मणिपुर के मुख्यमंत्री एन.बिरेन सिंह, सचिव(पर्यटन) श्रीमती रश्मि वर्मा और अन्य गणमान्य व्यक्ति।

नागालैंड के पर्यटन, कला और संस्ृति मंत्री श्री एच. खेओवी येपथोमी 05 सितंबर, 2018 को नई दिल्ली में पर्यटन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. जे. अल्फोंस से भेंट करते हुए।

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री के. अल्फोंस 16 सितंबर, 2018 को नई दिल्ली में देशव्यापी 'पर्यटन पर्व' के उद्घाटन के अवसर पर संबोधित करते हुए।

केंद्रीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने 16 सितंबर, 2018 को नई दिल्ली में दीप प्रज्जवलित कर देशव्यापी 'पर्यटन पर्व' का उद्घाटन किया। उनके साथ हैं पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री के. अल्फोंस और सचिव (पर्यटन) श्रीमती रश्मि वर्मा।

रेलवे और कोयला मंत्री श्री पीयुष गोयल ने 17 सितंबरए 2018 को नई दिल्ली में 'भारत पर्यटन मार्ट 2018' का उद्घाटन किया। इस अवसर पर पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री के. अल्फोन्स, पंजाब के पर्यटन मंत्री श्री नवजोत सिंह सिद्धू तथा केरल के पर्यटन मंत्री श्री सुरेन्द्रन भी उपस्थित थे।

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री के. अल्फोन्स 24 सितंबर, 2018 को भारतीय पाककला संस्थान, तिरुपति के उद्घाटन समारोह में और आंध्र प्रदेश के नेल्लूरू और पूर्वी गोदावरी जिलों में पर्यटन मंत्रलय, भारत सरकार की स्वदेश दर्शन की तटीय सर्किट थीम के तहत कार्यान्वित दो परियोजनाओं को संबोधित करते हुए।

पर्यटन राज्य मंत्री जी पर्यटन मंत्रालय द्वारा विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार (2016–17) समारोह का दीप प्रज्जवलित कर उद्घाटन किया। इस अवसर पर सचिव, (पर्यटन), श्रीमती रश्मि वर्मा, श्री सत्यजीत राजन, महानिदेशक (पर्यटन) तथा अन्य अधिकारीगण भी मंच पर उपस्थित थे।

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री के. अल्फोन्स तथा सचिव (पर्यटन) श्रीमती रश्मि वर्मा ने 27 सितंबर, 2018 को राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार (2016–17) प्रदान किए।

श्रृद्धेय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी
(25 दिसम्बर, 1924 – 16 अगस्त, 2018)

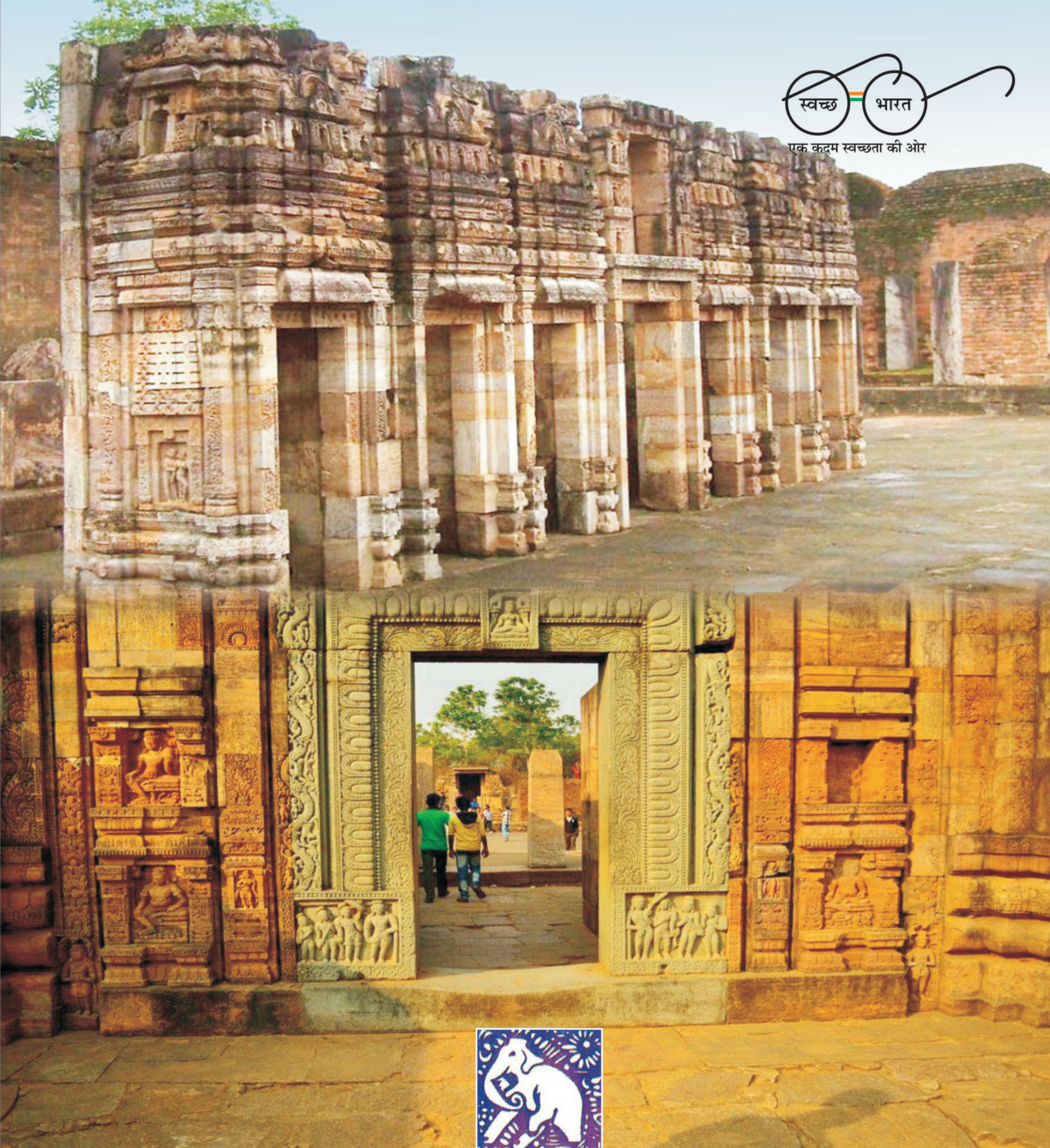

अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, कमरा नं. 18, सी–1 हटमेंट्स,
दाराशिकोह मार्ग, नई दिल्ली–110011, ई–मेल : editor.atulyabharat@gmail.com

पर्यटक हैल्प लाइन 1800111363 लघु कोड 1363 24×7